गुरुजी

गुड़गांव वाले

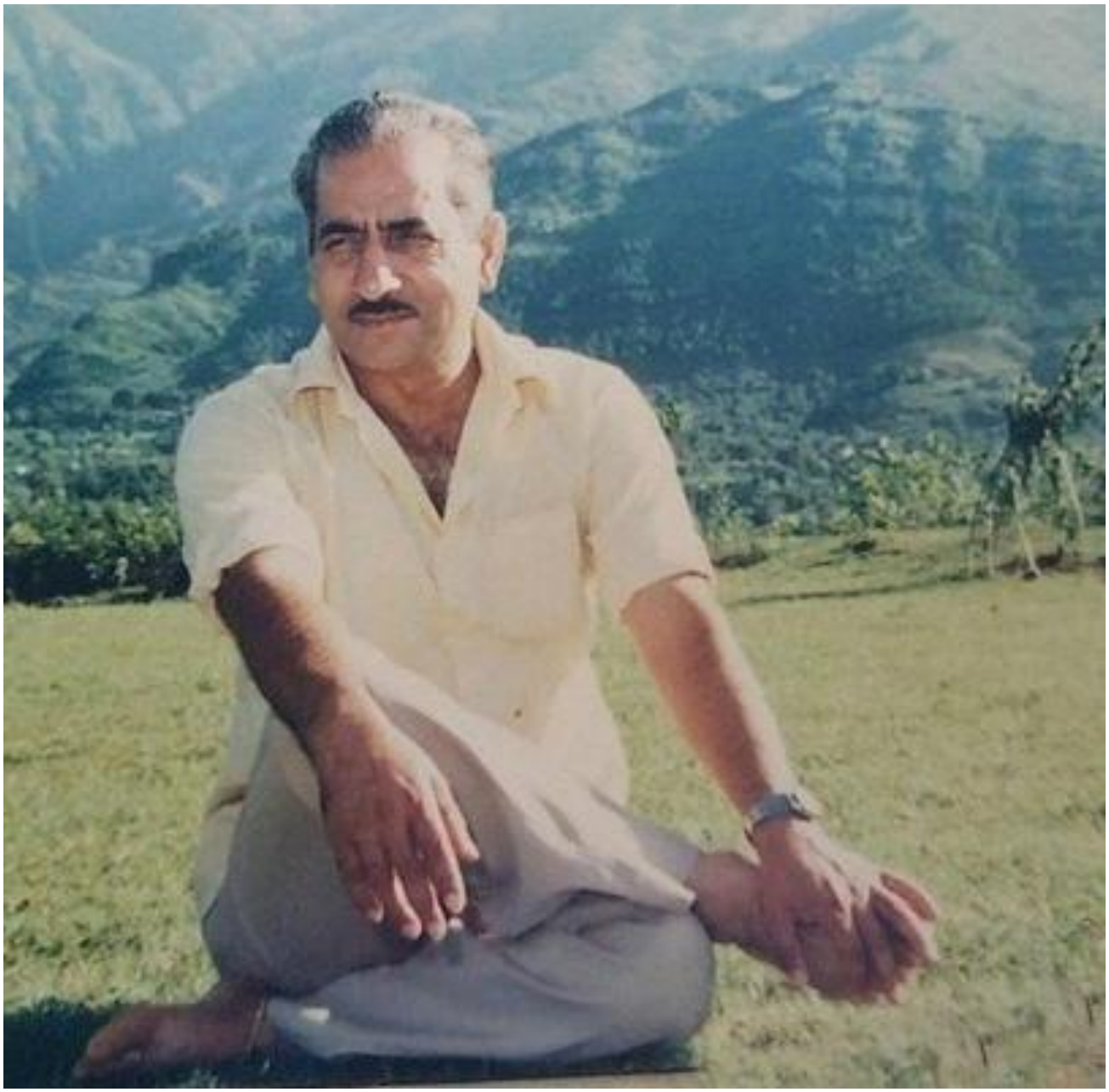

अविश्वसनीय झलकियाँ

भाग-1

*****

अविश्वस-नीय झलकियाँ

*****

राज्जे- गुरुशिष्य
(राजपॉल सेख़री)

श्री राजपॉल सेख़री के पास
कॉपीराईट © 2010 सुरक्षित

इस पुस्तक के मुद्रण का, लेख़क के पास पूर्ण नैतिक अधिकार है।
इस पुस्तक या इसके किसी भाग को, किसी हालात में,
प्रकाशक की लिख़ित अनुमति के बिना,
छापना वर्जित है।

इस पुस्तक में लिखी घटनाओं का,
सुन्दर रीति से वर्णन करने के लिये, किसी बनावटी या
झूठे चरित्र का निर्माण, नहीं किया गया है।
इसमें उल्लिखित नाम व घटनाऐं,
सिर्फ लेख़क के नजरिये से, लिखी गयी है।

प्रथम संस्करण 2010
भाग-1

प्रकाशक
श्री राजपॉल सेख़री,
19/77, पंजाबी बाग (पश्चिम)
नई दिल्ली.110026
भारत

mahaguru9@hotmail.com
www.gurujiofgurgaon.com

हिन्दी रूपान्तरण :
.....गुलशन अरोड़ा

मेरे गुरुजी

हिन्दी

रूपान्तरण

लेखक की कलम से ---

सन् 2010 की बात है, दो महीने अमेरिका रहने के बाद, जब मैं वापिस आया तो उस समय, महाशिवरात्रि का समय नज़दीक था। सभी लोग इसी इंतज़ार में थे, कि कब महाशिव, अपनी समाधि से उठें और गुरुजी से सभी को आशीर्वाद मिले, जिसका हम लोग भी बेसब्री से, इंतज़ार कर रहे थे।

मैं, परम सुः ख का आनन्द ले रहा था कि तभी गुरुजी ने, मेरे दिमाग में एक विचार डाला। जिसका मैं, बड़ी व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहा था। आज गुरुजी ने मुझे आदेश दिया, कि मैं अपने गुरुजी के साथ बिताये गये, परम सुः ख के अनमोल पलों के बारे में, एक पुस्तक लिखूं। (गुरुजी अपने शिष्यों को, आध्यात्मिक रुप से, अपनी बात कह देते हैं)

गुरुजी हमेशा से ही, हममें से किसी एक को चुनते हैं और उसे सेवा का मौका देते आये हैं। वे हमें सिखाते हैं, कि जीवन कैसे जीया जाता है। वे हमें शारीरिक, मानसिक और संसारिक समस्याओं से दूर रख कर, जीना सिखाते हैं। हम उनके भय मुक्त बच्चे हैं, क्योंकि उन्होंने हमें विश्वास करना सिखाया है।

गुरुजी, लाखों लोगों की जिन्दगी में आये और आगे भी आते रहेंगे, जिन्हें वे चाहते हैं। वे हमेशा उन्हें भय-मुक्त करते रहेंगे। ऐसा जिनके साथ हुआ, उनमे से एक मैं भी हूँ। उन्होंने मुझे अपना, शिष्य बनाया और वह सब कुछ सिखाया, जो वे मुझे सिखाना चाहते थे। मुझे वैसा बनाया, जैसा वे बनाना चाहते थे। मैंने इस पुस्तक में अपने अनुभव, जो मैंने पहले दिन से लेकर, आज तक महसूस किये, लिखने की कोशिश की है और ऐसा, उन्हीं की कृपा से ही, संभव हो सका है।

गुरुजी के पास जो लोग आते, उन्हें वे आशीर्वाद देते और जो कुछ भी वे, गुरुजी से माँगते, गुरुजी उन्हें दे देते। गुरुजी अपने अनुयाईयों को, एक ताँबे का कड़ा, जिसमें चाँदी का टाँका लगा होता है, देते थे। ताँबा, शिव और चांदी, माँ पार्वती के प्रतीक होते हैं। दोनों मिलकर शिव-परिवार बनाते हैं। गुरुजी यह कड़ा, अपने माथे से लगा कर, पुरुषों के, दायें हाथ में और स्त्रियों के, बायें हाथ में पहनाते थे और इस तरह, हम भी शिव परिवार के सदस्य बन जाते हैं तथा हम, भगवान की सुरक्षा में आ जाते हैं। गुरुजी या उनके शिष्य हमें, जल, लौंग, इलायची और काली मिर्च देते और उनको किस तरह से प्रयोग करना है, बताते हैं।

एक बार जब, लोग उनके बताये हुए रास्ते पर, चल पड़ते हैं, तो उनकी जिन्दगी, बड़ी आसान हो जाती हैं। वे आत्म-विश्वास से भर जाते हैं और जिन्दगी में वे, जो कुछ पाना चाहते हैं, वे आसानी से पा लेते हैं।

प्रस्तुत हैं, कुछ ऐसी ही उपकथाएं (ऐपीसोडस) उन लोगों की, जो गुरुजी के पास आये और उनकी संम्पूर्ण जीवन शैली ही बदल गई।

गुरुशिष्य,
(राजपाल सेखरी)

: : अनुक्रमणिका : :

1. गुरुजी से मेरी प्रथम भेंट, मेरे जीवन का पहला दिन। 9-9
2. गुरुजी के पास छुट्टियों में जाना। 10-11
3. पहली बार मैंने जब किसी को ठीक किया 12-14
4. शिवपुरी स्थान पर जब, गुरुजी ने, मेरी बेटी के दांत पुनः चार साल के अन्तराल के बाद दुबारा उगाये। 15-15
5. उनका साधारण व्यवहार (वे अक़्सर लुंगी और कमीज़ में सबसे मिलते थे।) तथा गुड़गांव स्थान, बड़ा वीरवार, प्रसाद, सेवा और जल का महत्व। 16-20
6. मेरा गुरुजी के पास सुन्दर नगर, (हिमाचल) जाना। 21-24
7. जब गुरुजी ने मुझे महा मृत्युन्जय मंत्र का जाप करने से मना कर दिया। 25-26
8. जब गुरुजी ने मुझे गुड़गांव स्थान पर बैठकर, आध्यात्मिक सेवा करने का आदेश दिया 27-29
9. जब पहाड़ियों से वापिस आते हुए गुरुजी ने, अपनी ऑफिस की जीप को, न्यूट्रल गियर में रखा। 30-31
10. ट्रेन में आरक्षित टिकट के न होते हुए भी, गुरुजी के साथ, मुम्बई यात्रा की। 32-34
11. जब केदारनाथ जी की यात्रा से वापिस आते हुए, फीएट कार के ब्रेक, फेल हो गये। 35-36
12. सीताराम जी की मुम्बई हवाई यात्रा। 37-38
13. जब मेरा, अपनी फैक्टरी में एक्सीड़ेन्ट हुआ 39-41
14. रेनुकाजी--गुरुजी ने अपने शिष्यों को, सेवा के लिए बुलाया। 42-44
15. रेनुकाजी--- लोगों का सैलाब। 45-49
16. एक लड़की काँच की चूड़ियों की उल्टी कर रही थी। 50-52
17. जब गुरुजी को हवाई अड्डे पर लेने गया। 53-55
18. जब गुरुजी, पहली बार पंजाबी बाग पधारे । 56-59
19. गुडगांव स्थान पर बड़े वीरवार की सेवा। 60-63
20. जब गुरुजी ने एक व्यक्ति के भाई की, पेट दर्द ठीक की। 64-64
21. गुरुजी द्वारा पंजाबी बाग स्थान की स्थापना। 65-66
22. गुरुजी, नागपुर से मुम्बई गये। 67-70
23. गुरुजी ने, यश सेठी को ठीक किया। 71-74
24. गुरुजी के साथ, लंदन यात्रा। 75-76
25. रात के एक बजे, शिष्यों के लिए, नीम्बू शिकन्जवी। 77-77
26. गुरुजी ने पांच-छः महीने पुरानी बीमारी, एक मिनट में ठीक की। 78-81
27. मेरी बेटी मुक्ता की शादी। 82-82
28. गुरुजी ने छोटी लड़की, जिसको दौरे पड़ते थे, ठीक किया। 83-83

29. जब एक जवान लड़की ने परेशानी में आकर, तेजाब पी लिया, उसे बचाया। 84-84
30. मेरा यूरोप और अमेरिका का, वीज़ा। 85-87
31. जब गुरुजी, परीक्षा देने गये। 88-89
32. गुरु पूर्णिमाँ--- जब गुरुजी ने बरसात कराई। 90-91
33. जब गुरुजी ने सीताराम जी से कहा, देखो, तुम्हारा भाई आ रहा है। 92-93
34. जब कत्ल की सजा (सजा-ए-मौत) पाये, एक मुजरिम को, गुरुजी ने बचाया। 94-95
35. डॉक्टर शंकर नारायण ---गुरुजी के शिष्य। 96-96
36. जब मैं कार चलाते-चलाते, सो गया। 97-97
37. गुरुजी की बहन, देशी बुआ की शादी। 98-99
38. जब चार भाई, अपनी माँ की लम्बी आयु का, आशीर्वाद लेने आये। 100-101
39. डॉक्टर सूरी अपनी मिटिंग से पहले, गुरुजी के दर्शन करना चाहता था। 102-103
40. जब मैं अपनी पुरानी कार, बेच रहा था। 104-104
41. गुरुजी ने एक बूढ़े सरदार जी के घुटने, ठीक किये। 105-106
42. गुरुजी ने मुझे, तुरन्त कुल्लू बुलाया। 107-108
43. जब मैंने वीरवार के दिन, गलती से शेव की। 109-110
44. जब डॉक्टर कुमुदिनी, मेरे प्रति अपने आसक्त प्रेम के बारे में, जानना चाहती थी। 111-113
45. जब एक महिला, पिछले छः महीनों से, सो नही सकी। 114-114
46. जब गुरुजी के शिष्य की बेटी, अपनी परीक्षा का विषय ही भूल गई। 115-115
47. जब एक सरदारजी, चार महीनों से कुछ भी, खा नहीं पा रहे थे। 116-117
48. जब मुझे अपने बड़े भाई की मौत का, स्वप्न आया। 118-119
49. जब गुरुजी ने लगातार सिरदर्द के लिए, एक महिला के माथे पर, स्ट्रोक्स लगाये। 120-120
50. जब गुरुजी ने मुझे, एक मिरगी के मरीज़ को, सड़क पर ठीक करने पर, डाँट लगाई। 121-122
51. जब गुरुजी ने मुझे, अस्पताल के ICU विभाग में, किसी मरीज़ को जल देने भेजा। 123-124

1. गुरुजी से मेरी प्रथम भेंट, मेरे जीवन का पहला दिन।

सत्तर के दशक की बात है, एक दिन सुबह-सुबह श्रीमति शीला चौधरी, जो मेरे ससुराल के पड़ोस में रहतीं थीं, आयी और कहने लगी ----

''मेरे गुरुजी के हाथ में ॐ है'' और वो आपकी पत्नी श्रीमति गुलशन को, ठीक कर सकते हैं। तभी हम मेरी पत्नी गुलशन को लेकर, श्रीमति शीला के साथ, मैं और मेरी पत्नी का भाई, कर्ज़न रोड़ पर स्थित, गुरुजी के ऑफिस पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उसने, हमे रुकने के लिए कहा और स्वयं गुरुजी को लेने अन्दर चली गयी।

परन्तु ये क्या.....?
थोड़ी देर के बाद, वह एक, बहुत खूबसूरत नौजवान, जिन्होंने, हल्के नारंगी रंग का स्वेटर, पहना हुआ था और उसके बाजुओं को, मोड़ रखा था तथा शानदार जूते भी पहने हुए थे, के साथ बाहर आयी। उसने हमें उनसे मिलवाया और कहा----

'.....ये 'गुरुजी' हैं।'

मैं अचम्भित रह गया.....

- ''क्या !! ये गुरुजी हैं...?''
- गुरुजी ऐसे भी होते हैं.....!!
- मैंने तो ये कभी, सोचा भी नहीं था.....।।

खैर.....
मैंने उन्हें नमस्ते की, तो उन्होंने मुझसे पूछा----

''क्या बात है?''

मैंने कहा----
''सामने कार में मेरी धर्मपत्नी हैं। वह कुछ दिनों से लगभग, कोमा की सी स्थिति में है और पिछले कुछ सालों से बीमार चल रही हैं। इन्हें क्या बीमारी है, यह अब तक किसी को भी, समझ में नहीं आ रहा है।''

गुरुजी बोले---
''मैं इसे इस 'दौरे' से वापिस ले आऊँगा। लेकिन पूरी तरह से यह, अगले कुछ महीनों में आने वाली शिवरात्रि के बाद, ठीक होगी।''

ऐसा कह कर, वे हमें नजदीक के एक घर में, जो उनके शिष्य शिवदयाल जी का था, वहाँ ले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने, मेरी धर्मपत्नी को एक कुर्सी पर बिठाया और एक गिलास में पानी लेकर, मेरी पत्नी की आँखों में, जल के छीटे मार दिये। जैसे ही गुरुजी ने, यह सब किया, कुछ ही देर में मेरी धर्मपत्नी बिलकुल ठीक हो गई।
मैं विस्मित रह गया.....!!

- ये कैसे हो गया... ?
- वह एकदम अपने होश में,
  वापिस कैसे लौट आईं.....!!

*****

2. गुरुजी के पास छुट्टियों में जाना।

गुड़गांव गुरुजी के पास, पहले मैंने रविवार और छुट्टी के दिन ही, जाना शुरु किया। जब मैं उनके पास जाता, तो देखता, कि वहाँ बहुत से लोग, तरह-तरह बीमारियों से पीड़ित और अपनी घरेलू परेशानियाँ लेकर आते और गुरुजी के चरण छूकर उन्हें, दूर करने की प्रार्थना करते। जैसे ही गुरुजी उन्हें छूते, उनके छूने मात्र से ही, वे लोग दर्द-मुक्त हो जाते। यह सब कुछ मैं, वहाँ चुपचाप बैठा, अचम्भित होकर देखता रहता। ये मेरे जीवन में, इस तरह की असाधारण घटनाऐं थी।

अब मैंने लगातार गुड़गांव जाना शुरु कर दिया। घण्टों तक कारपेट पर बैठा हुआ, देखता रहता। मैंने देखा कि गुरुजी, हर किसी व्यक्ति को, एक जैसे ही मिलते, फिर वह चाहे अमीर हो या गरीब, बच्चा हो या फिर बूढ़ा। एक भी स्त्री या पुरुष, मैंने ऐसा नहीं देखा, जिसने ये शिकायत की हो, कि उसकी समस्या का समाधान नहीं हुआ है।

एक दिन एक महिला आई और बोली, ''गुरुजी, मेरा दाहिना हाथ नहीं खुलता, मेरी उंगलिया तथा हथेली आपस में जुड़ गयी हैं।''
गुरुजी ने कहा----

''तुम कुछ दिन पहले दोपहर को, एक बगीचे में गई थी। इन्हीं हाथों से तुमने बगीचे सम्बधित, कार्य भी किया था। उस समय वहाँ पर एक बुरी आत्मा, आनन्द मगन थी। तुम्हारे उपरोक्त कार्य की वजह से, उसके आनन्द में बाधा उत्पन्न हुई, जिससे वह क्रोधित हो गई और उसी ने तुम्हारे हाथ को, कस के बन्द कर दिया है।

.....मैं इसे खोल दूंगा, बेटा''

ऐसा कह कर, गुरुजी ने, उसकी उंगलियों के जोड़ों पर स्ट्रोकस **(Strokes)** लगाये। तभी कुछ समय बाद, मैंने देखा कि उसके हाथ खुल गये और उसकी उंगलियाँ भी सीधी हो गई।

मेरी समझ में ये नहीं आ रहा था, कि ये सब कैसे हो गया!!

मैं पिछले कई सालों से देश में,
उत्तर से दक्षिण तक
कई साधु-सन्तों से मिल चुका था,
लेकिन इस तरह का अद्भुत नजारा मैंने,
कभी नहीं देखा था।

खैर..... !!

वह महिला, बिलकुल ठीक हो गई और खुः शी-खुः शी मुस्कुराते हुए चली गई।

मैंने हर बार, एक ही नहीं, सभी को इस अनोखे ढ़ंग से, बिना किसी दवाई के, सिर्फ जल, लौंग व इलायची या सिर्फ हाथ से छूकर, व्याधि मुक्त करते हुए देखकर, मुझे यह आभास होंने लगा, जैसे कि मैं एक अलग संसार में आ गया हूँ, जहां पर गुरूजी मनुष्य रुप में, भगवान की तरह, सबके काम कर रहे हैं। मैंने गुरूजी को सुबह से रात तक, काम करते हुए देखा, लेकिन उनके चेहरे पर, कभी भी थकान प्रतीत नहीं हुई।

जहां तक उनके खाने का सम्बन्ध है, वे सिर्फ कुछ कप चाय ही पीते थे। यदि कोई उन्हें मिठाई या फल देता, तो वे उसे, वहाँ उपस्थित लोगों में बांट देते थे, परन्तु वे स्वयं नहीं खाते थे। मैं उनकी भाव-भंगिमा की व्याख्या करने में, अपने आप को असमर्थ पाता हूँ। उनका लोगों से बात करने का तरीका, ऐसा लगता था कि उनको लोगों की सेवा करके, बहुत आनन्द आता था। लोग भी उनके पवित्र चरणों को छूकर, अपने आप को धन्य और सुरक्षित समझते थे। उनके चेहरों पर भी, सम्पूर्ण संतोष स्पष्ट झलकता था। जैसे उन्होंने अपनी मंजिल पा ली हो।

*****

3. पहली बार मैंने जब, किसी को ठीक किया।

एक बार रविवार का दिन था, मैं हमेशा की तरह, सुबह पंजाबी बाग कल्ब से, टेनिस खेलकर, घर लौट रहा था। अचानक मेरे दिमाग में ख़्याल आया कि क्यों न मैं घर जाने से पहले, गुरूजी के दर्शन कर आऊं और मैं गुड़गांव चला गया।

जब मैं गुड़गांव पहुँचा, तो उस समय गुरूजी, चारपाई पर बैठे हुए थे। उनके सामने नीचे, एक वृद्ध महिला बैठी प्रार्थना कर रही थी------

''गुरूजी, मैं आपके पास, बहुत आस ले कर आई हूँ। किसी ने मुझे बताया है, कि मेरी बाजु का भयंकर दर्द, सिर्फ आप ही दूर कर सकते हैं। ये दर्द मुझे पिछले छः साल से है। मैं साल में 365 दिन, दवाई खाती हूँ।''

लेकिन सब व्यर्थ .....''

उसी समय, मैं भी गुरूजी के पास पहुँचा और उनके पवित्र चरण स्पर्श किये। उन्होंने कृपापूर्वक, अपनी लुभावनी मनमोहक मुस्कान के साथ, मुझे आशीर्वाद दिया और फिर वापिस उस वृद्ध महिला की तरफ धूमकर, उससे पंजाबी भाषा में बोले---

''लै ऐ तै मेरा शिष्य वी ठीक कर सकदा ऐ ''

(ये तो मेरा शिष्य भी, ठीक कर सकता है),

और उन्होंने मुझे आदेश दिया---

''राज्जे, ऐदी दर्द ठीक कर दे।''

''(राज्जे, इसका दर्द ठीक कर दे।)''

मेरी धड़कनें तो जैसे, रुक ही गई। मैं गुरूजी की तरफ अचरज़ भरी नज़रों से, देखने लगा। मैं उनके पास गया और धीरे से, उनके कान में बोला---

''गुरूजी, भला मैं ये कैसे कर सकता हूँ?
....मैं नहीं जानता कि ये, कैसे होगा?''

गुरूजी ने धीरे से मेरे कान में कहा-----

''उसकी बाजु को अपने दाहिने हाथ से पकड़ो और नीचे तक खींच दो।''

घबराहट में संकुचाते हुए मैंने, उस महिला के कंधे को छुआ और अपना हाथ, उसके कंधे से सरकाता हुआ, उस वृद्ध महिला के हाथ तक, नीचे खींच लाया।

आफरीन.....!!

.....ये तो चमत्कार हो गया!!

वह महिला तो ठीक हो गई। वह रोना भूलकर मुस्कुराने लगी। उसके पास अपनी खुः शी को जाहिर करने के लिए, शब्द ही नहीं थे। उसने कहा----

''पिछले 6 सालों में आज पहली बार,
मैं अपने आप को दर्द से मुक्त पा रही हूँ और
वह भी बिना किसी दवाई के।''

''गुरुजी आपका भला हो.....!!''

इसके बाद उसने फिर गुरुजी से, मिन्नत भरे शब्दों में प्रार्थना की----

''गुरुजी, मैं अपना हाथ ऊपर नहीं उठा सकती, गुरुजी.....
इसे भी ठीक कर दो ना!!''

इस बार गुरुजी ने, फिर मुझे आदेश दिया---

''राज्जे, इसका हाथ ऊपर उठा दे।''

मैं दुबारा गुरुजी के पास गया और धीरे से, उनके कान के पास, फुसफुसा कर बोला----

''गुरुजी अगर मैंने इसके कंधे पर जोर लगाया,
तो वह टूट जायेगा क्योंकि वह तो,
पिछले 6 सालों से जाम है।''

गुरुजी बोले-----

**''.....राज्जे घबरा नहीं,
मैंने तो इसे पहले ही खोल दिया है।
.....तू बस जा और उठा दे''।**

दुबारा फिर चमत्कार हुआ, वह महिला तो खुः शी से मानों, पागल सी ही हो गई-------।

गुरुजी बोले-----

**''माई, अपनी बाजु को,
दायें बायें घुमा के देख, मेरे शिष्य ने,
तेरी बीमारी को दूर कर दिया है।''**

वह बस यही कहे जा रही थी---

''आपका भला हो गुरुजी.....!!''

और फिर वह रोने लगी। लेकिन इस बार उसकी आँखों में, विश्वास और खुः शी के आँसू थे।

इस तरह की और कई घटनाऐं भी, मैंने उनके साथ महीनों ही क्या, सालों तक रहकर देखी। गुरूजी इन्सान, भगवान और प्रकृति को, अपने वश में रखते, नजर आए। उनके इस रुप ने, मेरे जीवन की दिशा ही, जैसे बदल दी।

मेरी पत्नी गुलशन और मेरी चारों बेटियाँ भी, मेरे साथ इस राह पर चलने लगीं। सत्तर के दशक में मेरा और मेरे परिवार के जीवन में, एक नया अध्याय शुरु हुआ। मेरी पत्नी और बेटियाँ, मुझसे भी ज्यादा, गुरूजी पर विश्वास और उनसे प्यार करने लगी। अगर कभी मैं गुस्से में भी उन्हें, कुछ कह देता तो उल्टा धमकी देकर मुझसे कहती, ''हम आपकी शिकायत गुरूजी से कर देगें, क्या सुः खद जीवन था।''

अब मेरा परिवार, गुरूजी की छत्र-छाया में, पूरी तरह से सुरक्षित हो गया और आने वाले कल में, किसी भी डर का, कोई स्थान नहीं रहा।

वो पंजाबी में कहते हैं ना

''हुण तां, टुण्डे लाट दी वी, परवाह नहीं।''

ठीक इसी तरह का प्यार, हमें पूज्य माता जी से मिला। जिन्हें मैं माताराणी जी के नाम से भी बुलाता हूँ। गुरूजी के अपने बच्चे--- रेनू, बब्बा, इला, नीटू और छुटकी भी हमसे, बहुत प्यार करते और सम्मान देते। पूरा संसार ही जैसे, बदल गया हो।

अब हमारे जीवन में कैसी भी समस्या हो,
''उसका समाधान गुरूजी के पास था।''
हमारी जिंदगी से हर तरह का डर
और कष्ट दूर हो गये ।

*****

4. शिवपुरी स्थान पर जब गुरूजी ने, मेरी बेटी के दाँत पुनः चार साल के अन्तराल के बाद, दुबारा उगाये।

सत्तर के दशक की बात है, जब चार साल की मेरी छोटी बेटी ने, खेलते हुए अपने आप को घायल कर लिया।

वह गिर गई थी और उसके ऊपर, कोई भारी चीज़ गिर गई। जिससे उसके सामने के चार दांत टूट गये थे। मेरी पत्नी, जब अपने डेनटिस्ट के पास गईं, तो उसने बताया कि जब से इसके दूध के दांत टूटे हैं, उसके साथ उनकी जड़े भी खराब हो गई हैं। इसलिए इसके ये दाँत दुबारा नहीं उग सकते। यह सुनते ही मेरी पत्नी बेहोश हो गई। (शायद उन दिनों नकली दाँत, अधिक प्रचलन में नहीं थे,) इसलिए यही सोचकर, कि सारी जिन्दगी मेरी बेटी को, इसी तरह से रहना होगा, उसे इस बात का झटका लगा।

कुछ वर्षो बाद, हमने गुरूजी के पास जाना शुरु किया और हम, गुरूजी के गुड़गांव स्थित, शिवपुरी स्थान पर गये। मैं अपने परिवार के साथ, स्थान के हॉल में, लाईन में खड़े हुए, गुरूजी के आशीर्वाद की प्रतीक्षा कर रहा था। जैसे ही हम गुरूजी के पास पहुँचे, मेरी पत्नी ने, गुरूजी से अपनी बेटी के टूटे हुए दाँतों के बारे में, बताया। गुरूजी उसकी बात सुनकर, बड़ी सहजता से लिया और उस लड़की के मुंह में, अपनी उंगली डाल कर, उसके मसूड़ों को छू दिया।

दो हफ्तों के अन्दर ही, मेरी लड़की के दाँत, दुबारा निकलना शुरु हो गये।

...और आश्चर्य है.....!!

.....वह भी चार साल के अन्तराल के बाद।

उन्होंने इतनी सहज़ता से, क्या चमत्कार किया,

....वही जानें।

*****

5. गुरुजी का सादा जीवन

(लोगों की हर तरह की परेशानियों को,
दूर करते हुए, मैंने गुरुजी को अक़्सर,
लुंगी और कमीज में देखा।)

गुरुजी, आम लोगों के बीच अक़्सर, बड़ी सादी ड्रेस, जैसे लुंगी और कमीज और/या पैन्ट-कमीज में ही रहते थे। अस्सी के दशक में, गुरुजी के अनुयाईओं की संख्या, तेजी से बढ़ने लगी। संसारिक तौर पर पिता होंने के नाते, गुरुजी अब अपने बच्चों के लिए भी, समय बहुत मुश्किल से निकाल पाते थे। इसके बावजूद उनके परिवार के सभी सदस्य, बहुत सन्तुष्ट और खुः श थे और उनके बच्चे अपनी अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान देते थे।

गुरुजी अपने ऑफिस जाते, जहां वे सोयल सर्वे आफ इंड़िया के एक विभाग में, भू-वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत थे। वे दूसरे अधिकारियों के समान, अपना कार्य करते थे तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ, अधिकतर हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों में जाते। वहाँ की जमीन का निरीक्षण कर, उसकी रिपोर्ट अपने विभाग को देते थे। उनकी अधीनस्थ टीम में, एक जीप का ड्राईवर, एक रसोईया, एक सॉयल डिगर (जमीन की खुदाई करने वाला) और एक ओवर सीयर, होते थे।

वे दूर-दराज की पहाड़ियों में, महीनों-महीनों रहकर, अपना काम करते और अपने विभाग को उसकी रिपोर्ट देते। जैसा कि एक आम विभागीय कर्मचारी करता है। उनके द्वारा प्रेषित रिपोर्ट अधिक विश्वस्नीय और उपयोगी होती थी। जैसा कि उनके उच्च अधिकारी बताते हैं।

मैं भी उनके, एक उच्च अधिकारी के सम्पर्क में आया, जिनका नाम डा0 शंकर नारायण है। वह भू-विज्ञान के ज्ञाता हैं और उन्होंने इस विषय पर, पुस्तकें भी लिखी हैं। वे भी, गुरुजी के प्रिय शिष्यों में से एक हैं और उन्हें भी गुरुजी ने, कई आध्यात्मिक शक्तियाँ भी प्रदान कीं थीं, ताकि वे भी लोगों को ठीक कर सकें। वह अपने निवास स्थान, बैंगलुरु और गुड़गांव स्थान पर, लोगों की सेवा करते थे। गुरुजी उन्हें अन्य शिष्यों की तरह ही 'बड़े वीरवार' पर सेवा के लिए बुलाते थे।

बड़ा वीरवार

हर महीने के चार वीरवारों में से एक होता है। हर अमावस्या के बाद, जो पहला वीरवार आता है, उसे 'बड़ा वीरवार' कहते हैं। इस दिन गुरुजी बहुत सवेरे ही उठ जाते और अपने शिष्यों को समझाते, कि उन्हें आज, किस तरह से सेवा करनी है। वे स्वयं स्थान के गेट पर खड़े हो जाते, जहां से लाईन में लोग आते और उन्हें प्रणाम करते और गुरुजी उनके माथे पर, अपना हाथ रख कर, उन्हें आशीर्वाद देते। फिर उन्हें अपने शिष्यों के पास जाकर, अपनी समस्याओं के बारे में बताने की, हिदायत भी देते। उसके बाद वे लोग चलकर स्थान के मेन हॉल में आते और उनके शिष्यों से मिलते।

शिष्य उनकी समस्याओं को सुनते। लोगों की सेवा करने का यह, एक अद्भुत तरीका था। उनके शिष्यों में से तीन शिष्यों को, बैंच पर बैठाते थे। जो आने वाले लोगों की समस्याओं को सुनते थे, लोग उनके समक्ष लाईन लगा कर बैठ जाते थे।

कुछ शिष्य उन लोगों को देखते थे, जिन्हें गुरूजी तुरन्त आराम के लिये, जैसे अर्थराईटिस यानि जोड़ों का दर्द, बुखार या डिपरेशन आदि से पीड़ित होते थे, उन्हें भेजते थे। ये शिष्य, गुरूजी के द्वारा बताये गये तरीके से, कार्य करते थे। कभी-कभी आँखों में जल के छींटें मारना, माथे पर स्ट्रोकस **(Strokes)** लगाना और कभी, जोड़ों के दर्दो से परेशान व्यक्ति के, जोड़ों को छूना आदि। मरीज़ों को 40% से 50% तक आराम, तुरन्त मिल जाता था। यह सब करने का तरीका, गुरूजी अपने शिष्यों को, पहले से ही बता देते थे।

इसका नतीज़ा तुरन्त नज़र आता था। जो व्यक्ति को डिपरेशन का शिकार होता, वह तुरन्त अपनी सामान्य अवस्था में आ जाता था। जो लोग तेज़ बुख़ार से पीड़ित होते या जोड़ों के दर्द से परेशान होते, उनके चेहरे पर भी, तुरन्त मुस्कुराहट आ जाती और उनके भी मुख़ से यही शब्द निकलते-------

''...जय गुरूदेव, ...वाहे गुरू''

गुड़गॉव स्थान

सूर्योनमुख़ दीवार पर, शिव परिवार की मूर्ति, जो चाँदी और ताँबे से बनी हुई है, के साथ और कई देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, जैसे माँ-गायत्री, माँ-काली, लक्ष्मी-सरस्वती-गणपति, सीता-राम-लक्ष्मण और हनुमान जी के रुप विराजमान हैं।
गुरूजी इसे बुड्ढे बाबा का------ 'देवो महेश्वरा' का स्थान कहते हैं। सभी लोग यहाँ मीठी फुल्लियों का प्रसाद चढ़ाते हैं और अपने मन ही मन में अपनी समस्याऐं, उनके समक्ष रखते हैं। जो सादगी से अपनी समस्या, उनके समक्ष रखता है, गुरूजी उसका समाधान कर देते हैं।

माताजी सुबह-सुबह स्थान पर ज्योति व धूप जलाती हैं और बुड्ढे बाबा को प्रसाद अर्पण करती हैं। उसके पश्चात् उनके शिष्य और फिर समस्त भक्तगण, उन्हें प्रसाद अर्पण करते हैं।

प्रसाद

भुने हुए चावल, जिन पर
चीनी चढ़ी हुई होती है और जिन्हें
मीठी फुल्लियाँ भी कहते है,
उसका सवा रूपये का प्रसाद.....

जो केवल बड़े वीरवार के दिन,
सिर्फ गुड़गांव स्थान पर ही,
चढ़ाया जाता है।

अब तक मैंने, सिर्फ एक ही बात सुनी थी, कि प्रसाद मंदिर-गुरुद्वारों में, चढ़ाया जाता है और अधिकतर प्रसाद का मतलब, लडडू, बरफी, बूंदी या हलवा आदि होता है। जो करीब 100 रुपये से लेकर 1000 रुपये तक होता है। जबकि गुरुजी का प्रसाद **मीठी फुल्लियाँ** (चीनी चढ़े भुने हुए चावल) और वह भी सिर्फ सवा रुपये का।

यह 'भगवान शिव का प्रसाद' है जिन्हे गुरुजी (बुड्ढे बाबा, देवो महेशवरा या त्रिलोकीनाथ के नाम से भी सम्बोधित करते हैं)

बुडढे बाबा,
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के
'भगवान शिव'
स्वयं इन, मीठी फुल्लियों का
इन्तजार करते हैं।

और गुरुजी से कहते हैं ''जो कोई श्रद्धा भाव से, बड़े वीरवार के दिन, यह प्रसाद मुझे अपर्ण करेगा, मैं उसे सभी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रोगों से, मुक्त कर दूंगा।''

सेवा

स्थान पर मीठी फुल्लियों का प्रसाद, गुरुजी को अपर्ण करने के बाद सभी भक्तजन, गुरु शिष्यों के पास जाकर आशीर्वाद लेते और अपनी जैसे संसारिक, शारीरिक, मानसिक या आर्थिक समास्याऐं, उन्हें बताते। गुरु शिष्य उन्हें ''गुरुजी'' द्वारा दी गई आध्यात्मिक शक्तियों का प्रयोग कर, उनकी समास्याओं का समाधान कर देते। वे उन्हें जल तथा उनके द्वारा लाये गये लौंग, इलायची, काली मिर्च तथा और जो कुछ भी उनके लिए आवश्यक हो, अपने माथे से लगाकर, उन्हें देते और उनका सेवन कैसे करना है, इसकी विधि भी उन्हें बताते।

जल

गुरुजी सुबह-सुबह, एक बड़े से ड्रम में, केसर डालकर जल बनाते थे और पता नहीं, जाने कौन-कौन सी आध्यात्मिक शक्तियाँ, उसमें डाल देते थे। चाहे कैसी भी समस्या हो, हर समस्या का समाधान जल था।

दिमागी परेशानी के कारण, आपे से बाहर मरीज भी, इस जल के पीने से, बड़ी आसानी से नियन्त्रण में आ जाते थे। वे इस जल को पीते ही, एकदम अपनी सामान्य अवस्था में लौट आते थे। सभी भक्तजनों को लौंग, इलायची व काली मिर्च, जल के साथ, सुबह खाली पेट और रात को सोते समय, लेने के लिए कहा जाता था।

लोग बड़े वीरवार को, पिछले महीने के बीते, अच्छे दिनों के लिए धन्यवाद, और आगे आने वाले महीने के लिए, सुः ख शान्ति की प्रार्थना करते थे। जब वे ठीक हो जाते, तो और दूसरे लोगों को भी, अपने साथ लेकर आते थे। वे अपनी बीमारियों और परेशानियों का, अन्त कराने के लिए भी, गुरुजी के पास बार-बार आते थे।

बड़े वीरवार के दिन, गुरुजी के दर्शन के लिए, लोग 10 से 12 घण्टों तक, लाईन में खुः शी-खुः शी इन्तजार करते। परन्तु किसी के चेहरे पर कभी हताशा, या फिर किसी प्रकार की थकान, महसूस नहीं होती थी। विपरीत परिस्थितियों में भी वे, शारीरिक व मानसिक रुप से स्वस्थ नजर आते थे।

हर किसी आने वाले को, वे चाय का प्रसाद जरुर देते थे। उन दिनों चालीस से पचास हजार लोग, उनके पास आते, जिन्हें वे आशीर्वाद देते और उन्हें उनकी बीमारियों से मुक्त करते। वे किसी से भी, किसी तरह का, कोई उपहार या नगद पैसा नहीं लेते थे।

सभी उनके पास, एक ही विचार लेकर आते, कि मुझे गुरुजी के दर्शन करने हैं, उसके लिए उसे चाहे लम्बी-लम्बी कतारों में, कितना ही इंतजार क्यों न करना पड़े। न ही किसी के माथे पर कोई शिकन होती थी और न ही कोई थकावट ही, महसूस करता था। ऐसा प्रतीत होता था, कि जैसे वे, फिर से जवान हो गये हों!!

गुरुजी से मैं, जब-जब मिलने गया, मैंने हमेशा उन्हें एक अच्छे मूड़ में (प्रसन्न-चित) पाया। उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रहती थी। कभी भी मैंन, उन्हें खराब मूड़ में नही देखा। उनके मुस्कुराहट भरे, लुभावने चेहरे के हाव भाव, देखते ही बनते थे। बहरहाल, ऐसा खूबसूरत अनुभव, मैंने अपनी जिन्दगी में पहले, कभी महसूस नहीं किया था।

गुरुजी के रुप का यदि जिक्र करें तो---

- उनका लुभावना चेहरा,
- उनका लोगों को देखने का अंदाज,
- उनके बैठने का,
- उनके चलने का,
- उनके खड़े होने का अंदाज....

.....बिलकुल अलग था, जो सिर्फ उन्हीं का था।

मैंने कभी किसी संत-महात्मा या किसी स्वामी जी को, इतने प्रभावशाली अंदाज में, पहले कभी नहीं देखा, जैसा कि गुरुजी को। उनमें किसी भी प्रकार की, किसी के साथ, कोई भी समानता नहीं दिखी। गुरुजी बिलकुल अलग थे।

ऐसे तो **गुरुजी ही हैं,**
...सिर्फ गुरुजी।
और उनका कोई मुकाबला नहीं।

जब-जब मैंने गुरूजी को, किन्हीं संतों और आध्यात्म-ज्ञानियों से, बात करते हुए सुना, उनके हर सवाल का जवाब, उनके पास मौजूद होता था और उनकी हर शंकाओं का, पूर्णतयाः समाधान करने में, वे समर्थ थे। कुछ लोग गुरूजी के पास, ऐसे-ऐसे सवाल लेकर आते, जिनका जवाब, उनके जीवन में भी मिलना, संभव न होता, उनको गुरूजी पूर्ण रुप से समझा कर, जवाब देते और वे पूरी तरह से, सन्तुष्ट व निं-उत्तर हो जाते। उनकी जिज्ञासा शाँत हो जाती।

मैं उन्हें, यह सब करते हुए देखता रहता। कुछ लोग उनके पास शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व सामाजिक समस्यायें लेकर आते और गुरूजी उन्हें, बड़ी सरलता से समझा देते।

...वह बहुत थोड़े शब्दों में ही,
अपना संदेश, उन्हे दे देते और उनकी,
समस्याओं का समाधान कर देते,
जिससे वे लोग पूर्णतयाः सन्तुष्ट हो कर जाते।

*****

6. मेरा गुरुजी के पास, सुन्दर नगर (हिमाचल) जाना।

''सुन्दर नगर'' हिमाचल प्रदेश का, एक पहाड़ी इलाका है। वहाँ गुरुजी अपने विभाग की ओर से, भूमि निरीक्षण हेतु ऑफिशियल टूअर पर गये थे।

यह सोच कर, कि गुरुजी के आसपास सुन्दर नगर में अधिक लोग नहीं होंगे, जैसा कि आमतौर गुड़गांव में होते हैं, मैंने अपनी धर्मपत्नी गुलशन और बच्चों को, गुरुजी के दर्शन करने, सुन्दर नगर चलने के लिए कहा।

जब हम सब गुरुजी के पास, सुन्दर नगर, कैम्प में पहुँचे, तो हमें एक साथ वहाँ देखकर, गुरुजी बहुत खुश हुए। उन्होंने हमें चाय का प्रसाद दिया और किसी को आदेश दिया, कि वह हमें बच्चों सहित, आराम करने के लिए, सरकारी रेस्ट हाऊस ले जाए।

गुरुजी ने मुझसे कहा---

''...जाओ बेटा,
तुम अभी जाकर, आराम करो,
कल सुबह 8 बजे आ जाना।
गुलशन और बच्चों को,
रेस्ट हाऊस में ही आनन्द लेने दो।''

वे आगे बोले---

''क्योंकि मुझे फील्ड में अपने सरकारी काम पर जाना है, जब तक मैं वापिस न आऊँ, मेरी गैर मौजूदगी में, तुम यहाँ आये लोगों की सेवा करना।''

अगले दिन

सुबह-सुबह जब मैं कैम्प पहुँचा, तो देखा कि गुरुजी तो वहीं पर थे.....!!

मैंने गुरुजी से पूछा--

''गुरुजी, आप फील्ड़ में नहीं गये?''

गुरुजी बोले---

''नहीं बेटा, आज सुबह से, बहुत बारिश हो रही है और
पहाड़ों पर बारिश में काम करना,
बहुत मुश्किल होता है।
.....इसलिए मैं कल जाऊँगा।''

दूसरे दिन

फिर जब मैं कैम्प पहुँचा, तब भी गुरूजी कैम्प में थे।

वे बोले----

''.....बेटा आज भी बहुत बारिश हो रही है
इसलिए मैं कल जाऊँगा।''

तीसरे दिन

जब मैं फिर कैम्प पहुंचा, तो गुरूजी उस दिन भी, वहीं पर थे। परन्तु इससे पहले कि मैं कुछ बोलूं, उन्होंने जोर से लगभग चिल्लाते हुए ''इन्द्र देवता'' को, इसके लिए दोषी करार देते हुए कहा, कि----

"तूने मेरा सारा,
कार्यक्रम अस्त व्यस्त कर दिया है"

और फिर ललकारते हुए बोले---

"अब देखता हूँ, कि तू कैसे बारिश करता है?''

मैं बहुत अचम्भे में था, कि गुरूजी 'इन्द्र देव' से, इस तरह बात कर रहे थे, जैसे कि वे कोई साधारण व्यक्ति हों और उनकी बातें सुन रहें हों।

अगले दिन

पहले की तरह ही, जब मैं गुरूजी के पास, कैम्प में पहुँचा, तो वे वहाँ नहीं थे। वे फील्ड़ में अपने काम पर जा चुके थे। छः -सात दिन, जब तक मैं सुन्दर नगर में रुका, वहाँ कहीं बारिश नहीं हुई।

सुन्दर नगर में सेवा :

सुन्दर नगर के लोग, अपनी-अपनी समस्यायें, दर्द और बीमारियों के साथ, गुरूजी के पास आते और गुरूजी उन्हें जल, लौंग, इलायची व काली मिर्च बना कर दे देते। मैं जानता था, कि यह सब बिलकुल, ठीक हो जायेंगे।

एक दिन की बात है, गुरूजी ने मुझे नीचे कमरे में, सेवा के लिए बिठाया। लोग गुरूजी से, ऊपर के कमरे में, मिलते और वे उन्हें आशीर्वाद देकर, नीचे मेरे पास भेज देते। उनके द्वारा दिये गये आदेशों का पालन करते हुए, मैं सेवा कर रहा था।

तभी एक सेना से रिटायर्ड व्यक्ति, मेरे पास आया और बोला---

''मुझे गुरूजी ने आपके पास भेजा है।''

उसने बताया कि 8/9 साल पहले, उसकी टाँग में गोली लग गई थी, जिसका इलाज उसने सैनिक अस्पताल में करवाया। उस चोट की जगह, एक छोटा सा छेद बन गया है और लगातार उसमें से, पस निकलती रहती है।

वह आगे बोला--
''मैं तभी से, डॉक्टरों से इसका इलाज करा रहा हूँ, लेकिन पस है, कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही। मैं इस जख्म को, हमेशा पट्टी से बाँध कर रखता हूँ। जब एक पट्टी गीली हो जाती है, तो मैं उसे बदल देता हूँ। इतने साल हो गये, मुझे इसका कोई इलाज नहीं मिला।''

वह फिर बोला--
''मुझे किसी ने बताया है, कि गुडगांव से कोई गुरुजी, सुन्दर नगर आये हुए हैं, वे ही तुम्हारी यह बीमारी, ठीक कर सकते हैं। बस विश्वास रखो। इसीलिए मैं गुरुजी के पास आया हूँ।''

उसने मुझे बताया कि 'गुरुजी' ऊपर बैठे हैं, मैं उनसे मिला हूँ, उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर, आशीर्वाद दिया और आपके पास आने का आदेश भी दिया है।

उसकी इतनी बात सुनकर, मैं गुरुजी के पास गया और उनसे पूछा---
.....गुरुजी अब मैं क्या करूं?

उन्होंने मुझे आदेश दिया----

''.....उसकी पट्टी खोलो,
और उसके जख्म की तरफ देखो।
लेकिन ध्यान रखना, तुम्हारे दिमाग में भी, ये बात न आये, कि ये जख्म कितना गन्दा है।''

नीचे आकर मैंने, जैसे ही उसकी पट्टी को खोला, लगभग तीन चार वर्ग इन्च का हिस्सा, बुरी तरह से खराब हो चुका था। उसके बीच में, लगभग तीन मिली मीटर का एक छेद बना हुआ था, जिसमें से बहुत बदबूदार, सफेद पस निकल रही थी। उसकी टाँग गन्दी व सफेद पड़ गई थी।

वास्तव में ही, वह नजारा देखना, मुश्किल हो रहा था। लेकिन जैसा गुरुजी ने कहा था, मैंने उसके उस ज़ख्म को देखा और उस पर हाथ रख दिया।

आश्चर्य------

जब वह व्यक्ति अगले दिन आया, मेरी आँखें, अचम्भे से खुली की खुली, रह गई। उसके जख़्म से पस निकलनी, बन्द हो चुकी थी और उसकी टाँग भी सफेद की जगह अपने भूरे रंग में आ गई थी। मेरी खुः शी का ठिकाना नहीं था, मैं दौडता हुआ गुरुजी के पास गया औरं खुशी से लगभग चिल्लाता हुआ बोला---

- ''वाह.....गुरुजी,
  ये क्या हो गया .....!
- ये आपने क्या कर दिया .....!!
- ये आपने कैसे कर दिया .....!!!''

गुरूजी मेरे इस असमनजस भरे हुए व्यवहार को देखकर, मुस्कुराते हुए बोले--

''.....मजा आया ?''

फिर बोले----

- राज्जे, ये ही सही मायने में, भगवान की आराधना है।
- भगवान इन्सान के अन्दर ही, बसता है।
- ये दर्द, उसके अन्दर बसने वाली आत्मा ही, महसूस करती है।
- जब उसके शरीर में से, आत्मा निकल जाती है, तब उस शरीर को, शव कहते है।
- इस आत्मा के बगैर, इस शरीर को कुछ भी महसूस, नहीं हो सकता।
- ये दर्द, इसी आत्मा को ही होता है और ये आत्मा, परमात्मा अर्थातः ईश्वर का ही अंश है।
- अगर तुमने किसी इन्सान की सेवा कर ली, तो समझो, तुमने भगवान की सेवा कर ली। क्योकि उसमें परमात्मा का ही अंश विराजमान है।

....गुरूजी ने मुझ जैसे नासमझ को इतना बड़ा ज्ञान
इतने सरल और समझ में
आने वाले शब्दों में दे दिया...

.....मैं तो निहाल हो गया।

*****

7. जब गुरूजी ने मुझे महा-मृत्युन्जय मंत्र का जाप करने से मना कर दिया।

एक बार मैं, अपने दारियागंज स्थित शोरुम में बैठा था, कि गुरूजी आये और उन्होंने मुझसे पूछा ---

''बेटा, तुम्हारा महा मृत्युन्जय मंत्र का जाप ...कैसा चल रहा है?''

मैंने जवाब दिया---

''गुरूजी, बहुत मजा आ रहा है। मैं जब भी इस मंत्र का जाप शुरु करता हूँ, अभी दो-तीन बार ही पढ़ता हूँ, कि एक अजीब सा नशा आ जाता है और ऐसा लगता है कि मैं अभी गिर पडूंगा।''

गुरूजी बोले----

''अब इस जाप को रोक दो''

मैंने जवाब दिया---

''नहीं गुरूजी, बड़ा मजा आ रहा है''

गुरूजी बोले---

''बेटा, मैं नहीं चाहता, कि तुम्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले, किसी छोटे स्टेशन पर ही उतरने दूं। तुम्हारी यात्रा अभी बाकी है और मैं यह चाहता हूँ, पहले एक बार तुम, अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लो, उसके पश्चात्, इन छोटे-छोटे स्टेशनों पर, बेशक मजे लेते रहना''

फिर उन्होंने मुझे आदेश दिया-----

"......कल सुबह 11 बजे से पहले मेरे पास, गुड़गांव पहुँचो।"

सुबह जब मैं गुड़गांव पहुँचा, तो गुरूजी के पास स्थान पर, सिर्फ अकेला मैं ही था। उन्होंने, एक गिलास में ठण्डा जल लिया और उसका एक घूंट भरकर, बाकी जल मुझे पीने के लिए दे दिया। उसके साथ-साथ 'महाशक्ति--महा-गायत्री' के मंत्र की, दीक्षा भी दी। साथ ही, उसका जाप किस तरह से करना है, वह भी सिखाया तथा उन्होंने यह भी आदेश दिया, कि --

''....स्थान पर आने वाले हर एक व्यक्ति से, प्यार से बोलो।''

उन्होंने कहा----

''राज्जे, मैंने तुम्हें बहुत सी आध्यात्मिक शक्तियाँ दी है, तुम उसका प्रयोग करो और जो भी तुम्हारे पास अपनी समस्या ले कर आये, उसकी समस्या का समाधान करो। तुम सबका भला करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।''

''तुम्हारे पास, कोई किसी भी समस्या को लेकर, क्यों न आये,
तुम सिर्फ हाँ कर देना और मुझे पुकार लेना,
मैं वह काम कर दूंगा।''

.....और तब से ऐसा,
लगातार हो रहा है।

*****

8. जब गुरुजी ने मुझे, गुड़गांव स्थान पर आध्यात्मिक सेवा करने का आदेश दिया।

मैंने गुड़गांव गुरुजी के चरणों में लगातार जाना शुरु कर दिया था। गुरुजी के पास रोजाना, हर तरह के लोग आते थे। उनमें हर उम्र के स्त्री, पुरुष व बच्चे होते, जो अपनी-अपनी समस्यायें चाहे वह घरेलू, शारीरिक, मानसिक हों या फिर सामाजिक, लाकर गुरुजी के सामने रखते थे।

मैं उन लोगों को, बड़ी उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से देखता, जो गुरुजी को धन्यवाद देते हुए कहते-------

''गुरुजी, आपने मेरा काम कर दिया''

कुछ कह रहे होते--

- ''गुरुजी, आपने मेरी बीमारी दूर कर दी'' या
- ''गुरुजी, आपने मुझे ठीक कर दिया'' या
- ''गुरुजी, आपने मेरा बेटा ठीक कर दिया'' या
- ''गुरुजी, आपके आशीर्वाद से, मुझे माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।'' या फिर
- ''गुरुजी, आपके आशीर्वाद से मेरा कारोबार, बहुत अच्छी तरह से चल रहा है।''

.....मुझे यह देख-सुनकर, बड़ा मजा आता और मैं अपनी जूठे कप धोने या बरामदे में सफाई की सेवा करने में, व्यस्त हो जाता। जहां पर लोग, गुरुजी से मिलने का, इंतजार कर रहे होते या चाय का प्रसाद ले रहे होते।

एक दिन जब मैं, बरामदे में, झाड़ू लगा रहा था, कि अचानक गुरुजी, बाहर आये और मुझे आदेश दिया, कि आज से तुम, यहाँ झाड़ू नहीं लगाओगे और ना ही, चाय के जूठे कप धोओगे।

उन्होंने कहा--

''मैं बाहर जा रहा हूँ और आज से, तुम अन्दर बैठकर, जहां आर. पी. शर्मा और एस. के. जैन बैठे हैं उनके साथ बैठकर, जल, लौंग और इलायची बनाओगे और लोगों को आशीर्वाद दोगे। तुम वैसा ही करोगे जैसा कि वे करते हैं।''

उन्होंने आगे आदेश दिया----

''तुम जो लोग स्थान पर आते हैं उनकी, सेवा करो और उन्हें रोग मुक्त करो''

मैं सोचने लगा, कि कहाँ मैं,
एक छोटा सा, उनका तुच्छ सेवक,
और कहाँ,
गुरुजी ने मुझे, इस लायक बना दिया।

गुरुजी के जाने के बाद, श्री आर. पी. शर्मा जी ने, मुझे अपने पास बुलाकर, स्थान पर बिठाया। उस समय मैं, बहुत धबराया हुआ था, मैंने उनसे पूछा---

मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ,जैसा कि आप कर रहे हैं...!!
आपकी बगल में, मैं कैसे बैठ सकता हूँ?

आर. पी. शर्मा जी ने कहा---

''.....तुम्हें भी ऐसे ही सेवा करनी है,
जैसे मैं और जैन साहब करते हैं।''

मैंने कहा---

''आप ऐसा कर सकते हैं,
क्योंकि गुरुजी ने आपको आध्यात्मिक शक्तियाँ दी हैं''

वे बोले---
''गुरुजी ने आपको भी, 'महागायत्री मंत्र', 'महामृत्युन्जय मंत्र', रक्षा-मंत्र' और 'शक्ति-मंत्र' आदि दिये हैं। इसलिए अब तुम भी, लोगों की, किसी प्रकार की भी बीमारी, दूर कर सकते हो।'' .....लेकिन मैं उनकी बातों से सहमत नहीं हुआ।

शर्मा जी ने आगे मुझसे कहा---
''यह गुरुजी का आदेश है और तुम उसका पालन करो और जो लोग,
तुम्हारे सामने आकर बैठें, उसके सिर पर अपना हाथ रखकर,
उन्हें आशीर्वाद दो।''

मैंने कहा---

''.....ठीक है शर्मा जी। लेकिन मैं गुरुजी के आदेश का
पालन करने के लिए, केवल दो मिनट ही बैठूंगा।''

.....और इस तरह से मैंने पहली बार
गुड़गांव स्थान पर आध्यात्मिक सेवा शुरु की।

मैंने एस. के. जैन साहब से भी पूछा---

''...कैसे लोगों के माथे पर अपना हाथ रखकर,
उन्हें ठीक करते हैं और
..कैसे लौंग, इलायची व जल बनाकर देते है...?''

जैन साहब बोले----

''यह सब कार्य तो गुरुजी करते हैं, फिर चाहे वे यहाँ हों या कहीं ओर।
बस तुम सिर्फ वैसा ही किये जाओ,
.....जैसा गुरुजी ने कहा है।''

और तबसे मैंने स्थान पर आध्यात्मिक सेवा शुरु कर दी और लोग ठीक होने लगे।

....और उनकी असीम कृपा से

आज भी लोग ठीक हो रहे है,जबकि हम,
गुरुजी को अपनी इन आँखों से,
नहीं देख सकते।

*****

9. जब हिमाचल प्रदेश की पहाडियों से, वापिस आते हुए गुरुजी ने अपनी, ऑफिस की जीप को, न्यूट्रल गियर में रखा।

जब गुरुजी अपने ऑफिशियल टूअर पर जाते, तो वहाँ अपने शिष्यों में से किसी शिष्य, जैसे सीताराम जी, आर. पी. शर्मा जी, एफ. सी. शर्मा जी, सनेत के सुरेश जी तथा मैं और या फिर कुछ और शिष्यों में से, किसी को भी ले जाते, ताकि वह जब गुरुजी अपनी ऑफिस के काम पर जाऐं, तो जो उनकी गैर-मौजूदगी में, वहाँ सेवा कार्य कर सकें।

एक बार मुझे, गुरुजी ने कहा----

"तुम मेरी जीप में बैठो। पहाड़ से नीचे चंड़ीगढ़ तक, जीप मैं चलाऊंगा।"

मैंने देखा, कि गुरुजी जीप, न्यूट्रल गियर में चला रहे हैं। मैं घबरा गया और डरते-डरते गुरुजी से बोला कि----

"....गुरुजी, पहाड से नीचे उतरते समय तो, गाड़ी को गियर में रखते हैं।"

तो गुरुजी बोले--

''बेटा, मैं ये चाहता हूँ कि इससे ईंधन की बचत हो और मेरे ड्राईवर की कुछ अतिरिक्त आमदनी हो जाये।''

मैं बोला--

''.....परन्तु गुरुजी, यह तो बहुत खतरनाक है, इससे तो एक्सीडेन्ट भी हो सकता है।''

वे अपना चेहरा मेरी तरफ धुमाकर, बडे सरल लहजे में बोले---

''बेटा, एक्सीडेन्ट का तो पता ही होता है कि होना है या नहीं''

.....मैं एक बार फिर ठगा सा रह गया तथा सोचने लगा, कि गुरुजी को सब पता होता है, कि आगे क्या होने वाला है और------

मैंने अपने आप से सवाल किया ''.....कौन हैं ये?''

इस धरती पर, एक आम इंसान को तो, यह नहीं पता होता, कि आगे क्या होने वाला है। लेकिन गुरूजी तो, सब कुछ जानते हैं। स्पष्ट है, कि जब इन्हें आने वाले कल की पूर्ण जानकारी है। इन्हें तो किसी प्रकार की चिन्ता या डर का प्रश्न ही नहीं उठता.....!! केवल भगवान ही, यह सब जान सकता है, कि आगे क्या होगा....?

.....क्या ये स्वयं भगवान तो नहीं...?, या फिर, उस निरंकार, अदृश्य भगवान के साथ, इनके कोई तार तो नहीं जुड़े है.....?

.....माफ कीजिए, इससे आगे,
....मैं कुछ भी नहीं कह पाऊँगा।।

*****

10. जब मैंने ट्रेन में आरक्षित टिकट के होते बिना, गुरुजी के साथ, मुम्बई यात्रा की।

हमेशा की तरह, मैं अपने दरियागंज स्थित शोरुम में बैठा था, कि फोन की घन्टी बजी, मैंने फोन उठाया, उधर से गुरुजी की आवाज आई----

''मैं ईस्ट पटेल नगर, अन्जू के घर हूँ।''

अन्जू, गुरुजी की बहुत चहेती, बच्ची थी और हम सब शिष्य भी, उसे बहुत प्यार करते थे। गुरुजी ने हम सब को, किसी के घर, हमारे ही फायदे के लिए, कुछ भी खाने को, मना कर रखा था। पहली बार मैंने देखा कि गुरुजी ने हम सब को, वहाँ पकौड़े खाने की इजाजत दी, जो अन्जू लेकर आई थी।

वाकई..... !!

हमारे लिए, यह एक असाधारण घटना थी। क्योंकि सालों से हमने, सिर्फ ये ही देखा था, कि गुरुजी, कहीं किसी के भी घर जाते, वहाँ वे आशीर्वादों की बारिश कर देते, लेकिन एक चाय के अलावा और किसी चीज को खाने की इजाजत, नहीं देते थे।

मैंने गुरुजी से पूछा---

''गुरुजी, क्या आप मुम्बई जा रहे हैं?''
मुझे श्री एफ. सी. शर्मा जी से पता चला है।

वे बोले---

''हाँ बेटा।
....क्या तुम भी चलोगे?''

मेरे दिमाग में एकदम ये विचार आया, कि ये मेरे लिए यह एक सुनहरी मौका है, कि मुझे गुरुजी के साथ रात-दिन रुकना और ट्रेन में भी रहने का अवसर मिलेगा। ऐसा लग रहा था, जैसे मेरी चाँद पर उतरने की महत्वाकांशा, पूरी हो गई हो।

मैंने, अपने आप को सम्भाला और गुरुजी से पूछा--

''.....क्या गुरुजी आपने मेरे लिए टिकट ले ली है?''

गुरुजी ने बड़ी सहज़ता से उत्तर दिया---

''....हम रेलवे स्टेशन से ले लेगें।''

तभी मुझे याद आया, कि रेलवे के वातानुकूलित क्लास के टिकट, कनॉट प्लेस के प्लाजा सिनेमा के पास, पहले से ही, एडवांस में बिक जाते हैं, रेलवे स्टेशन पर तो, मिलते ही नहीं....!!

मैंने गुरुजी को बताया तो वे बोले---

''....मिल जायेंगे पुत।''

जैसा कि, शुरु से मैं देखता आ रहा था, कि उनके सामने, उनकी किसी भी बात को काटने की हिम्मत, किसी की भी नहीं होती थी, अतः मैं भी चुप हो गया।

मैं कार चला रहा था, बांयी तरफ की सीट पर गुरूजी बैठे थे और पिछली सीट पर श्री एफ. सी. शर्मा जी। मैं, लगातार यही सोचता चला जा रहा था, कि जब रेलवे स्टेशन पर कोई टिकट काउन्टर ही नहीं है, तो टिकट कहां से मिल जाऐगी?

खैर.....,

हम रेलवे स्टेशन पहुँचे, और गुरूजी ने अपना ब्रीफकेस उठाया तथा प्लेटफार्म की ओर निकल गये। मैंने भी, कार को पार्क किया और कार की चाबियाँ व अपना ब्रीफकेस श्री एफ. सी. शर्मा जी को दे दिया और कहा, कि मेरे घर पहुँचा दें।
इस पर उन्होंने कहा---

''....मैं गाड़ी चलाना नहीं जानता।''

मेरे पास कुछ सोचने का समय न था, मैंने उनसे कहा---

''....यह मेरी जिम्मेदारी नहीं हैं।''

और मैं तेजी से, गुरूजी के पीछे चल पड़ा।

गुरूजी वेटिंग हॉल को लांघते हुए, सीधा ट्रेन तक पहुँच गये। वे पलट कर मेरी तरफ मुड़े, और बोले---

''अपना टिकट ले कर आओ,
और ट्रेन में बैठो''
और स्वयं ट्रेन में चढ़ गये।

मैं सोचने लगा, कि स्टेशन पर जब कोई टिकट का काउन्टर ही नहीं है, तो टिकट कहाँ से लाऊँ...? मैं, भौंचक्का सा होकर, चुपचाप प्लेटफार्म पर, खड़ा का खड़ा ही रह गया।

जब गुरूजी ट्रेन के अन्दर चले गये, तभी मेरे पीछे से अचानक, किसी ने मेरे कन्धे को छुआ। मैंने पीछे मुड़कर देखा, कि एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति, जिसके छोटे-छोटे बाल हैं और उसने भूरे रंग का कोट पहना हुआ है, मुझसे पूछ रहा है ''क्या तुम्हें मुम्बई जाना है!!''

मैंने तुरन्त हाँ कहा और उसने मुझसे पैसे माँगे। मैंने उसे 200 रुपये दिये और उसने, अपनी जेब से, एक खाली टिकट निकाला और मेरा नाम पूछकर, उस पर लिखा और सीट नम्बर 65 भी लिखकर, मुझे दे दिया।

तब तक, ट्रेन चल पड़ी थी और मैं दौड़कर, उसमें चढ़ गया। ट्रेन में चढ़ने के तुरन्त बाद, मैंने प्लेटफार्म की ओर मुड़कर देखा, मुझे वह व्यक्ति वहाँ, कहीं नजर नहीं आया। मुझे उससे टिकट लेने तथा ट्रेन में चढ़ने और वापिस प्लेटफार्म पर देखने में, मुश्किल से 10 सैकण्ड़ का समय भी नहीं लगा होगा और ये बिलकुल भी सम्भव नही, कि कोई इतनी सी देर में ही, वहाँ से गायब हो सके। लेकिन मैं उसे दुबारा नहीं देख सका।

मैं गुरुजी के पास पहुंचा और उनसे पूछा---

''गुरुजी, वह व्यक्ति कौन था?''

गुरुजी मेरी तरफ देखकर बोले---

''.....तुमने उससे टिकट खरीदा है,
मैं क्या बताऊं कि वह व्यक्ति कौन था?''

मैंने देखा, कि गुरुजी मेरी तरफ देखकर मुस्कुरा रहे थे।

''पर गुरुजी, मैंने ऐसे कभी टिकट नहीं खरीदा। ऐसा लग रहा था मानों जैसे वह व्यक्ति केवल मुझे टिकट देने ही आया था''

मैं फिर जिज्ञासा वश बोला---

''प्लीज.....गुरुजी, बताओ ना कौन था वह व्यक्ति? गुरुजी मेरी ये जिज्ञासा शाँत करो, प्लीज बताओ ना..... ये आपने कैसे किया?''

मैं पीछे मुड़कर सोचता हूँ, तो निम्न विचार आते हैं :-

- *गुरुजी, अपने साथ मुझे, मुम्बई चलने के लिए कहते हैं।*
- *मैं उनसे, अतिरिक्त टिकट के बारे में, पूछता हूँ।*
- *गुरुजी स्टेशन से, टिकट लेने को कहते हैं।*
- *एक अपरिचित व्यक्ति, आता है*
- *वह अपने आप, मुझे टिकट देता है।*
- *वह क्षणों में ही प्लेटफार्म से, गायब हो जाता है।*

सोचने वाली बात सिर्फ यह है:

....बस गुरुजी जानते थे, कि
मुझे उनके साथ जाना है, और
उन्होंने ही इसकी व्यवस्था भी कर दी।

*****

11. जब केदारनाथ जी की यात्रा से, वापिस आते हुए फीएट कार के, ब्रेक फेल हो गये।

केदारनाथ यात्रा गुरूजी हमें समय-समय पर, अक़्सर तीर्थ यात्राओं पर, लेकर जाते रहते थे। कई बार हमें, अपने परिवार को भी, साथ ले जाने की आज्ञा मिल जाती थी। लेकिन इस बार, वे हमें बद्रीनाथ, केदारनाथ और ऋषिकेश आदि की, यात्रा पर ले गये।

जब हम सब करीब 25 लोग, केदारनाथजी की लगभग नौ या दस किलोमीटर की, लम्बी पैदल चढ़ाई कर चुके तो बहुत थक गये और अभी करीब तीन या चार किलोमीटर की चढ़ाई शेष बची थी, तथा ये चढ़ाई भी बहुत ही कठिन थी। हम ऐसी चढ़ाई के लिए, बिलकुल तैयार नहीं थे। हम अपने आप को असहज सा, महसूस कर रहे थे। इतनी ऊंचाई पर, हमें आक्सीजन की कमी की वजह से, सांस लेने में भी दिक्कत महसूस हो रही थी। सिर में भी, बहुत तेज दर्द हो रहा था। गुरूजी हमारे पीछे-पीछे आ रहे थे। लेकिन वे, बिलकुल भी थके हुए, नहीं लग रहे थे। वे एक दम तरोताजा प्रतीत हो रहे थे।

गुरूजी ने, एक पैकट केसर का निकाला, उसे गर्म पानी में मिलाया और हम सबको आधा-आधा गिलास पीने को दिया। जैसे ही हमने वह जल पीया, तभी हमें कुछ घबराहट महसूस हुई और हमें उल्टी आ गई। जितना जल हमने पीया था, उससे कहीं अधिक मात्रा में, पानी बाहर आ गया।

मैं हैरान हो गया....!!
मुझे एकदम आराम आ गया।

मैंने गुरूजी से पूछा---

''गुरूजी.....,
आप तो अधिकतर हमें,
निम्बू चूसने के लिए देते हैं या फिर
पानी में डालकर पिला देते हैं।''

गुरूजी बोले---

''पुत, निम्बू समुद्र तल से सिर्फ 9000 फीट की ऊंचाई तक ही, काम करता है, 9000 फीट से ऊपर की ऊंचाई पर, केवल केसर ही काम करता है।''

ये पहले हममें से, कोई भी नहीं जानता था। हम पूरी रात, उम्मीद से भी कहीं ज्यादा, आराम से सोये।

जब हम वहाँ से वापिस आ रहे थे, तब गुरूजी अपनी 'फिएट' कार चला रहे थे। मैं उनके साथ वाली, बांयी सीट पर था और मेरे दो गुरू भाई, पिछली सीट पर बैठे थे।

गुरुजी ने मेरी तरफ देखा और बड़ी सहज़ता से बोले---

''उस्ताद...., ब्रेक फेल हो गये हैं।''

मै भी चौकन्ना हो गया और बोला---

''.....गुरुजी, गाड़ी गियर में डाल दो''

वे बोले----

''....पुत, गियर भी 'फ्री' हो गये हैं।''

मै बोला----

''.....गुरुजी, अपनी दाहिनी तरफ गाड़ी को,
पहाड़ की तरफ टकराओ''

मैंने सोचा, इससे कार तो टूटेगी, लेकिन हमारे पास इसे रोकने का, और कोई दूसरा चारा भी नहीं हैं। क्योंकि रोड की दूसरी तरफ, 40-50 फुट गहरी खाई है, जिसमें एक नदी बह रही है।

इसके आगे, मैं और कुछ न कह सका और हम सब, अपनी साँस रोक कर बैठ गये। गुरुजी भी, किसी बात का, जवाब नहीं दे रहे थे। हमारा दिमाग भी शून्य हो गया था।

अचानक कार की स्पीड़, कम हो गई। जबकि जिस ढ़लान पर कार चल रही थी, वहाँ पर बिना ब्रेक के इस्तेमाल के, स्पीड़ कम होने का, कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। लेकिन फिर भी कार बड़े आराम से और सुरक्षित रुप से, रुक गई। जैसे किसी ने, पीछे से पकड़ कर, खींच लिया हो।

गुरुजी बिलकुल शाँत बैठे रहे। उनके चेहरे पर, इस घटना की, कोई भी शिकन तक नहीं थी। अब मैं भी भय मुक्त था।

हमने गाड़ी से नीचे उतर कर देखा तो आश्चर्यचकित रह गये....!! कार की बांई तरफ का, पिछला पहिया, एक्सल समेत बाहर आ गया था, परन्तु वह कार से अलग नहीं हुआ था। लेकिन उसने कार को, नदी की तरफ मुड़ने से, रोक दिया था।

...मैं सीताराम जी को और वे मुझे, बस देखे जा रहे थे।
हम दोनों, कुछ बोल भी नहीं पा रहे थे और
गुरुजी की तरफ, श्रद्धा भाव से, देख रहे थे।

*****

12. सीताराम जी की, मुम्बई हवाई यात्रा।

सीताराम जी, गुरुजी के शुरु के पहले शिष्यों में से, एक थे। जो अमेरिकन एक्सप्रेस बैंक में एक उच्च पद पर कार्यरत थे। उनका अपना, एक अलग ऑफिस था और गुरुजी अक़्सर शाम को, ऑफिस का समय समाप्त होने के बाद, उनसे मिलने जाया करते थे।

एक दिन शाम को, गुरुजी उनके ऑफिस पहुँचे, तो सीताराम जी ने, गुरुजी से ऑफिस की किसी आवश्यक मीटिंग में सम्मलित होने के लिए, मुम्बई जाने की इजाज़त माँगी। गुरुजी ने इजाज़त देते हुए कहा---

''ठीक है, हम इक्ट्ठे चलते हैं,
मैं तुम्हें रास्ते में एअरपोर्ट पर छोड़ दूंगा और मैं,
गुड़गांव चला जाऊँगा।''

जब गुरुजी एअरपोर्ट पहुंचे तो बोले---

''नहीं सीतू, गुरु कभी अपने शिष्य को नहीं छोड़ सकता, जबकि शिष्य छोड़ सकता है। लिहाजा तुम पहले मेरे साथ गुड़गांव चलो, वहाँ मुझे छोड़ कर, वापिस एअरपोर्ट आ जाना।''

गुडगांव पहुँचकर, गुरुजी ने सीताराम जी को चाय का प्रसाद दिया और कहा--

''...प्रसाद लेकर ही, एअरपोर्ट जाना।''

फ्लाईट का समय, तेजी से निकला जा रहा था। चाय का प्रसाद लेने के बाद, वे गुरुजी से बोले---

''गुरुजी कृप्या आप किसी को आदेश दें,
कि वह मुझे एअरपोर्ट छोड़ आये।''

गुरुजी बोले--

''.....बाहर देख कौन है?''

सीताराम जी बाहर आये और देखा, कि एक व्यक्ति स्कूटर पर आया था और गुरुजी के दर्शन करना चाहता था। वे उसे लेकर, गुरुजी के पास आये और गुरुजी से प्रार्थना की, कि गुरुजी उस व्यक्ति को, उन्हें एअरपोर्ट तक छोड़कर आने का, आदेश दें। जब वह व्यक्ति कमरे से बाहर गया, तो सीताराम जी ने गुरुजी से कहा---

''गुरुजी..., जब तक मैं एअरपोर्ट पहुँचूगां,
फ्लाईट तो उड़ चुकी होगी।
क्योंकि मैं बहुत लेट हो चुका हूँ।''

गुरुजी बोले---

''.....मेरा शिष्य जाने वाला है
तो फ़्लाईट उड़ कैसे सकती है, उसके बिना।''

उस व्यक्ति ने सीता राम जी को, एअरपोर्ट छोड़ा। वे बोर्डिंग पास लेने के लिये, जब काउन्टर पर पहुँचे, तो उन्हें पता चला, कि हवाई जहाज उड़ा नहीं था।

कारण पूछने पर पता चला, कि कैप्टन पूर्णरुप से सन्तुष्ट नहीं था और इंजन की जाँच चल रही थी। उनसे कहा गया, कि इन्जीनियर अपना काम कर रहे हैं इसलिए आप अपना बोर्डिंग पास लीजिए और विमान में बैठिए।

....तो
वह विमान कैसे उड़ सकता था...?
जब गुरूजी अपने शिष्य, सीतू को, चाय का प्रसाद दे रहे थे।

*****

13. जब मेरा अपनी फैक्ट्री में, एक्सीडेन्ट हुआ ।

एक दिन सुबह-सुबह की बात है, मैं अपनी फैक्ट्री में, एक रोलिंग मिल के, फ्लाईव्हील **(Fly Wheel)** को, शॉफ्ट पर लगा रहा था। इस पहिये **(Wheel)** का वज़न, टनों में था। वह तीन टाँगों वाले स्टैन्ड पर, टँगे चैन ब्लाक पर, करीब 12 फुट की ऊंचाई पर, लटकाया गया था। इस पहिये को, जमीन पर खड़े होकर ही, संतुलित किया जा सकता था।

मैं स्वयं इस कार्य का, संचालन कर रहा था और चेन ब्लॉक के, बिलकुल नजदीक ही खड़ा था। अचानक कुछ हुआ और स्टैन्ड ने अपना सन्तुलन, खो दिया। एक सैंकिण्ड से भी कम समय में, पूरा का पूरा ढांचा, मेरे ऊपर गिर गया और मैं घायल होकर, बेहोश हो गया।

करीब 12 से 15 कर्मचारी, जो मेरे साथ लगे हुए थे, सबने मिलकर, वह ढ़ांचा मुझपर से हटाया। जब मुझे होश आया, तो हमारी फैक्ट्री के प्रोड़क्शन मैंनेजर, जो कि एक रिटायर्ड फौजी थे, मुझे अस्पताल ले जाने की बात कर रहे थे। इस पर मैं बोला---

''...पहले मुझे घर जाकर कपड़े बदलने हैं
फिर मुझे अस्पताल ले जाना।''

मेरे हाथ से, बहुत खून बह रहा था और प्राथमिक चिकित्सा के तौर पर, वे डिटॉल और रुई का, प्रयोग कर रहे थे।

घर पहुँच कर, कपड़े बदलने के बाद, मैंने पता किया तो पाया, कि गुरुजी अपने पूसा इन्सटीटयूट आफिस (जो ईस्ट पटेल नगर के पास है) में हैं।

जब मैं गुरुजी से मिलने, उनके ऑफिस पहुँचा, तो देखा कि बगीचे में, करीब एक दर्जन से भी ज्यादा लोग, गुरुजी से मिलने के लिए, इंतजार कर रहे थे। मैंने गुरुजी को, बिल्डिंग के बरामदे में, खड़े हुए देखा और मैंने अंदाज़ा लगाया, कि शायद, गुरुजी ने भी मुझे, देख लिया होगा।

कुछ देर इंतजार करने के बाद, मैंने किसी के हाथ, गुरुजी के पास, अपने एक्सीडेन्ट की खबर भिजवाई। उसके वापिस आने पर, मैंने उससे पूछा, कि गुरुजी ने क्या कहा? वह बड़ा हैरान होकर बोला---

''गुरुजी कहते हैं 'हाँ', हाँ मुझे पता है।
मरा तो नही ना ?''

करीब आधे घण्टे बाद, गुरुजी मेरे पास आए, मुझे आशीर्वाद दिया और आदेश दिया---

**"....वैलिन्गडन अस्पताल जाओ और
चोट पर टाँकें लगवाओ।"**

दो कारों में लोगों को भरकर, मेरे साथ वैलिन्गडन अस्पताल भेजा। मैं अपना दाहिना हाथ और दाहिनी टाँग, उठा नहीं पा रहा था और मुझे बहुत कमजोरी भी महसूस हो रही थी।

टाँकें लगवाने के बाद, लोग मुझे गुरूजी के पास, गोल मार्किट के एक मकान में, जहां गुरूजी की बहन रहती थी, ले गये। गुरूजी ने मुझे, एक बिस्तर पर बिठाया और एक गिलास में, बर्फ जैसा ठण्डा जल, जूठा करके पिलाया। वह बर्फ जैसा ठण्ड़ा जल पीकर, मुझे एक अजीब सा नशा हुआ और मुझे, बहुत तेज़ बुखार महसूस होने लगा। उस समय गुरूजी, आराम से टी.वी. पर, क्रिकेट मैच देख रहे थे।

कुछ घण्टों बाद गुरूजी वहाँ से उठे और मुझसे बोले--

''...चल राज्जे, गुड़गांव चलते हैं।''

उस समय मैं, बहुत कमजोरी महसूस कर रहा था। मैं जानता था, कि गुरूजी को पता है, कि मुझे आराम की सख़्त ज़रूरत है। परन्तु गुरूजी, बिलकुल सामान्य और चिन्ता-मुक्त लग रहे थे।

जैसे ही हम, गुड़गांव जाने के लिए निकले, तो यह सुनकर मुझे अचानक, एक और झटका लगा, जब गुरूजी ने मुझे आदेश दिया कि गाड़ी तुम चलाआगे....!!
तब मैंने उनसे प्रार्थना की----

''....गुरूजी, कृपा करके गाडी आप चलाईए।''

वे दुबारा बोले----

''नहीं तुम चलाओगे और
मैं तुम्हारी साथ वाली सीट पर बैठूंगा।''

मेरी हालत यह थी, कि मेरा दाँया हाथ और पैर उठ नहीं रहे थे और मैं अपने बाँये हाथ से, अम्बैसेडर कार के, गियर बदल रहा था और स्टेरिंग को भी, संभाल रहा था और दाँयी टाँग को उठाकर, एक्सीलेटर व ब्रेक पेडल पर रख रहा था।

जब हम गुड़गांव पहुँचे, तब तक रात हो चुकी थी। गुरूजी स्थान पर आये लोगों से, मिलने लगे और मैं उनके पास बैठा रहा। रात के करीब, 12 बजे का समय रहा होगा,

गुरूजी बोले----

''अच्छा बेटा, अब तुम घर जाओ।''

मैंने गुरूजी से प्रार्थना की कि किसी को आदेश दीजिए ताकि वह मुझे दिल्ली छोड़ आये। लेकिन उन्होंने मुझे आदेश दिया----

''नहीं बेटा,
तुम खुद़ गाड़ी चलाकर जाओगे''

मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता, कि मैंने कैसे अकेले गाड़ी चलाई, जबकि मेरा दाँया हिस्सा काम नहीं कर रहा था और बहुत अधिक कमजोरी महसूस कर रहा था और कुछ-कुछ बेहाशी की हालत में भी था। परन्तु...

''.....ये गुरुजी ही हैं''

जिन्होंने आधी रात को, मुझे स्वयं गाड़ी चलाकर, सुरक्षित पंजाबी बाग पहुँचा दिया।

दो दिन के बाद, जब मैं गुरुजी के दर्शन करने के लिए, उनके कर्ज़न रोड स्थित, ऑफिस पहुँचा और उनके ऑफिस के कमरे के बाहर, बरामदे में खड़ा था, तो वहाँ मुझे, जीवन कत्याल मिला।

उसने मुझसे पूछा---

''जिस समय तुम्हारा एक्सीडेन्ट हुआ,
उस समय, क्या लगभग, 11 या 12 बजे होंगे...?''

मैं बोला---- ''हाँ''

फिर उसने मुझे बताया----

''उस दिन, उसी समय, मैं गुरुजी के साथ, इसी बरामदे में खड़ा था। कि अचानक आकाश की ओर देखकर उन्होंने, तुम्हारा नाम पुकारा और तब तक लगातार तुम्हें, गालियाँ देते रहे, जब तक वे सन्तुष्ट नहीं हो गये। उस समय मैं, गुरुजी के इस व्यवहार को, समझ नहीं पाया। क्योंकि मैं ये अच्छी तरह से जानता हूँ, कि वे तुमसे बहुत अधिक प्यार करते हैं और आज इतने गुस्से में, तुम्हें गालियाँ क्यों दे रहे हैं? मैं उनका वह रुप देखकर, इतना डर गया था, कि मुझमें, उनसे इस बारे में पूछने की हिम्मत ही नहीं थी।'' ऐसा मुझे 'जीवन कत्याल' ने बताया।

अब सवाल ये उठता है कि--------

''.....गुरुजी अपने शिष्य को गालियाँ
तो दे रहे हैं एक जगह...!
....और ठीक उसी समय, उनके उसी शिष्य का,
एक्सीडेन्ट होता है दूसरी जगह.....!!''

मैं और कुछ नहीं जानता, सिर्फ इतना जानता हूँ, कि गुरुजी देख रहे थे, कि उनके शिष्य के साथ, फैक्ट्री में क्या हादसा होंने वाला है।----

गुरुजी ने सिर्फ गालियाँ दे कर ही, अपने शिष्य पर आने वाले भंयकर संकट को, टाल दिया। मैं तो इतना जानता हूँ, कि यदि आज मैं जिन्दा हूँ, तो सिर्फ गुरुजी की, उन्हीं गालियों की वजह से।

और भी बहुत सी बातें हैं,
जिनका हम वर्णन आगे करेंगें।
गुरुजी से पार्थना है कि वे हमारा,
ज्ञानवर्धन करें और हमें प्रकाश दिखाऐं।

*****

14. रेनुकाजी---

गुरूजी ने अपने शिष्यों को सेवा के लिए बुलाया।

एक बार गुरूजी, अपने सहयोगियों के साथ, भूमि सर्वेक्षण के लिए, रेनुका जी गये। वहाँ उन्होंने, एक पुराना सा घर, जिसमें दो कमरे थे, किराये पर लिया। कमरों के बाहर, बहुत खुला मैदान था। जिसमें बहुत से, फल के पेड़ लगे हुए थे, लेकिन वे पेड़ स्वस्थ नहीं थे, और न ही उन पेड़ों पर, कोई फल ही लगे थे।

किसी ने गुरूजी को बताया, कि वहाँ पर पानी ही नहीं है। गुरूजी अपने दो सहयोगियों के साथ, ऊपर पहाड़ी पर चले गये। उन्हें कुछ ऊँचाई पर, पानी मिल भी गया। गुरूजी अपने साथ कुछ औज़ार **(Instruments)** *लाये थे, जिनसे उन्होंने वहाँ, डीप लाईन डाल कर, पानी को नीचे ले जाने के लिए, एक छोटा सा रास्ता बनाया।*

ऊपर तो वह रास्ता, छोटा सा लगता था, परन्तु जब गुरूजी नीचे, उस घर मे आये, तो वहाँ पानी अपनी पूरी तेज़ गति से, आ रहा था। वह पीने, खाना बनाने तथा नहाने धोने के लिए प्र्याप्त था। पानी, लगातार आ रहा था और उससे, पेड़ पौधों को भी, सींचा जा सकता था। जल्द ही वे पेड़, स्वस्थ होना शुरु हो गये।

इसके एक हफ्ते बाद, हमें गुरूजी की तरफ से, यह संदेश मिला, कि हमें वहाँ पर, सेवा के लिए बुलाया है।

सीताराम जी, एफ़. सी. शर्माजी, आर. पी. शर्मा जी और मैं, रात को ही, रेनुकाजी के लिए चल पड़े। सुबह-सुबह जब हम, रेनुका जी पहुंचे, तो गुरूजी हमारा इन्तज़ार कर रहे थे। इस अलग-थलग स्थान पर, गुरूजी के दर्शन, हमारे लिए एक वरदान से, कम नहीं थे। इस स्थान को 'ददऊ' के नाम से जाना जाता है और यह रेनुका जी के, बिलकुल करीब है।

हमने वहाँ गुरूजी के पास, परम सुः ख और आन्नद के साथ, अपना पूरा दिन व रात बिताई। अगले दिन सुबह ही, गुरूजी ने हमें आदेश दिया---

"...अब तुम लोग वापिस जाओ
और अगले रविवार दुबारा आना।"

अगले रविवार

हम लोग दुबारा रेनुकाजी पहुँचे और दुबारा आशीर्वाद प्राप्त किया। हम लोगों को खाना खिलाने के बाद गुरूजी बोले----

''...यहाँ कोई नहीं जानता, मैं कौन हूँ
तुम लोगों को यहाँ पर,
सेवा करनी है''

हममें से एक ने पूछा---

''गुरूजी, यहाँ हम किसकी सेवा करें?
यहाँ तो लोग ही नहीं हैं।

गुरूजी बोले---

''....इन्तजार करो, लोग भी आ जाऐंगे।''

जैसे ही सूर्योदय हुआ, उसके तुरन्त बाद, कुछ लोग आये और उन्होंने, अपने-अपने दुः ख और दर्द के बारे में, बताया। जैसा कि हमें गुरूजी ने बताया था, हममें से एक ने, उनके दर्द से पीड़ित हिस्से को छुआ और दर्द गायब हो गया। इसी तरह, और लोग भी आये और वे भी अपनी परेशानियो तथा बीमारियों से मुक्त होते गये।

इसी तरह दोपहर तक करीब, 15 से 20 लोग आये और स्वस्थ होकर लौट गये। गुरूजी हमें, आदेश दे रहे थे और हम, वैसा ही किये जा रहे थे और तुरन्त, उसका नतीजा भी सामने आता जा रहा था।

परम सुः ख और आनन्द के साथ, अपना पूरा दिन व रात बिताने के बाद, गुरूजी ने हमें अगले रविवार दुबारा आने का आदेश देकर, हमें वापिस भेज दिया।

अगले रविवार

जब सुबह हम पहुँचे, तो देखकर चकित रह गये कि करीब 15 लोग लाईन लगा कर, हमारा इन्तजार कर रहे थे। नाश्ते के बाद, उसी तरह गुरूजी ने हमें आदेश दिया--

''जाओ सेवा करो''

और दूर बैठकर हमें देखते रहे।

लोग लाईन में आ रहे थे और उनमें बहुत से नये लोग भी थे। इसी तरह, यह सिलसिला चलता जा रहा था। अनगिनत लोग, आते चले गए और हम, उनकी पीड़ा दूर करते चले गये।

14.1. रेनुकाजी---

जब एक पति-पत्नी, अपनी जवान लड़की को,
अपनी पीठ पर बैठा कर लाये।

एक पति-पत्नी, अपनी जवान लड़की को, अपनी पीठ पर बैठा कर लाये। क्योंकि वह जन्म से ही, अपने पैरों पर भी, खड़ी नहीं हो सकती थी। केवल अपने हाथों और घुटनों की मदद से ही, चल पाती थी। उसे देखकर सीताराम जी ने गुरूजी से, अपने अनोखे अंदाज में उकसाते कहा-----

गुरूजी...,
.....मजा तो तब आयेगा जब आप,
इस लड़की को अपने पैरों पर चला दो....।।

गुरूजी ने सीताराम जी से कहा----

''तुम इस लड़की के पैरों को, अपने पैरों के अँगूठों से दबाकर रखो और आर. पी. शर्मा जी से लड़की को, बांहों से पकड़कर, उठाने का आदेश दिया''

आर. पी. शर्मा जी ने, उस के हाथ पकड़ कर, उसे ऊपर उठाया और सीधा खड़ा कर दिया। लड़की अपने जीवन में पहली बार, खड़ी हुई और चलने लगी। इस कार्य में, एक मिनट से भी कम समय लगा।

उस लड़की के माता पिता की हालत, देखने लायक थी। वे खुशी से चिल्ला रहे थे और उनकी आँखों से आँसू, बहे जा रहे थे। वे अपनी हिमाचली भाषा में कह रहे थे--

''...गुरूजी, आपका भला हो''

वे अपनी लड़की को देख ही जा रहे थे, जो अपनी जिन्दगी में, पहली बार चल रही थी। हम भी आश्चर्य चकित होकर खड़े थे तथा कभी एक दूसरे को और कभी गुरूजी के चेहरे की तरफ, देख रहे थे। गुरूजी मुस्कुराए और हमें आशीर्वाद दे दिया।

उसी दिन शाम को मैंने गुरूजी से कहा---

''गुरूजी, यहाँ पर जितने भी लोग आये,
उनमें से, एक जैसी अजीब सी गंध, आ रही थी।''

गुरूजी ने मुझे डाँटा और कहा---

''....बेटा वो तो अपने
भगवान के दर्शन के लिए आये हैं,
और उनके भगवान को, उनसे गंध आ रही है..?''
तुम्हें शर्म नहीं आती.....।

मुझे अपनी गलती का, एहसास हुआ और गुरूजी से क्षमा माँगते हुए कहा-----

''गुरूजी..... मुझे माफ कर दो''
मुझसे गलती हो गई है।

*****

15. रेनुकाजी--------
लोगों का सैलाब।

गुरुजी ने हमें बुलाया और आदेश दिया ---

''और शिष्यों को भी सेवा के लिए बता दो क्योंकि अगली बार यहाँ हजारों की तादाद में लोग आऐंगें। इसलिए आप लोग सुबह की बजाय एक दिन पहले शाम तक पहुँच जाओ।''

इस पर सीताराम जी बोले---

''हजारों लोग कहां से आ जायेंगे...?
हम पहाड़ी पर, दूर-दूर तक देखकर आये हैं,
एक झोपड़ी यहाँ है और दूसरी बहुत आधिक दूरी पर है,
हजारों लोग कहाँ से आयेंगे, गुरुजी...?''

गुरुजी ने कहा----

''.....बेटा, अब मेरी आवाज
पहाडों के पीछे तक चली गई है।''

हम बहुत से शिष्य दिन में ही, रेनुका जी के लिए चल दिये। लेकिन इस बार सीताराम जी, राजी शर्मा (जो गुरुजी के बहुत प्यारे शिष्यों में से, एक है और ग्रीन पार्क में रहते हैं) के साथ गये।

हम लोग, करीब दो किलोमीटर का टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता, जहां पर लोगों की, टेढ़ी-मेढ़ी ही लम्बी लाईनें लगी हुई थीं के बीच में से, उसको पार करते हुए, रेनुका जी पहुँच गये। हमने गुरुजी के दर्शन किये। उन्होंने हमें आदेश दिया---

....कि किसी से भी न कहना, कि
''मैं यहाँ हूँ।''

हम सब लोग कुर्सियों पर बैठ गये, उस समय रात के 9:45 बजे थे और हमने, सेवा शुरु कर दी।

लोग अपनी-अपनी समस्याऐं लेकर, आने लगे। कुछ लोग अपनी शारीरिक समस्या से पीड़ित थे, तो कोई मानसिक बीमारी से ग्रस्त, लेकिन अधिकतर लोग अपने पेट-दर्द से परेशान थे। वे अपने साथ जल के लिए, एक बोतल, एक कड़ा, एक-एक पैकेट लौंग और इलायची लेकर आये थे।

हम वहाँ ग्यारह शिष्य, बैठकर सेवा कर रहे थे और लोगों को आशीर्वाद दे रहे थे। हम उन्हें कड़ा पहना रहे थे और जल, लौंग व इलायची अभिमंत्रित कर, उन्हें दे रहे थे (जैसा कि गुरुजी ने हमें, आदेश दिया था) कुछ लोगों को, जहां उन्हें दर्द था, स्पर्श भी कर

रहे थे और किसी के माथे पर स्ट्रोकस **(Strokes)** भी लगा रहे थे, जिससे उन्हें तुरन्त, आराम भी मिल रहा था।

ताज्जुब है..... !!

हर व्यक्ति यही कह रहा था, कि वह ठीक हो गया है। यह सिलसिला सारी रात चलता रहा।

सेवा के लिए स्थान की व्यवस्था की जिम्मेदारी, एक शिव-भक्त, श्री चन्द्रमणि विशिष्ठ ने ली थी। बाद में गुरुजी ने उन्हीं को, रेनुकाजी स्थान पर सेवा करने की जिम्मेदारी सौंपीं। (वे अब, गुरुजी के चरणों में चले गये हैं।)

अगले दिन सुबह का, सूर्योदय हो चुका था। लेकिन लोगों की भीड़, वैसे की वैसी ही थी। उसमें थोड़ी भी कमी नहीं आई थी। पूरी रात बसों से, लोग आ और जा रहे थे। मैं सेवा वाले कमरे से, थोड़ा आराम करने के लिए, बाहर आया तो देखा, कि पूरी तरह से भरी हुई बसें, और उनकी छतों पर भी लोगों की भीड़, चली आ रही थी। यह सब देख कर मैं भी, आश्चर्य चकित था।

सभी शिष्यों के सामने, लोगों की लम्बी-लम्बी लाईनें, लगी हुई थी। दोपहर के समय, मेरी सेवा करने की गति, बहुत धीमी हो गई। लोगों को आशीर्वाद देने के लिए मुझे, अपना हाथ उठाना भी, मुश्किल पड़ रहा था। कुछ लोगों को माथे पर, जिस उंगली से स्ट्रोकस (Strokes) लगा रहे थे, उसका माँस भी बीच में से, फट गया था, और उसमें से, खून भी बह रहा था। रात के 9:30 बजे से लेकर, अगली दोपहर करीब 2:00 बजे तक, अर्थातः लगभग 17 घण्टों की लगातार सेवा, करते हुए हम बुरी तरह से थक चुके थे।

तभी वहाँ एक अजीब घटना घटी।

मैंने देखा, कि गुरुजी एक हाथ में, पानी की बाल्टी और दूसरे हाथ में, एक गिलास ले कर आ रहे हैं। गुरुजी मेरे पास आये और उन्होंने, उस बाल्टी में से, आधा गिलास भरकर, मुझे पीने के लिए दिया।

आश्चर्य------

जैसे ही मैंने वह जल पीया, मेरी सारी थकान, पलभर में ही, न जाने कहां गायब हो गई। मैं बिलकुल तरो-ताजा हो गया। मानो मेरा शरीर व दिमाग, जैसे बिलकुल नये हो गये हों। मेरे पास सामर्थ्य ही नहीं हैं, कि मैं अपने उस अनुभव को शब्दों में बांधकर, आपके समक्ष रख सकूं।

.....गुरुजी ने क्या किया था,
यह तो सिर्फ और सिर्फ गुरुजी
ही बता सकते हैं, कि उस आधे गिलास
जल के अन्दर, उन्होंने कौन सी
ऐसी ताकत डाली थी?

कौन हैं...वे....!!

यह शब्दों में व्यक्त करना, सम्भव नहीं है। इसके बाद मेरी तरह उन्होंने, अन्य शिष्यों को भी जल पिलाया और वे भी अपनी सारी थकान भूल कर पुनः तरो-ताजा हो गये।

जब गुरुजी हमें जल पिला रहे थे, तो
उन्होंने हमें आँखों-आँखों में आदेश दिया,
कि कोई भी, न तो उनके चरण छुए और
न ही, प्रणाम ही करे।

*****

15.1. रेनुकाजी--------
ट्रिब्यून समाचार पत्र के पत्रकार

ट्रिब्यून समाचार पत्र से कुछ पत्रकार, वहाँ आये और पूछने लगे, कि गुरूजी कौन हैं, जो इतने लोगों को आशीर्वाद दे रहे हैं?

सेवा चल रही थी, कि मुझे कुछ शोर सुनाई दिया, मैं उठ कर बाहर आया, तो देखा कि कुछ व्यक्ति वहाँ खड़े हुए, सीताराम जी से बहस कर रहे थे------

''आप सब में से, गुरूजी कौन हैं,
जो इस तरह लोगों को आशीर्वाद दे रहे हैं?''

सीताराम जी ने कहा----

''.....मैं नहीं जानता''

तभी उनमें से एक परेशान सा होकर बोला---

''हम पत्रकार हैं और हम स्थानीय ट्रिब्यून समाचार पत्र से आये हैं, हमने लोगों से पूछा है, वे सभी सन्तुष्ट हैं। सभी यही कहते हैं, कि हम पिछले कई सालों से दर्दो से पीड़ित थे और गुरूजी ने हमें, ठीक कर दिया है। लेकिन हम ये जानना चाहते हैं कि आप ग्यारह में से .....गुरू कौन हैं?''

दूसरा पत्रकार बोला----

''हम एक-एक से पूछ रहे हैं, लेकिन हमें, सच्चाई कोई भी नहीं बता रहा। आप ग्यारह में से एक तो, कोई गुरू होगा? और आप कह रहे हैं, कि आप नहीं जानते। पूरे हरियाणा और पंजाब की बसें, इस रुट पर लगा दी गई हैं और फिर भी, हर बस स्टैंड पर, इतनी भीड़ लगी है, जिसे सम्भाल पाना मुश्किल हो रहा है''

वह फिर बोला--

''हमें हमारे आफिस से भेजा गया है, कि आप वहाँ जाओ, देखो और वापिस अपनी रिपोर्ट, हमें दो। ताकि हम, यहाँ पर होने वाले चमत्कारों को और गुरू के बारे में, अपनी अख़बार में छाप सकें, कि वह कौन हैं जिन्होंने, इस दूर दराज के इलाके में, इतनी बड़ी संख्या में, लोगों को अपनी तरफ खींचा है।''

वह आगे बोला---

''हमें किसी ने बताया है, कि वह कोई भूमि सर्वेक्षण विभाग के अधिकारी हैं लेकिन वे हैं .....कौन?, उनका नाम क्या हैं? वे .....कहां हैं? हमें अभी तक इस बात का, पता नहीं लग पा रहा।

बहुत देर से लगातार चल रहे, इस कभी समाप्त न होने वाले, इस वार्तालाप को सुनने के बाद, मैं बीच में बोला---

''देखो, ऐसा है, कि हमें गुरूजी की तरफ से, यही आदेश है, मैं नही जानता . .....क्यों? लेकिन कोई भी ये नहीं बोलेगा, कि गुरूजी ....कौन हैं?''

तब पत्रकार फिर बोला --

''क्या इसमें... किसी प्रकार की गोपनीयता है?''

मैंने विनम्रता से कहा---

''.....हो भी सकता है, कि गुरूजी मानवता के इस पवित्र कार्य जिसमें, वे लोगों के दुः ख-दर्दो का निवारण कर रहे हैं, एक खोखला प्रचार न चाहते हों....''

''मैं जानता हूँ, कि आप बहुत कुछ पूछना चाहते हैं, लेकिन बेकार है...। गुरूजी यहाँ अनगिनत लोगो को, पीड़ा-मुक्त करने आये हैं, जो मानसिक-पीड़ा और विभिन्न प्रकार की बीमारियों से, सालों से ग्रस्त हैं तथा अपनी बीमारी के लिए, किसी डॉक्टर के पास, अपने इलाज के लिए जाने में भी असमर्थ है। तो कुछ लोगों की बीमारी, डॉक्टरों की समझ से भी, बाहर है और इसी तरह बीमारी की ही अवस्था में ही, वे जीने को मजबूर हैं।

यहाँ गुरूजी, अपने शिष्यों के साथ, उन्हें ठीक करने के लिए ही आये हैं। गुरूजी ने अपने शिष्यों को, आघ्यात्मिक-शक्तियाँ दी हैं और आप देख सकते हैं कि इससे लोग ठीक हो रहे हैं। आप जरा समझने की कोशिश कीजिए, कि यह प्रेक्टीकल रुप में हो रहा है, और उसके परिणाम भी आपकी आँखों के सामने हैं।

स्पष्ट रुप में अगर मैं बोलूं, तो लोग अपनी परेशानियाँ ले कर आ रहे हैं और उन्हें यहाँ, ठीक करवा कर ही, अपने घरों को लौट रहे है। उनके पूर्ण इलाज के लिए उन्हे लौंग, इलायची और जल दिया जा रहा हैं।''

यहाँ पर मैं, एक बात कहना चाहता हूँ, कि
गुरूजी ने जैसा चाहा,
.....वैसा उन्होंने कर दिखाया।

*****

16. एक लड़की काँच की चूड़ियों की उल्टी कर रही थी।

एक बार सुबह-सुबह, एक लगभग सत्तरह वर्षीया लड़की, जिसका नाम कमलेश है और वह मुज्ज़फर नगर, उत्तर प्रदेश की रहने वाली थी, अपने माता-पिता के साथ गुडगांव, गुरूजी के पास आई। उसकी एक टाँग मुड़ी हुई थी, वह सीधी नहीं होती थी। इस कारण वह चलने में असमर्थ थी। गुड़गांव स्थान पर, गुरूजी के प्रिय सेवादार पूरन, उनका संदेश लेकर गुरूजी के पास गये, तो गुरूजी ने उनके पूरे परिवार को, अपने कमरे में बुला लिया।

गुरूजी ने, उस लड़की के माथे पर हाथ रखा। उस लड़की के पिता, जिसकी आयु लगभग 45-50 वर्ष की होगी, बहुत विनम्रता से बोला----

''गुरूजी, यह मेरी इकलौती लड़की है। यह अपनी छाती और पेट में, हमेशा दर्द बताती है, हमने इसका अस्पताल में, बहुत इलाज करवाया लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा....।। अब हम बड़ी उम्मीद के साथ, आपका आशीर्वाद लेने आये हैं। कृप्या आप इसे, इसके कभी खत्म न होने वाले, इस दर्द से मुक्त कीजिए, तथा इसे जीवन पर्यन्त, स्वस्थ रहने का, आशीर्वाद भी दीजिए।''

गुरूजी ने उस लड़की को, जल दिया और उसे, अगले दिन आने का, आदेश दिया और वे वापिस चले गये।

अगले दिन

गुरूजी ने, पूरन को एक गिलास में, जल जूठा करके देते हुए आदेश दिया----

''....ये तुम उस लड़की को,
अपने हाथ से पिलाओ।''

पूरन, उस लड़की को स्थान पर ले आये और जैसा गुरूजी ने कहा था, वैसे ही, उस लड़की को, जल पिला दिया।

जल पीने के कुछ देर बाद ही, वह लड़की परेशान हो गई और कारपेट पर इधर-उधर लोटने लगी और जोर-जोर से चिल्लाने भी लगी। लेकिन तभी अचानक वह बैठ गई और उसने उल्टी कर दी।

ये क्या? उस लड़की की उल्टी में--

.....काँच की टूटी हुई चूड़ियाँ और
गांठ लगे हुए धागे निकले।

यह अविश्वसनीय था-------

पूरन वह चूड़ियाँ और धागे, एक अख़बार के कागज़ पर रखकर, गुरूजी के कमरे में ले आये। मैंने भी यह अपनी आँखों से देखा। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था, क्योंकि आज से पहले, मैंने या हममें से किसी और ने, ऐसा नज़ारा कभी देखा नहीं था, कि किसी के मुँह से, टूटी हुई चूड़ियाँ और वह भी, धागों से बंधी हुई, निकली हों।

मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था, कि ये कैसे सम्भव हो सकता है, कि कोई इस तरह धागे से कस के बांध कर, काँच की टूटी हुई चूड़ियाँ को, एक साथ निगल सकता है, और अब उल्टी करके, बाहर निकाल सकता है। गुरूजी ने उसके परिवार वालों को, तीन दिन बाद आने का, आदेश देकर वापिस भेज दिया।

तीन दिन बाद :

गुरूजी ने, पूरन को बुलाया और उसी तरह जल जूठा करके उन्हें, उस लड़की को पिलाने के लिए दिया और पूरन ने फिर वैसा ही किया। पिछले सप्ताह की भांति फिर से वैसा ही घटित हुआ, उसी तरह लड़की, कारपेट पर, दायें-बायें लोटने लगी, उसकी छाती व पेट में फिर से तेज दर्द हुआ, वह फिर उसी तरह चिल्लाई और अन्त में उल्टी कर दी।

उस दिन भी बहुत बड़ी संख्या में, वैसी ही टूटी हुई काँच की चूड़ियाँ और धागे, उल्टी में बाहर आ गये। इस बार हम सब चुपचाप खड़े, ये सब देख रहे थे। कोई कुछ भी नहीं कह पा रहा था।

गुरूजी ने उसके माता पिता को कहा---

''इसके शरीर के अन्दर अभी बहुत सारी चूड़ियाँ है, हम उन्हें उल्टी के रास्ते, बाहर निकाल लेंगे, इसलिए तुम इसे तीन चार दिन बाद, फिर ले आना।''

यही प्रक्रिया कुल पांच बार दोहराई गयी।

उसके बाद गुरूजी बोले----

''यह लड़की अब बिलकुल ठीक है, सारी चूड़ियाँ और धागे बाहर आ गये हैं और उस लड़की की टाँग भी सीधी हो गई है। अतः अब इसका जीवन सुरक्षित है। लेकिन इसकी दाहिनी तरफ का आपरेशन हो गया हैं इसलिए इसको पुत्र-प्राप्ति नहीं हो सकेगी, इसको केवल लड़कियाँ ही पैदा होंगीं।''

गुरूजी ने उसे आदेश दिया कि वह सिर्फ अपनी माँ की रसोई में बनी खीर के अलावा, बाहर की बनी खीर या दूध से बनी कोई चीज, ही खाये।

कुछ हफ्तों बाद, उसके माता-पिता फिर उसे, लेकर आये और गुरुजी से बोले, कि उसे दुबारा से, पेट और छाती में दर्द है। गुरुजी ने अपना हाथ उसके माथे पर रखा, और बोले----

''इसने हमारी आज्ञा का पालन नहीं किया हैं।
इसने जरूर किसी रिश्तेदार के घर, खीर खाई है''

उन्होंने फिर से, एक गिलास जल जूठा किया और पूरन को बुलाया, उसे स्थान के कमरे में बैठा कर, पिलाने को बोला।

जल पीते ही, फिर उसी तरह से वह लड़की कारपेट पर उल्टी-सीधी लोटने लगी, दर्द से चिल्लाई और उसने उल्टी कर दी।

लेकिन इस बार चूड़ियाँ बाहर नहीं निकली, सिर्फ पानी ही बाहर आया। पूरन अपने हाथों में, बड़ा सा न्यूज पेपर लेकर, पहले से ही तैयार खड़े थे। जो कुछ निकला, उसे उसी तरह गुरुजी के कमरे में, ले जाकर दिखाया।

गुरुजी ने देखा, उसमें एक मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा भी था। गुरुजी ने उसके माता-पिता को, तीन चार दिन बाद, लाने के लिए कहा।

लड़की गुरुजी के पास बार-बार आती रही। गुरुजी उसके लिए जूठा जल, पूरन को देते और वे उसे पिलाते फिर उसी तरह का नज़ारा, लडकी उल्टी कर देती।
फिर एक दिन उल्टी का रंग, कुछ पीला और नांरगी था और उसमें एक मुड़ा हुआ, आधा वर्ग इन्च चौड़ा, कागज़ का टुकड़ा निकला। गुरुजी मुस्कुराए और उसे आशीर्वाद दिया। उन्होंने उसे आदेश दिया, कि पूरे साल भर उसे, बाहर का कुछ नहीं खाना है।

गुरुजी ने उसे, एक गिलास में जूठा करके जल दिया, लेकिन इस बार उसे कोई दर्द नहीं हुआ और न ही कोई उल्टी। इसके बाद उसने अपनी आम जिन्दगी जीना शुरु कर दी।

आज उस लड़की की,
शादी हो चुकी है उसके बच्चे भी है,
लेकिन बेटा नहीं हैं, केवल लड़कियाँ ही हैं।

*****

17. जब गुरुजी हवाई-अड्डे पर लेने गया

मैं अपने दरियागंज स्थित शोरूम में बैठा था कि अचानक मुझे श्री आर. पी. शर्मा जी (जो गुरुजी के प्रिय शिष्यों में से एक हैं) का फोन आया, कि आपके लिए गुरुजी की तरफ से, एक संदेश आया है, कि गुरुजी मुम्बई से वापिस आ रहे हैं, उनकी फ्लाईट रात को आठ बजे पहुँचेगी, आप उन्हें लेने हवाई अड्डे पहुँच जाऐं।

मैं शाम को 7:30 बजे ही, हवाई अड्डे पर पहुँच गया। वहाँ मैंने देखा, गुरुजी को लेने, मेरे अलावा श्री सुरेन्द्र तनेजा, श्री आर. पी. शर्मा तथा और भी बहुत से लोग, पहले से मौजूद थे ।

खैर.....
फ़्लाईट आई, परन्तु उसके यात्रियों में, गुरुजी नहीं थे। हमने आपस में बातें करते हुए, नोटिस बोर्ड पर देखा वहाँ अगली फ्लाईट का समय, 8:30 बजे का था। किन्तु उस विमान के यात्रियों में भी, गुरुजी नहीं थे। हम लोगों ने रात के 9 बजे तक, इंतजार किया। लेकिन गुरुजी नहीं आये।

मेरे गुरु भाई, आपस में बातें करने लगे, कि शायद गुरुजी की ये फ़्लाईट, छूट गई है, या कोई और कारण है, या तो फिर वे कल आयेंगे। उन सबने मिल कर, यह फैसला किया, कि अब हमें घर वापिस जाना चाहिए। लेकिन मैं, उनकी बातों से सहमत नहीं था।

शर्मा जी ने, मुझसे भी घर चलने को कहा। इस पर मैंने कहा---

''आपने ही मुझे, गुरुजी का संदेश दिया था, कि मैं गुरुजी को लेने हवाई अडडे पहुँचू। इसलिए, मैं तो यहीं रुकूंगा और गुरुजी को लिए बगैर, घर वापिस नहीं जाऊंगा।''

शर्मा जी कुछ नाराज से हो कर बोले---

''दो फ्लाईट तो आ चुकी हैं, और गुरुजी नहीं आये, तुम यहाँ क्या सारी रात बैठे रहोगे?''

मैंने विनम्रता से उत्तर दिया---

''मैं नहीं जानता।''

मुझे सिर्फ गुरुजी के संदेश के, यही शब्द याद थे, कि...

''.....राजपाल आयेगा और
मुझे हवाई-अड्ड़े से लेकर जायेगा।''

इसीलिए, मैं गुरुजी को लिए बगैर, वापिस घर नहीं जा सकता।

शर्मा जी, मेरी इस बात से नाराज हुए और बोले, ठीक है..... जैसा तुम चाहो...। लेकिन हम तो जा रहे हैं। वे बाकी लोगों के साथ, अपने-अपने घर लौट गये। मैं गुरुजी के आने का, फिर से इन्तजार करने लगा।

करीब 11 बजे, एक सूचना प्रसारित हुई, कि मुम्बई से एक फ़्लाईट आई है। मेरी आँखें, आने वाली भीड़ में, गुरुजी को तलाशने लगी। तभी मुझे, एक हाथ में ब्रीफकेस पकड़े हुए, गुरुजी अपनी तरफ आते हुए, नजर आ गये। मैं बहुत आनन्दित हुआ और मुझे परम सुख की अनुभूति हुई। उस समय, रात्रि के करीब 11:30 बजे थे। मैने गुरुजी के चरण छूकर, उन्हें प्रणाम किया और वे बोले---

''तू अकेला है.....!!,
तू वापिस क्यों नही गया,
जबकि सभी लोग वापिस चले गये?''

मैंने उत्तर दिया---

''गुरुजी मुझे आपके आने का संदेश मिला था,
इसलिए मैं, आपके आने की, प्रतीक्षा कर रहा था।''

गुरुजी बोले---

''जब मैं पहली दोनों फ़्लाईटस में नहीं आया
....और सारे ही वापिस चले गये,
तो तू क्यों नहीं गया?''

मैंने गुरुजी के पैर छुए और कहा----

''गुरुजी, मुझे तो बस आपका संदेश ही याद था, कि आप आ रहे हैं और मुझे आपको यहाँ लेने आना है।''

मैंने गुरुजी से पूछा----

''गुरुजी, मेरी ये समझ में नहीं आ रहा, कि आपकी तो, इस फ़्लाईट से आने की, कोई उम्मीद ही नहीं थी''

इस पर गुरुजी बोले----

''किसी वी.आई.पी. की वजह से, इस स्पेशल फ़्लाईट की व्यवस्था की गई और बाकी लोगों के साथ, मुझे भी फ़्लाईट मिल गयी।''

गुरुजी ने मुझे, फिर आशीर्वाद देते हुए कहा--

''अच्छा चलो।''

हम लोग गुड़गांव पहुँचे, जहां आदरणीय 'माता जी', गुरूजी का पहले से ही इंतजार कर रहीं थीं, जैसे कि वे जानती थी, कि गुरूजी आने वाले हैं। उन्होंने माता जी को, मुझे चाय का प्रसाद देने के लिए कहा और फिर रात के 2 बजे तक, मुझे बहुत सी ज्ञान की बातें बताते रहे। इसके बाद उन्होंने मुझे, पंजाबी बाग वापिस जाने की अनुमति दी। साथ ही उन्होंने मुझे दूसरा आदेश भी दिया---

''तुम स्थान वाले दीवान पर,
जिस पर बैठकर तुम,
सेवा करते हो, उसी पर सो जाना''

मैं घर पहुँचा और गुरूजी के आदेश का पालन करते हुए, करीब सुबह 4:00 बजे सोया।

मेरे लिए, ये कोई आम रात नहीं थी। इस रात मुझे, स्वप्न में क्या-क्या नज़ारे दिखाये, मैं वह सब कुछ, यहाँ लिखना तो चाहता हूँ, परन्तु उसके लिए मुझे अपने महा गुरूदेव जी की, आज्ञा लेना ज़रुरी है। मुझे बहुत खुः शी होगी, अगर आने वाले समय में मैं, आप सब के साथ अपने, वह अतुल्य अनुभव बाँट सकूं।

शाम 7:30 से 11:30 बजे तक हवाई अड्ड़े पर, गुरूजी का इंतजार करुं, यह मेरे दिमाग की कोई उपज नहीं थी। बल्कि ये सब तो, गुरूजी की अपनी ही रचना थी। वे ही अपने शिष्यों को, किसी ऐसे विशेष कार्य के लिए, चुनते हैं और किसका चयन करना है, वह भी उन्हीं की मर्जी से होता है। उनकी मर्जी के खिलाफ, हम कुछ भी नहीं कर सकते।

हवाई-अड्ड़े पर, मेरा अपनी मर्जी से रुकना, सम्भव नहीं था,
अपितु ये तो, गुरूजी की मर्जी और उन्हीं का निर्णय था।
गुरूजी ने मुझे, अप्रत्यक्ष रूप से, यह आदेश दिया था कि
'तुम घर नहीं जाओगे और मेरा,
यहीं पर इंतजार करोगे।'

*****

18. जब गुरूजी पहली बार पंजाबी बाग पधारे ।

एक दिन शाम की बात है, कि अचानक, मैं अचम्भित रह गया, जब मैंने देखा, कि गुरूजी पंजाबी बाग, हमारे घर आये हैं। हमारे लिए तो, ये ब्रह्ममाण्ड़ की सबसे बड़ी, खुः शी का समय था, कि गुरूजी ने हमें, अपने ही घर में दर्शन दिये और वह भी बिना किसी पूर्व सूचना के।

मेरी धर्मपत्नी व बच्चे, इस अचानक मिली खुः शी से, आन्नद विभोर हो उठे। वे खुः शी से चिल्लाने लगे---

''गुरूजी आ गये !!,

गुरूजी आ गये!!''

वह शोर मचाते हुए, इधर-उधर भागने लगे। इस अपार खुः शी का बयान शब्दों में कर पाना असम्भव है------

''.....गुरूजी का आना, और
वह भी, बिना किसी पूर्व सूचना के...!!''

खुः शी का वर्णन करना बहुत मुश्किल है, कि महीनों-महीनों बीत गये गुरूजी के इंतजार में, और आज आये तो ऐसे.....!!

श्री आर. पी. शर्मा तथा एफ. सी. शर्मा जी के अलावा और भी कई लोग, उनके साथ आये थे। मैं, और मेरे बच्चे, गुरूजी व और लोगों के लिए कुर्सिया लेने दौड़े। गुरूजी मेन हॉल के मुख्य द्वार पर, खड़े थे, जहां पर करीब 50-60 लोग, आराम से बैठ सकते थे। गुरूजी वहाँ बैठ गये और हमने गुरूजी के पवित्र चरणों में, साष्टाँगावत् प्रणाम किया।

....क्या उनके चहरे का आलौकिक तेज, और
...क्या उनकी दिव्य मनमोहक मुस्कान,
.....वह दृश्य अविस्मर्णीय था ।।

मेरा घर मानों, किसी दिव्य ऊर्जा से भर गया हो...! मैं नहीं जानता, कि मैं क्या कहूँ, उस नजारे को शब्दों में बाँधना असम्भव है

.....बिल्कुल असम्भव।

जैसे.....
महाभारत की कथा में, विदुर के घर भगवान कृष्ण आये, तो वह इतना आत्म-विभोर हो गया, कि वह उन्हें केले छील कर खिलाने की बजाये, केले बाहर फैंककर, उसके छिलके, भगवान कृष्ण को अपर्ण कर रहा था। उसे आभास ही नहीं था, कि वह कर क्या रहा है.....? तभी किसी ने, उन्हें पकड कर झिझोंड़ा और कहा---

''विदुर जी, ये आप क्या कर रहे हैं?''

.....तो कुछ ऐसी ही हालत उस समय, मेरी भी थी।

(मेरी भाभी की माँ, जो कि बहुत आध्यात्मिक थीं, और मुम्बई में, उनके पास बहुत से लोग, आध्यात्म और भजन आदि के लिए, आते थे। पिछले कुछ दिनों से अपनी बेटी, यानि हमारी उषा भाभी के पास, पंजाबी बाग आकर रह रहीं थी। जैसे ही उन्हें, गुरुजी के आने की सूचना मिली, वे तुरन्त हमारे घर, गुरुजी से मिलने आई और उनके पास कुर्सी पर बैठ गयी।)

उन्होंने गुरुजी से एक प्रश्न पूछा---

''.....गुरुजी, बताईए, क्या कारण था,
कि पिछले कुछ महीने पहले,
मेरी लड़की का कार एक्सीडेन्ट हुआ...?''

ऐसा प्रतीत हो रहा था, कि जैसे वह गुरुजी को परख़ने की कोशिश कर रही हो।

गुरुजी ने उसकी तरफ देखते हुए कहा---

''जिस समय उषा कार चला रही थी, उसके साथ उसकी भतीजी, (रश्मि) भी बैठी थी। वह एक ऐसी जगह से निकली, जहां पर कुछ आत्मायें विश्राम कर रही थी। उस समय उषा, अपने मासिक धर्म के दिनों में थी। वे आत्मायें, उसकी तरफ आकर्षित हुई और उसके शरीर में, प्रवेश कर गई। लेकिन उषा, इस बात से बिलकुल अनभिज्ञ थी। उषा ने, अपना सन्तुलन खो दिया और उसकी कार एक बिजली के खम्बें से जा टकराई और इस तरह एक्सीडेन्ट हो गया।''

गुरुजी ने उसे फिर आगे बताया---

''तभी मेरे शिष्य, राज्जे को पता चला, तो वह अपने ड्राईवर बहादुर को लेकर, घटना-स्थल पर पहुँचा। उसने अपनी उषा भाभी और रश्मि को दूसरी कार से अस्पताल पहुँचाया। उन्होंने कहा---

**....अगर राजा वहाँ नहीं पहुँचता,
तो वह आज जिन्दा नहीं होती।''**

.....परन्तु सोचने की बात यह है,
कि घटना-स्थल पर जो कुछ हुआ,
गुरुजी सब जानते थे....!!

इसके बाद उसने अपनी, आध्यात्मिक उपलब्धियों के बारे में, गुरुजी से बोलना शुरु कर दिया। गुरुजी ने उसके माथे पर, जैसे ही हाथ रखा, उसने बोला----

''मैं भी आपकी तरह ही ध्यान लगाती हूँ।''

परन्तु ये क्या ------?
वह बार-बार ''ध्यान'', ''ध्यान'' शब्द दोहरा रही थी, वह अपना वाक्य भी पूरा नहीं कर पा रही थी। फिर उसने एक भजन गाना शुरू कर दिया, लेकिन वह उसकी अगली लाईन ही भूल गई। तब उसने, दूसरा भजन गाने की कोशिश की, पर ये क्या...!!

वह उसकी भी अगली लाईन भूल गई।

....हम पहली बार उसे इस तरह भूलते हुए देख,
...अंचम्भित रह गये।

गुरुजी ने मेरी तरफ देखा और बोले-----

''.....बेटा, अब हम,
गुड़गांव के लिए निकलते हैं"
और वे उठे और चलने लगे।

इतने में हम क्या देखते हैं, कि वह भी उठीं और गुरुजी को बाहर कार तक, विदा करने के लिए आई।

वह अपने समाज में एक जानी-मानी हस्ती थी, सैंकड़ों लोग उनके समक्ष श्रद्धा-भाव से अपना सिर झुकाते थे और उन्हें 'माँजी' के नाम से, सम्बोधित करते थे। लेकिन आज गुरुजी के लिए, जिस आदर और सम्मान के साथ उठीं, मेरे लिए ये आश्चर्य का विषय था।

....क्यों कि आज तक मैंने उसे,
किसी के लिए, इस तरह विनम्र होते हुए,
पहले कभी नहीं देखा था।

*****

18.1. इस एक्सीडेंन्ट के बारे में, मुझे कुछ, याद आ रहा है, जो मैं यहाँ पर लिखना चाहूँगा।

जैसे ही मुझे सूचना मिली, मैं अपने ड्राईवर को लेकर, घटना-स्थल पर पहुँचा और उन्हें, दूसरी कार में डालकर, अस्पताल ले गया। लेकिन रास्ते में मैंने देखा, कि मेरी भाभी, अर्द्ध-मूर्छित अवस्था में थी, परन्तु उसने मेरी बाजुओं को, कस के पकड़ रखा था और मुझे, उनसे अपने आप को छुड़ाना, मुश्किल जान पड़ रहा था।

उस समय मैं, इस बात को समझ नहीं पाया। जब मैं अस्पताल के एमरजैन्सी विभाग में पहुँचा, तो कुछ डॉक्टर तेजी से वहाँ आ गये और घायलों को देखने लगे। एक सीनियर डॉक्टर ने दूसरे डॉक्टर से कहा---
''कि लगता है---

...इस महिला के बचने की उम्मीद नहीं है,
तुम दूसरी को देखो''
मैं ये सब सुन कर घबरा गया।

उस समय मुझे, कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। लेकिन तभी.....
गुरुजी के वो शब्द, मुझे स्मरण हो आये, जो उन्होने, मुझसे कुछ समय पहले कहे थे----

''यदि तुम किसी की जान बचाना चाहो,
तो अपना कड़ा निकाल कर,
उसके हाथ में डाल देना''

मैंने तुरन्त वैसा ही किया, मैंने वहीं से एक बीकर लिया और उसमे पानी डाल कर, उसमे से एक घूँट पिया और बाकी जल, अपनी भाभी के मुँह में डाल दिया और गुरुजी से, उनके जीवन के लिए प्रार्थना की।

तीसरे दिन

जब मैं भाभी से मिलने, उनके कमरे में गया, तो वे सबको बता रही थी---

''...मेरा सिर ऊपर की ओर था,
....और मैं उड़ी चली जा रही थी,
लेकिन तभी किसी ने, मेरे पैर पकड़ कर,
मुझे वापिस, नीचे खींच लिया...।''

कुछ दिनों में, वह बिल्कुल ठीक हो गई।

*****

19. गुडगांव स्थान पर बड़े वीरवार की सेवा।

यह सत्तर के दशक की बात है, जब गुरूजी ने मुझे, अपना शिष्य बनाया था। उस समय गुड़गांव की, शिवपुरी कालोनी में, किराये के मकान में, अक़्सर 7:30-8:00 बजे के बीच, बड़े वीरवार की सेवा शुरू होती थी। श्री आर. पी. शर्मा, एस. के. जैन साहब, सूरज प्रकाश शर्मा और कई अन्य शिष्य भी, वहाँ सेवा करते थे।

करीब 20 से 30 लोगों की, लाईन होती थी और उन्हें, हम लोग गुरूजी के पास लाने की सेवा करते थे। उनसे '**मीठी फुल्लियों का प्रसाद**', स्थान पर चढ़ाने को कहते थे। शुरु-शुरु में तो, गुरूजी दोपहर तक सेवा समाप्त कर देते थे और उसके बाद हम लोगों के साथ बैठते तथा माता जी से हमें, अक़्सर खाना प्रसाद के रुप में मिलता था। कुछ समय तक तो ऐसा ही चलता रहा।

एक दिन की बात है, उस मकान का मालिक आया और शिकायत करने लगा, कि मकान की छत पर, जो लोग आते हैं, उनके वज़न से, उसकी छत नीची होनी शुरु हो गई है। उसकी, इस बात को सुनने के बाद, गुरूजी ने फैसला किया, कि वे अपना घर लेंगे। तब गुरूजी ने, जमीन लेने के लिए, आवेदन किया और अपने बचत खाते व प्रोविडेन्ट फण्ड से, पैसा निकाल कर, गुड़गांव के सैक्टर 7 में, एक मकान बनाया और वहीं पर उन्होंने, सेवा कार्य शुरु कर दिया। जो भी स्थान पर, गुरूजी से मिलने आता, उसे चाय का प्रसाद दिया जाता। उन दिनों मैं, लोगों के जाने के बाद, उनके चाय के जूठे कप, धोता और बरामदे में, जहां पर बैठकर लोग, गुरूजी के दर्शन के लिए इन्तजार करते, वहाँ पर सफाई करता था।

गुरूजी लोगों को आशीर्वाद देते और उन्हें श्री आर. पी. शर्मा जी व एस. के. जैन साहब के पास भेज देते थे। उस समय ये दोनों ही, लोगों की समस्याओं को सुनने की, सेवा करते थे। उनके चेहरे पर, किसी प्रकार का तनाव या दवाब नजर नही आता था। इन शिष्यों को गुरूजी ने, पूरी तरह दक्षता प्रदान की हुई थी, इसलिए वे विश्वस्त थे और इन शिष्यों के लिए, लोगों की बीमारियाँ दूर करना, एक मामूली सा कार्य था।

परिणाम अपने आप में स्वम् गवाह थे, कि लोगों को कैसे तुरन्त आराम मिल जाता था। वह नज़ारा, दिल को छूने वाला होता था, ऐसा देखकर लगता था, कि मैं एक नये संसार में आ गया हूँ।

गुरूजी लाईन में आने वाले, हर किसी व्यक्ति को आशीर्वाद देते और उनकी समस्या को सुनते और उन्हें, अपने शिष्यों के पास भेज देते। जो लोग दूसरी बार गुरूजी के पास आते तो-

आश्चर्य.....!!

.....गुरूजी को उसकी समस्या का पता होता।

गुरूजी के मनमोहक और दिल लुभाने वाले चेहरे पर, जो मुस्कुराहट होती थी, उसे छोड़ कर, कोई भी अपने आप को, उनसे दूर नहीं रख पाता था। उनकी चाल-ढ़ाल, किसी आम व्यक्ति से भिन्न थी। उनके चारों ओर, एक विशेष प्रकार का तेज़ था। उनका एक अलग ही स्वरुप था।

किशोरावस्था से ही, मुझे भगवान शिव से, लगाव था और मैं पूजा-अर्चना किया करता था। मैं परम ज्ञान के लिए इधर-उधर भटकता रहता था। मैं बहुत से संत महात्माओं और ज्ञानियों से मिला। लेकिन, गुरुजी से मिलने के बाद, मुझे उन जैसा कोई नज़र नहीं आया। उनकी तुलना, किसी और के साथ करना, असम्भव था।

हर तरह से,

...वे भिन्न थे।

...वे अतुल्यनीय थे।

वे जिस किसी को भी देख लेते, वह उनसे तन-मन और आत्मा से, जुड़ सा जाता था। गुरुजी से मिलने के बाद, मुझे कहीं ओर जाने की, ज़रूरत ही महसूस नहीं हुई।

गुड़गांव के सैक्टर 7 वाले, अपने नये घर में आने के बाद, दिनों-दिन गुरुजी के पास आने वाले लोगों की संख्या, लगातार बढ़ने लगी। पहले इनकी संख्या, सैंकड़ों में थी, अब ये हजारों में हो गई। अब अस्सी के दशक के आते-आते, गुरुजी सुबह 3:30 बजे से आशीर्वाद देना शुरु करते और रात को ग्यारह-बारह बजे तक, सेवा चलती रहती और फिर कुछ वर्षो तक ऐसा ही चलता रहा।

गुरुजी हमें आदेश देते, कि आप लोग बाहर जाकर, लाईन में लगे लोगों का ध्यान रखो। हम लोग भी बाहर जाकर चलना शुरु करते, जहां तक लोगों की लाईन लगी होती। हम एक-एक व्यक्ति की तरफ देखते, वे भी मुस्कुरा कर हमारा अभिवादन और हमें प्रणाम करते। हम भी उन्हें हवा में हाथ हिलाकर शान्ति से, गुरुजी का इन्तजार करने के लिये कहते। इसी तरह चलते-चलते हम लाईन के अन्त तक जाते, जहां तक सड़क के किनारे-किनारे, स्थान से करीब 2 किलो मीटर दूर तक, लोगों की लाईनें लगी होतीं। लाईन के अन्त तक, एक जैसा ही नजारा, देखने को मिलता.....!!

लोगों की लगातार बढ़ती हुई भीड़ की संख्या को देखते हुए, गुरुजी स्थान से बाहर आकर, लाईन में ही चलते-चलते, हर व्यक्ति से बात करते, आशीर्वाद देते, उनके सिर पर हाथ रखते। फिर वो चाहे पुरुष हो या स्त्री और या फिर छोटा बच्चा या बूढ़ा ही क्यों न हो। वे हर किसी से कहते कि---

स्थान पर
''मीठी फुल्लियों का प्रसाद'' चढ़ाओ,
और अपनी समस्याऐं, मेरे शिष्यों को बता दो।

लोग उनके शिष्यों के पास आकर उनके सामने कारपेट पर बैठ जाते और शिष्य उन्हे जल व उनके द्वारा लाये गये लौंग, इलायची व काली मिर्च बना देते।
(यहाँ पर बनाने का अर्थ है : लौंग, इलायची व काली मिर्च को, शिष्य द्वारा, अपने माथे से लगा कर, उन्हें 'आध्यात्मिक शक्तियों' से, अभिमंत्रित करना)

आने वाले, हर किसी व्यक्ति को यह समझाना, कि उसे किस तरह से, लौंग, इलायची और काली मिर्च का सेवन करना है और जब तक वे, पूर्ण रुप से स्वस्थ न हो जाऐं, वे लौंग, इलायची का सेवन करता रहे और जल पीता रहे।

इसे समझने के लिए सिर्फ एक विश्वास की जरूरत है।
इसमें बुद्धि अथवा विवेक के इस्तेमाल की,
कोई जरूरत नहीं।

गुरूजी, अपने आप में पूर्ण हैं और उनके पास ज्ञान का भंड़ार है, इसलिए देखो, और केवल उस समय का इन्तजार करो, कि कब आपके ऊपर भी, उनकी कृपा हो जाए।

इसकी किडनियाँ तो ठीक हैं।

एक बार एक दम्पति, अपने नवजात शिशु को गोद में लेकर, लाईन में बैठा, गुरूजी का इंतजार कर रहा था, कि तभी वहाँ गुरूजी पहुँचे। उस महिला ने अपना बच्चा, गुरूजी के हाथों में दे दिया और कहने लगी---

''गुरूजी, मेरे इस बेटे के गुर्दे (किडनियाँ),
काम नहीं कर रहे हैं''

गुरूजी ने उस बच्चे को, अपने हाथों में उठाया और बोले----

....नहीं बेटा,
''इसकी किडनियाँ तो ठीक हैं।''

और बच्चा उस महिला को लौटा दिया और अगले व्यक्ति को आशीर्वाद देने के लिए आगे बढ़ गये।

गुरूजी लाईन में बड़ी तेजी से, चलते थे, लेकिन वे हर किसी की समस्या से, वाकिफ होते थे। वे हर किसी को, आशीर्वाद देकर जाते थे। उन्हें कई बार लोगों से ये कहते हुए सुना और देखा---

''...तू अब ठीक है ना, ...बेटा?''

*सन् **2008** की बात है, एक परिवार पंजाबी बाग स्थान पर आया। एक महिला ने अपने बेटे की किसी शैक्षिक समस्या के बारे में, मुझसे कहा।*

मैंने उससे पूछा---

कि क्या आप पहली बार आये हो....?

तो वह कहने लगी---

''नहीं गुरूजी, मैं तो बहुत पहले से आती हूँ,
मैंने तो बड़े गुरूजी से भी, आशीर्वाद लिया हुआ है,
....जब वे शरीर में थे''

वह फिर बोली---

''गुरूजी, जब मेरा यह बेटा पैदा हुआ था, तो डॉक्टरों ने बताया था, कि इसकी किडनियाँ काम नहीं कर रही। हमारे ऊपर तो जैसे दुःखों का पहाड़ सा टूट पड़ा था। तभी हमें किसी ने बताया, कि आप गुड़गांव जाओ और गुरूजी से मिलो। हम गुड़गांव चले गये और वहाँ लाईन में बैठ कर, गुरूजी के दर्शन के लिए, अपनी बारी का इन्तजार करने लगे।

जब गुरूजी आये और उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा, तो मैंने उनसे कहा----

''.....गुरूजी, मेरे इस नवजात शिशु की
किडनियाँ काम नहीं कर रहीं''

तो गुरूजी ने इस बच्चे को अपने हाथों में उठाया और कहा----

''.....नहीं बेटा, इसकी किडनियाँ,
तो बिलकुल ठीक हैं।''

गुरूजी यह वही लड़का है, जो इस समय आपके सामने,
आपका आशीर्वाद लेने के लिए बैठा है।

*****

20. जब गुरुजी ने एक व्यक्ति के भाई की, पेट दर्द ठीक की।

एक बार की बात है कि गुरुजी, माताजी के साथ, अपने कमरे में बैठे थे। कोई व्यक्ति आया और उनसे अपने भाई, जो तेज पेट-दर्द से कराह रहा था, उसको ठीक करने और आशीर्वाद देने की, प्रार्थना करने लगा।

गुरुजी उस समय, एक अलग ही मूड़ में बैठे थे। कहने लगे---

''...अपनी घड़ी में समय देखो
और अब अपने पेट को छुओ...''

उसने वैसा ही किया।

गुरुजी बोले---

''...अब तुम घर जाओ और देखो,
कि तुम्हारा भाई अब बिलकुल ठीक है।''

वह व्यक्ति, अपने घर चला गया, तो उसने देखा, कि उसका भाई तो बिलकुल ठीक था। घरवालों ने बताया, जिस समय तुमने फोन पर पूछा था, उस समय के बाद, ये बिलकुल ठीक हो गया....!!

यह कैसे हो गया.....?

....हमारे गुरुजी ने, ऐसा क्या किया?
यह एक अविश्वस्नीय कार्य था।

...ये सब मेरे देखते-देखते हुआ।
इसका हमारे पास कोई जवाब नहीं है।

*****

21. गुरुजी द्वारा, पंजाबी बाग स्थान की स्थापना।

एक बार गुरुजी बड़े गम्भीर मूड़ में मुझसे बोले---

''पंजाबी बाग में एक स्थान बनवाओ और मैं स्वम् आकर उसकी स्थापना करूंगा। मैंनें तुम्हें, बहुत सी आध्यात्मिक शक्तियाँ दी हैं, जिनसे तुम लोगों को ठीक कर सकते हो। अतः तुम यहाँ पर सेवा करो। दिल्ली के लोगों के लिए, यह सुविधाजनक होगा।''

मैंने पूछा--

''.....गुरुजी, पंजाबी बाग आयेगा कौन ?''

वह बोले---

''....मैं लोगों को वहाँ भेजूंगा।''

मैंने उन्हें प्रणाम किया और चला आया। कुछ ही दिनों में पंजाबी बाग में, स्थान तैयार हो गया और गुरुजी ने आकर वहाँ स्थापना की तथा मुझे सेवा करने का आदेश देते हुए कहा :

''.....यहाँ जो कोई भी आयेगा और,
तुमसे जो कुछ भी माँगेगा,
बस तुम हां कर देना, मैं उसे पूरा कर दूगाँ।''

उस दिन एक अजीब घटना घटी !!

सुबह-सुबह का समय था। अभी मैं नहाकर निकला ही था, कि दो बूढ़ी औरतें पंजाबी बाग आयी, और कहने लगी, हम गुरुजी से मिलना चाहती हैं। मैंने उन्हें गुड़गांव जाने के लिए कहा तभी दूसरी महिला बोली---

''.....पिछली रात, मेरे सपने में,
एक दिव्य आत्मा आई... और
उसने मुझे, पंजाबी बाग आने के लिए निर्देशित किया''

वह फिर बोली---

''...उन्होंने मुझसे कहा, कि वहाँ जाओ,
और मेरे शिष्य से मिलो, वह तुम्हें ठीक कर देगा।''

मैंने पूछा---

''लेकिन तुम्हें यहाँ का पता किसने दिया?''

तब उस महिला ने, दूसरी महिला की ओर, इशारा करते हुए कहा---

''मैं इसके घर गई और इसे, अपने सपने के बारे में बताया और इसने कहा, घबराओ मत। तुम चलो। हम चलकर पता ढूंढ लेंगे। हमें नहीं पता, कि हम यहाँ कैसे पहुँच गये?''

मैं बहुत खुः श हुआ, क्योंकि मेरे जीवन की, यह एक अजीबों-गरीब चौंका देने वाली घटना थी। जैसा कि गुरुजी ने कहा था, उन्होंने, उन महिलाओं को, कैसे ठीक जगह पर पहुँचा दिया....!!

...यह समझ पाना,
<u>मेरी सोच से परे था।</u>

एक व्यक्ति जिसका नाम सुखवंत सिंह है, जो मार्च सन् 1983 में, पहली बार गुरुजी के दर्शन करने के लिए, गुड़गांव गया और उसके बाद, वह अप्रैल 1983, यानि उसके ठीक एक महीने बाद ही, जब वह दूसरी बार, उनके दर्शन करने गया, तब तक गुरुजी उसे नहीं पहचानते थे।

गुरुजी बोले---

....पुत, मेरा एक स्थान पंजाबी बाग में भी है और
वह तुम्हारे घर के नज़दीक भी है, वहाँ भी जाया करो।

परन्तु तब तक सुखवंत सिंह ने गुरुजी को ये बताया भी नहीं था कि वह कहां से आया है या उसका नाम क्या है। उस समय सुखवंत सिंह, एअर कन्डिशनिग का काम करता था। उस दिन से, उसने लगातार पंजाबी बाग आना शुरु कर दिया और आज वह गुरुजी का प्यारा शिष्य है और पंजाबी बाग स्थान पर, सेवा करता है।

*****

22. गुरुजी नागपुर से मुम्बई गये।

गुरुजी को अपने ऑफिस द्वारा दिये, भूमि-सर्वेक्षण के कार्य हेतु, दूर-दूर ऑफिशियल दौरों पर जाना पड़ता था। इस बार दौरा नागपुर का था। वे हमेशा, अपने ऑफिस कार्य, दिन में जल्द ही पूरा करके, उसके बाद, वहाँ के लोगों की समस्याओं का, समाधान करते थे। उन्हें बहुत खुः शी मिलती थी, जब उनके पास आये लोगों की आध्यात्मिक रुप से सेवा करते और उनकी समस्या दूर करते।

''कमाल की बात है----

.....गुरुजी को पूरी खबर होती थी,
कि आने वाला, क्या दुः ख लेकर आया है?
....और उन्हें ये भी पता होता था,
कि उन्होंने क्या करना है.....''

अविश्वस्नीय :

लोगों को ठीक करने का, वह क्या तरीका है? आज तक किसी को भी पता नहीं है।

- किसी के माथे पर वे, सिर्फ हाथ रख देते तो
- किसी को बालों से पकड़ लेते
- तो किसी को को कहते---

''तू जा मैं देख लूंगा, तेरा काम हो जाएगा।''

- अगर कोई, गम्भीर बीमारी लेकर, उनके पास आता, तो उसके माथे पर, अपनी उंगली से **(Strokes)** लगा देते।

नागपुर में, एक दीप सेठी नाम का व्यक्ति, जो वहाँ कुछ दिनों से आ रहा था और लोगों को पूर्णतः ठीक होते देख रहा था, अपने घर से, कुछ खाली बोतले, लेकर आया। क्योंकि गुरुजी, जब लोगों को, जल घर ले जाने लेने के लिए कहते, तो जल घर लेकर जाने के लिए, उन्हें बोतल की आवश्यकता होती और वे लोग, फिर बोतल लाने के लिए, परेशान होकर दौड़ते थे।

लोगों को जल के लिए, खाली बोतल देते हुए, उसे ऐसा लगता था, कि वह उनकी सेवा कर रहा है। उसकी इस तरह, लोगों को बोतल लाकर देने के कार्य को, गुरुजी देख रहे थे।

कुछ दिनों के बाद, गुरुजी ने दीप सेठी से पूछा---

''तुम किस काम के लिए, यहाँ आते हो?''

वह बोला---

''गुरुजी, मेरा एक छोटा भाई, जिसका नाम यश है, वह मुम्बई मे रहता है और वह बहुत बीमार है। उसका बहुत इलाज करवाया, लेकिन कुछ भी फायदा नहीं हुआ। डॉक्टरों ने भी हाथ खड़े कर दिये हैं।''

उसने प्रार्थना की---

''.....गुरुजी, मेरी आपसे प्रार्थना है,
कि आप मेरे साथ मुम्बई चलो और,
मेरे भाई को बचा लो।''

गुरुजी उसके साथ, मुम्बई जाने को तैयार हो गये और बोले---

''ठीक है, फिलहाल यहाँ जो काम है,
वो मैं निपटा लूं, फिर मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।''

कुछ दिन बाद दीप सेठी, हवाई जहाज़ के दो टिकट ले आया,
पर गुरुजी बोले---

''मेरी हैसियत तो,
सिर्फ रेलवे के टिकट की ही है।''

दीप सेठी ने बहुत प्रार्थना की, परन्तु गुरुजी ने वह टिकट नहीं ली और कहा---

''...मैं तुम्हारे भाई को बचाने के लिए,
अपनी कमाई से खर्चा करूंगा।''

दीप सेठी बोला---

''गुरुजी, यह मेरा काम है,
आप अपना खर्चा क्यों करेंगें?''

आखिर दीप ने गुरुजी को मना ही लिया कहा--

''ठीक है, आप रेलवे के टिकट के पैसे दे दीजिए लेकिन कृप्या आप हवाई जहाज़ से यात्रा कीजिए।''

फ़्लाईट का समय शाम 8:30 बजे का था। तब तक गुरुजी अपनी सेवा समाप्त नहीं कर पाये और वह फ़्लाईट चली गई।

दूसरे दिन

.....भी ठीक ऐसा ही हुआ और फ़्लाईट, फिर चली गई।

तीसरे दिन

रात के 9 बजे, गुरुजी ने दीप से कहा---

''मैं जाने के लिए एअरपोर्ट निकल रहा हूँ।''

दीप बोला--

''गुरुजी, फ़्लाईट तो वहाँ से,
आधा घण्टा पहले निकल चुकी होगी...!!
इस समय एअरपोर्ट जाने का कोई फायदा नहीं है।''

गुरुजी बड़े रोबीले अंदाज में बोले--,

''आज मुझे जाना है,
और मुझे लिए बगैर, वह फ़्लाईट
भला कैसे उड़ सकती है?'' ....चलो।।

वे दोनों एअरपोर्ट पहुँचे----

कमाल हो गया---

फ़्लाईट तो वहीं थी, गुरुजी फ्लाईट में बैठे और फ़्लाईट उड़ गई।
(फ़्लाईट के लेट उड़ान का कारण, उसका लेट आना था)

गुरुजी, मुम्बई पहुँचे। दीप का एक भाई, गुरुजी व दीप को लेने एअरपोर्ट आया। गुरुजी दीप के घर, (मुम्बई के एक उपनगरी ''खार'' जहां दीप के घर है।), जैसे ही पहुँचे, वे 'फीएट' कार से उतरे और सीधा उसके घर की तरफ चल दिये और तब तक नहीं रुके, जब तक कि वे, उस कमरे में नहीं पहुँच गये, जहां दीप का भाई बीमार था---

आश्चर्य है----------

यह और चौंकानें वाली बात थी, कि गुरुजी यश सेठी और उसके कमरे को भी, पहले से जानते थे। इसका मतलब, गुरुजी को हर चीज का, हवाई जहाज़ पर बैठने से लेकर, उसके बीमार भाई और उसके कमरे के बारे में, पहले से पता था। जबकि उन्हें इस बारे में, किसी ने कुछ भी नहीं बताया था।

मैं कुछ कहने की हालत में नहीं था। स्पष्ट है कि ये किसी आम व्यक्ति के बस की बात नहीं थी। लेकिन गुरुजी एक आम व्यक्ति ही लग रहे थे, जैसा कि हमने देखा।

मैं अपनी आँखों और दिमाग से, क्या समझ सकता था? सिवाय इसके, कि गुरुजी से प्रार्थना करुं कि,

....गुरु जी, मुझे ऐसा ज्ञान और दृष्टि दो, कि
मैं आपकी इस लीला को, समझने का सामर्थ्य पा सकूं।
''.....कि आप कौन हो?''

चलो, अब आगे चलते हैं--------!!

यश सेठी अपने बिस्तर पर सीधा लेटा हुआ था, उसके शरीर में किसी तरह की, कोई हलचल नहीं थी। यहाँ तक कि कुछ खाने के लिए, वह अपना मुँह भी नहीं खोल पा रहा था। लेकिन उसकी साँसों को चलाने के लिए उसके मुँह में, केवल कुछ तरल पदार्थ ही डाले जा सकते थे। डॉक्टरों द्वारा दी गई जर्मन दवाईयों से भी, जब कोई असर नहीं हुआ, तो उन्होंने भी अपने आप को असहाय बताया-----

गुरूजी, ने उसके माथे पर हाथ रखा, उन्होंने उसके लिए एक बोतल में जल बनाया और उससे कहा---

''....विश्वास रखो, अब मैं तुम्हें खड़ा करूंगा।''

गुरूजी वहाँ कुछ दिन रहे और यश के शरीर के अन्दर कुछ बदलाव आने, शुरु हो गये। जब गुरूजी उसके पास आते, तो वह मुस्कुरा कर, उनका अभिवादन करता।

गुरूजी, एस. के. जैन साहब को, उसके पास छोड़ कर स्वयं नागपुर, अपने काम पर लौट गये।

*****

23. गुरुजी ने यश सेठी को ठीक किया

कुछ दिन बाद गुरुजी, दुबारा मुम्बई गये और यश सेठी के इलाज को आगे बढ़ाया। इस बार वे अपने साथ आर. पी. शर्मा जी व कुछ दूसरे शिष्यों को भी ले गये थे।

करीब एक महीने के बाद, गुरुजी फिर गये और एक रात गुरुजी ने यश से पूछा----

''....यश, क्या तुम अपने पैरों पर,
खड़ा होना चाहते हो?''

अब तक यश ने बोलना शुरु कर दिया था।
वह बोला----

''.....क्या ये सम्भव है, गुरुजी...!!''

गुरुजी ने उसके, हाथ पकड़े और बिस्तर से उठा कर खड़ा कर दिया।

यह क्या-------?

.....अगले ही पल, यश खड़ा हो गया।।

गुरुजी ने यश को आदेश दिया, कि तुम किसी को भी नहीं बताना, कि तुम खड़े हो सकते हो। कल से मैं, तुम्हें चलाऊँगा।

...यह विश्वास करने लायक बात नहीं थी
जो कुछ गुरुजी ने किया।

यश जोर-जोर से रोया, लेकिन यह सब एक बन्द कमरे में हुआ। इसलिए यह एक ऐसी सच्चाई है जो गुरुजी, यश के अलावा श्री आर. पी. शर्मा ही जानते थे।

गुरुजी ने यश के परिवार वालों से कहा--

''आप इस बार यश को लेकर
'महा-शिवरात्रि' पर गुड़गांव आओ।''

यश के परिवार के सभी सदस्य, भाई व बहनें और उसके माताजी गुड़गांव आये और जैसा कि गुरुजी ने आदेश था, वे यश को भी उठाकर, मुम्बई से विमान द्वारा दिल्ली ले आये।

जब विमान, दिल्ली हवाई अड्डे पर उतरा, तो यश ने परिवार वालों से, किसी तरह की मद्द लेने से इंकार कर दिया और कहा, कि वह स्वयं अकेला, अपने पैरों पर चलकर एअरपोर्ट के हॉल तक जायेगा। यह सब सुनकर, उसके परिवार के सभी लोग अचम्भित हो गये।

वे सभी लोग गुड़गांव पहुँचे और उन्होंने 'महागुरु' को प्रणाम किया। उसकी बहनों, भाईयों और यहाँ तक की उसकी माँ की आँखों में भी, आँसू थे।

उसकी माँ ने, मेरी पत्नी के भाई से कहा ''कुलदीप, मैं तो अपने बेटे को, खो चुकी थी। गुरुजी ने ऐसा 'चमत्कार' किया, कि यह आज यहाँ ज़िन्दा खड़ा है।

उसका पूरा परिवार 'महा शिवरात्रि' तक गुड़गांव में ही रहा और उसके बाद, न ब्यान कर सकने वाली खुः शिंया लेकर अपने घर, मुम्बई लौट गया।

....गुरुजी ने, वो कर दिखाया,
जो इस संसार में,
कोई और कर ही नहीं सकता था...।

जाते-जाते गुरुजी ने, यश को ये आदेश भी दिया कि----

''जिन्दगी में तुम कभी भी,
मछली नहीं खाना।''

गुरुजी ने, इस परिवार पर अपार कृपा की,
उन्होंने यश के दो भाईयों को भी, आध्यात्मिक शक्तियाँ प्रदान की।

यश सेठी मुम्बई, अपने घर पहुँचा, तो उस दिन के बाद, वह अपनी निजी जिन्दगी, एक आम आदमी की तरह जीने लगा। वह खाता-पीता और अच्छी तरह से चलता था। जब कि उसके लिए पहले, एक कदम चलना भी, दूर की बात थी। वह तो अपनी टाँग भी नहीं उठा सकता था। ना ही अपने हाथों से, अपना कोई काम ही कर सकता था।

गुरुजी ने, इस परिवार पर अपार कृपा की थी। उन्होंने अपने घर में, गुरुजी का स्थान बना लिया। गुरुजी ने उनके दो भाईयों को भी, आध्यात्मिक शक्तियाँ प्रदान की और आदेश दिया, कि वे भी, लोगों की भलाई के लिए, स्थान पर सेवा करें।

गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा---

''यह मेरा मुम्बई का स्थान है। जो कोई भी इस स्थान पर कैसी भी समस्या लेकर आयेगा, चाहे वह शारीरिक हो, मानसिक या फिर सामाजिक, उसका समाधान हो जायेगा।''

यह उस परिवार के लिए, एक वरदान था। लोगों ने वहाँ आना शुरु कर दिया और वे ठीक भी होने लगे। गुरुजी ने उन्हें 'महा-शिवरात्रि' और 'गुरु-पूर्णिमा' पर, गुड़गांव आने की हिदायत भी दी और साथ-साथ यह भी कहा, कि यदि कोई गम्भीर बीमारी की अवस्था मे हो, तो उन्हें भी गुडगांव जरुर लेकर आयें।

एक दिन यश का भाई, घबराया हुआ गुडगांव आया और गुरूजी से प्रार्थना करते हुए बोला, कि यश की हालत फिर से खराब हो गयी है।
गुरूजी बोले---

''ये तो, हो ही नहीं सकता था,
जरूर उसने दुबारा,
माँस या मछली का सेवन किया है।''
इसके लिये उसके भाई ने हाँ कहा।

तभी गुरूजी, मुझे तथा कुछ अन्य शिष्यों को साथ लेकर, हवाई जहाज़ से, मुम्बई के लिए रवाना हो गये। जैसे ही हम मुम्बई उनके घर पहुंचे, वहाँ का नज़ारा बहुत अजीब था।

यश सीधा लेटा हुआ था और उसका शरीर बिलकुल ठण्डा पड़ चुका था। उसके परिवार के सदस्य जोर-जोर से, रो रहे थे और रोते-रोते ही वे, गुरूजी के पास आकर उनसे मिले। इसी बीच गुरूजी ने मुझे आदेश दिया, कि मैं जा कर देखूं, कि यश की क्या हालत है। मैं वहाँ गया। वहाँ डॉक्टर खेर मौजूद थे। वे यश की सारी हालत से वाकिफ थे, उन्होंने दुबारा उसका ब्लड़ प्रेशर चेक किया, जोकि ज़ीरो था। मैंने वापिस आकर यह गुरूजी को बता दिया

लेकिन गुरूजी के चेहरे पर, न तो किसी प्रकार की चिन्ता या माथे पर कोई शिकन ही, नजर आ रही थी। वे यश के कमरे में गये और उसे आशीर्वाद दिया। इस बीच डॉक्टर, उसकी टूटती हुई नब्ज़, चेक करके गुरूजी को बता रहा था। गुरूजी लगातार उस पर अपने आशीर्वादों की वर्षा कर रहे थे।

सांयकाल का समय था, कि अचानक यश की पत्नी कमरे में आयी और गुस्से से परिवार वालों पर बरसीं और कहा---

''क्यों मेरे पति को,
तुम लोगों ने अब तक, घर में रखा हुआ है....!!
....इसे अस्पताल में क्यों नहीं ले जाते?

उसके गुरूजी के प्रति, इस प्रकार के अविश्वास-पूर्ण व्यवहार को देखते हुए, सभी लोग स्तब्ध रह गये और गुरूजी ने उसे एम्बुलैन्स बुलाने के लिए कहा और उसे अस्पताल ले जाने की आज्ञा दे दी। लेकिन आर. पी. शर्मा और संदीप सेठी (यश के छोटे भाई) को भी, डॉक्टर खेर के साथ अस्पताल भेज दिया।

जब यश को एम्बुलैन्स में लिटाया, तो वह जोर से चिल्लाने लगा, बोला----

''मैं त्रिलोकी नाथ हूँ।''

केवल उसका सिर हिल रहा था, लेकिन बाकी शरीर में कोई हरक़त नहीं हो रही थी। उसकी नब्ज़ और ब्लड प्रेशर, अब भी ज़ीरो था।

डॉक्टर खेर को, कुछ समझ नहीं आ रहा था। क्योंकि उसने कभी, न ऐसा देखा या फिर मैडिकल सांईस मे ही, कहीं पढ़ा था। लेकिन वह गुरुजी में विश्वास रखता था। वे अस्पताल पहुँचे और डॉक्टरों ने उसकी जाँच पड़ताल करने के बाद, आख़िर उनके परिवार वालों को दुः खद समाचार दिया।

आर. पी. शर्मा जी, जिन्हें इस परिस्थिति से निबटने के लिए, गुरुजी ने पहले ही निर्देशित कर दिया था। अतः उन्होंने संदीप सेठी को, यश के हाथ पकड़ने को कहा और स्वयं उसके पैरों के अँगूठे को पकड़ा और जैसा गुरुजी ने कहा था, कर दिया।

तभी अचानक चमत्कारिक रुप से, यश में जीवन के चिन्ह, नजर आने लगे। उसका ब्लड प्रेशर और नब्ज़ नियमित होने लगी। तभी मैंने अचानक मुड़कर देखा कि आर. पी. शर्मा जी, सोफे पर बैठे-बैठे सो गये और उनका रंग ताँबे की तरह, भूरा पड़ गया था। परन्तु संदीप सेठी सामान्य थे।

.....यश सेठी ने एक बार फिर से अपनी,
सामान्य जिंदगी जीना शुरु कर दिया...।।

....कुछ दिन वहाँ रहने के बाद गुरुजी,
आर. पी. शर्मा और
अपने अन्य शिष्यों सहित वापिस लौट आये।

*****

24. गुरुजी के साथ लंदन यात्रा।

गुरुजी मुझे अपने साथ लंदन ले गये। मैं अपने गुरुजी के साथ और वह भी विदेश की धरती पर था। सम्पूर्ण वातावरण जैसे आनन्दमय था।

गुरुजी के, एक मिनट के दर्शन के लिए हजारों लोग, घण्टों तक लम्बा इन्तजार करते थे।

कुछ लोग कहते--

''.....गुरुजी आते हैं
परन्तु जल्दी-जल्दी चले जाते हैं''

तो कुछ लोग कहते--

''.....हमें तो गुरुजी के दर्शन किये, हफ़्तों बीत गये''
और कुछ लोग महीनों बीत गये बताते।

मुझ पर गुरुजी की कितनी अपार कृपा थी, कि विमान में, मैं गुरुजी के साथ बिना किसी हस्तक्षेप (दखल-अन्दाजी) के, उस वातावरण का भरपूर सुः ख का आनन्द ले रहा था।

गुरुजी के साथ, लॉबी में इन्तजार करते हुए, मुझे याद आया कि जब मेरी मुलाकात, एक बहुत नामी ज्योतिषी से हुई थी। गुरुजी के बहुत अच्छे मूड़ को देखते हुए, मैं उनकी तरफ मुड़ा और बोला---

''गुरुजी, बहुत साल पहले, मैं एक ज्योतिषी से मिला था और उस समय उसने, मुझसे बीस गुना फीस लेकर, मुझे मेरा भविष्य बताया था। और कहा था कि मैं अपने जीवन में कभी भी, विदेश यात्रा नहीं कर सकूंगा। परन्तु वह बहुत झूठा था।''

गुरुजी बोले ---

''.....नहीं बेटा, वह बिलकुल ठीक था''

इस पर मैं बोला---

''.....पर गुरुजी, आज मैं लंदन में हूँ,
...और यह विदेश ही तो है!!''

गुरुजी ने मेरी बात सुनी और कहा----

''....तू अपने गुरु के साथ है। और जब गुरु साथ होता है तो भाग्य के सारे नियम पीछे रह जाते हैं। जब गुरु अपने शिष्य को अपनी कृपा दृष्टि में ले लेता है तो वह स्वयं उसका भाग्य लिखता है।''

गुरुजी बोले----

''तुम अपना ध्यान मुझमें केन्द्रित करो और सच्चाई को समझो और जो भी विचार तुम्हारे समक्ष आयें, उन्हें दिल, दिमाग और शारीरिक रूप से अपने गुरु के सामने रखो। फिर जो गुरु कहे, उसे बिना किसी सोच विचार के, अपनी ''मैं'' को अपने से दूर रख के, कर दो।

यहाँ पर मैं, किसी संत के द्वारा पंजाबी में कही गयी,
निम्न पक्तियाँ दोहराना चाहूँगा.....

*'' **धर जा, ते मर जा** ''*

अर्थात् अपने अहम् का, गुरु के समक्ष त्याग कर दे और जैसा गुरु कहे, वैसा कर दे। उसमें से यदि मैं कुछ ना भी कर पाया, तो गुरु के गुरु, 'महागुरु' उसे स्वयं कर देंगे।

.....जैसे मेरे गुरुजी

*****

25. रात के एक बजे, शिष्यों के लिए, नीम्बू शिकन्जवी।

एक रात गुड़गांव स्थान पर, गुरूजी अपने शिष्यों के साथ बैठे हुए थे, कि अचानक उन्होंने, बिट्टू को कहा कि वह जाकर माँ से कहे, कि सब शिष्यों के लिए शिकन्जवी बनायें।

गर्मी बहुत थी और सभी को प्यास भी लगी थी। माता जी ने आकर बताया, कि घर में नीम्बू नहीं हैं। उस वक्त आधी रात को, नीम्बू के बग़ैर शिकन्जवी, कैसे बन सकती थी?

गुरूजी बोले--

''जब मैंने शिकन्जवी बनाने के लिए कहा है,
तो नीम्बू वहीं होंगे।
....जाओ, और फ्रिज़ में देखो।''

माताजी अन्दर चलीं गयीं और कुछ देर बाद फिर वापिस आकर बोलीं---

''...फ्रिज़ में नीम्बू नहीं हैं।''

गुरूजी ने कहा----

''जब मैंने शिकन्जवी बनाने के लिए, कह दिया है,
तो ये कैसे सम्भव हो सकता है,
कि नीम्बू वहाँ पर न हों।
.....जाओ और फ्रिज़ में दुबारा देखो।''

माता जी दुबारा अन्दर गईं और जब वापिस आईं, तो इस बार उनके हाथ में, एक लिफाफा था, जिसमें 5/6 नीम्बू थे।

मैं गुरूजी के बिलकुल साथ बैठा था। मै मुस्कुराया और धीरे से गुरूजी के कान में, फुसफुसा कर बोला--

''.....गुरूजी, माताजी ठीक कह रही थी।
कृप्या आप बताईए कि ये नीम्बू,
आपने कहां से लाकर, फ्रिज़ में रख दिये...?''

गुरूजी ने मेरी बात नज़र अंदाज करते हुए, मेरे प्रश्न को सुना-अनसुना कर दिया और हम शिष्यों पर, जो वे ज्ञान की वर्षा कर रहे थे, फिर से करने लगे। वहाँ पर सभी शिष्य मौजूद थे। परन्तु हममें से, किसी में भी, इतनी हिम्मत नहीं थी, कि वह गुरू जी से उस रात, यह बात दुबारा पूछता।

*****

26. गुरुजी ने, पांच-छः महीने पुरानी बीमारी, एक मिनट में ठीक की।

महागुरुजी के एक शिष्य की चार बेटियाँ हैं और सभी का गुरुजी में, दृढ़ विश्वास है। उस शिष्य की बड़ी बेटी, एक बार बहुत अधिक बीमार पड़ गई। आम तौर से बीमार पड़ने पर गुरुजी उन्हें लौंग, इलायची व जल देते और उसकी परेशानी दूर हो जाती थी। लेकिन इस बार कुछ ऐसा हुआ, कि उसे बुख़ार आया और लगातार दस बारह दिन तक ठीक नहीं हुआ।

उसके इस लगातार बुख़ार को देखते हुए, उस शिष्य के बड़े भाई, गुरुजी के उस शिष्य के पास आये और बोले---

''.....जब बुखार ठीक नहीं हो रहा है तो तुम,
डॉक्टर के पास जाकर, उसकी सलाह क्यों नहीं लेते?''

तो उस शिष्य ने जवाब दिया---

''...गुरुजी अपने आप ठीक कर लेंगे।''

जब उस शिष्य के बड़े भाई ने कुछ दिनों के बाद, दुबारा उनकी बेटी के बारे में पूछा, तो शिष्य ने कहा--

''...उसे अपने गुरुजी पर पूरा विश्वास है
वह दो-एक दिनों में, अपने आप उसे ठीक कर देंगे।''

समय बीतता गया और इसी तरह से, तीन महीने का समय निकल गया। तब उस शिष्य के बड़े भाई, फिर आये और इस बार, अपनापन जताते हुए बोले--

''मैं इसे अस्पताल ले जा रहा हूँ या फिर डॉक्टर को घर बुलाता हूँ। घर में मैं भी बड़ा हूँ और मेरा भी फर्ज़ बनता है, कि मैं बच्चों का ध्यान रखूं।''

उनका एक संयुक्त परिवार था और जाहिर है, बड़ा होने के नाते, उनका ये सब कहने और करने का, हक बनता था। उनका एक बहुत बड़ा दुमंजिला घर था। उसमें चारों भाईयों का परिवार, संयुक्त रुप से रहता था। गुरुजी के शिष्य ग्राऊन्ड फ्लोर पर रहते थे।

मामला गम्भीर था। एक तरफ तो, गुरुजी में विश्वास और दूसरी तरफ, पूरे परिवार का दबाव। गुरु शिष्य अपने बड़े भाई से, पन्द्रह साल छोटे हैं। अतः उन्होंने अपने भाई से प्रार्थना करते हुए, कुछ और समय माँगा। लेकिन उनके भाई, किसी भी तरह से तैयार नहीं हुए। जब वे अपने छोटे भाई को, लड़की पर अपनी इच्छा थोपने का दोषी ठहराने लगे, कि तुम ही उसे डॉक्टर के पास नहीं ले जाना चाहते, तो गुरु शिष्य ने अपने भाई को, इसके लिए अपनी बेटी से ही, बात करने को कहा।

उनके बड़े भाई ने उस लड़की से, बात की तो उनकी बेटी बोली---

''.....बड़े पापा मैं जानती हूँ कि मैं बीमार हूँ।
...यदि गुरुजी मुझे ठीक नहीं कर सकते, तो मैं भी जीने के लिए इच्छुक नहीं हूँ।''

शिष्य के बड़े भाई, उस बच्ची की यह बात सुनकर, एकदम स्तब्ध रह गये। उन्होंने यह सोचा भी नहीं था, कि इतनी कम उम्र में भी वह बच्ची, गुरूजी में इतना दृढ़ विश्वास रखती होगी...!! वे आगे कोई बहस किये बिना, वहाँ से चले गये।

उन्होंने वहाँ से जाने के बाद, अपने अन्य दोनों भाईयों को भी, लड़की को मनाने के लिए भेजा। उन दोनों ने भी, लड़की को बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन जब वह इस कार्य में नाकाम रहे, तो आखिर में लड़की से बोले---

''...अगर तुम्हें गुरूजी में इतना ही विश्वास है,
तो ठीक है बेटा, हम भगवान से यही प्रार्थना करते है, कि वह
तुम्हें शक्ति दे और अपने गुरू में,
तुम्हारा विश्वास कायम रखे।

दो महीने, और बीत गये।

अब तो यह हालत हो गई, कि यदि उस लड़की को शौच आदि के लिए भी जाना हो, तो उसके पिता उसे, अपनी बाँहों में उठा कर, ले जाते और वापिस लाकर बिस्तर पर लिटा देते। अब तो अपने पैरों पर भी खड़ा होना, उसके लिए मुश्किल था। वह बहुत अधिक कमज़ोर हो चुकी थी।

आखिर....
वह सुनहरी सुबह आ ही गयी, जिसका इतने लम्बे समय से इंतजार था। ....सुबह-सुबह गुरूजी उसके कमरे के जाली वाले दरवाजे के बाहर, खड़े थे।

उस ने जैसे ही उन्हें देखा अपने पिता को हिम्मत बटोरते हुए पुकारा.....

''पा.....पा....., गुरूजी.....!!''

गुरूजी का शिष्य, दूसरे कमरे से दौड़ता हुआ आया और उसने दरवाजा खोला। जैसे ही गुरूजी अन्दर आये, वह लड़की उठी और उसने गुरूजी की तरफ कदम बढ़ाये। परन्तु जैसे ही गुरूजी के पास पहुँचकर, वह गिरती, गुरूजी ने अपनी बाँहों का सहारा देकर, उसे संभाल लिया और फिर लिटा दिया।

गुरूजी ने अपना हाथ, उसके माथे पर रख दिया तथा मुस्कुराते हुए, उस लड़की को देखा। उस लड़की की आँखें खुः शी से चमक उठी और उसका चेहरा भी चमकने लगा। वह लगातार बस गुरूजी को देखे जा रही थी और बार-बार यही कहे जा रही थी---

''.....गुरूजी, ...आप ...आ गये?''

और गुरूजी, उसे आशीर्वाद पर आशीर्वाद दिये चले जा रहे थे। उसे परम आनन्द की अनुभूति, महसूस हो रही थी।

एका-एक गुरूजी उठे और अपने ऑफिशियल टूअर पर, हिमाचल प्रदेश जाने के लिए, अपनी जीप की तरफ चल दिये। उनके शिष्य भी गुरूजी के पीछे-पीछे चल दिये। जब गुरूजी अपनी जीप में बैठ गये और उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो वह लड़की अपने बग़ीचे में, बस दूर.... ....खड़ी गुरूजी के दर्शन किये जा रही थी और गुरूजी ने भी उसे दूर से देखा और अपने शिष्य को आदेश दिया---

''....बेटा, जाओ और उसे संभालो,
चूंकि जैसे ही, मेरी जीप उसकी आँखो से औझल होगी,
वह वहीं पर गिर पड़ेगी।''

तब उनके शिष्य ने, वैसा ही किया। बाद में उस शिष्य को पता चला, कि जैसे ही गुरूजी, उनके घर से बाहर निकले, उनकी बेटी तो ठीक हो गई। लेकिन बड़ी अज़ीब बात हुई, गुरूजी की अपनी बड़ी बेटी रेनू, उसी दिन बीमार पड़ गई और उसे भी, ठीक होने में, बहुत समय लगा।

अब सोचो,
देखो और समझने की कोशिश करो।

अपने विवेक का इस्तेमाल करके,
गुरूजी को पहचानने की कोशिश करो।

सोचो, कि पांच छः महीने की लम्बी बीमारी,
गुरूजी ने कैसे एक मिनट मे,
.....कैसे ठीक कर दी।

....गुरूजी .....कौन .....हैं??

पांच छः महीने की लम्बी बीमारी, गुरूजी के कुछ मिनटों के दर्शन देने से ही, दूर हो गई.....?

हर किसी का दिमाग, पता नहीं कहाँ-कहाँ की और कैसी-कैसी बातें सोचता रहता है। क्योंकि, उसके लिए तो कैसी भी, कोई सीमा है ही नहीं।

जब बड़े-बड़े साधु और सन्त भी, इसे सीमा में बाँधने में असमर्थ रहे हैं, तो इसलिए सिर्फ यहाँ एक ही रास्ता है, कि गुरूजी के प्रति समर्पण कर दो। एक वो ही है, जो इस दिमाग पर काबू पा सकते हैं और आप एक मित्र की तरह ''ना कि एक नियन्त्रक की तरह'' इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

इसलिए इसमे, दिमाग लगाने की जरुरत नहीं है कि गुरूजी क्या हैं... और वह कैसे कर सकते हैं..?, ऐसा कि केवल भगवान कर सकता है। अतः यह बात गुरूजी के कान में डाल दो और उत्तर की प्रतीक्षा करो।

उपरोक्त उपकथा, उस व्यक्ति को पूर्णरूपेण समझ आयेगी, जो पाठक, इस आध्यात्मिक तथ्य को जानने के लिये महत्वाकांशी है।

गुरूजी कहते हैं-----
कि प्यार और लोगों की सेवा के लिये, अपने दरवाज़े हमेशा खुले रखें। 'गुरू' को जानने के उपरान्त, न जाने इस आध्यात्मिक-ज्ञान को जानने की, आपकी बारी कब आ जाये...? इसलिए आप प्यार से लोगों की सेवा में लगे रहिए। अपनी एक पारिवारिक जिन्दगी जीते हुए, ईमानदारी से अपना काम करते हुए तथा अपने परिवार के प्रति, जो कुछ संसारिक जिम्मेदारियाँ हैं, वह भी बड़ी नम्रता से निभाते हुए, तुम मेरा इन्तजार करो।

*****

27. जब मेरी बेटी मुक्ता की शादी थी।

''गुरुजी, मेरी बेटी मुक्ता की शादी में, केवल 10-11 दिन ही शेष बचे हैं, मैं क्या करुंगा...?''

''शादी के लिए सामान खरीदना है,
सारे इन्तजाम करने है और
मेरी पेमेन्टस भी नहीं आ रही हैं।''

गुरुजी बोले---

.....मैं अपने आप कर लूंगा।
...तू चिन्ता न कर।

मैंने कहा---
''.....गुरुजी, शादी मतलब गहने चाहिए,
कपड़े लेने हैं और शादी की पार्टी के लिए,
कुल मिलाकर लाखों रुपये चाहिए।''

गुरुजी बोले---
''.....मेरी पोती है। मैं कर लूंगा।
मैं अट्ठन्नी में भी शादी कर लूंगा।
....तू जा और अपने, दूसरे काम देख।''

गुरुजी के इस अंदाज को देखकर, ऐसा लग रहा था, कि जैसे मेरी बेटी की शादी में, मेरी कोई जिम्मेदारी थी ही नहीं और वे नहीं चाहते थे, कि उनके इस काम में, मैं कोई दखल-अंदाजी करुं।

बड़ी अजीब बात थी, कि सारे काम अपने आप होते चले गये। कुछ लोगों ने, जैसे कि केवल गुप्ता और कुछ अन्य लोग, मेरे पास आये और बोले---

''आप सिर्फ स्थान पर बैठ कर सेवा कीजिए।
बाकी के सारे काम हो जाऐंगें।''

आख़िर...
सब काम बड़ी खूबसूरती से हो गये और कहीं पर भी पैसे की कोई कमी, महसूस नहीं हुई। मानने की बात नहीं है, परन्तु इतना शानदार विवाह और खर्चे का पता भी न चला.....!!

*****

28. एक छोटी लड़की, जिसको दौरे पड़ते थे। गुरुजी ने ठीक किया

गुड़गांव स्थान पर, 'बड़े वीरवार' की सेवा चल रही थी। वहाँ एक छोटी सी लड़की, जिसका नाम पम्मी था और उसकी उम्र लगभग छः या सात साल की होगी, अपने अंकल के साथ आई।

वह देखने में तो बिलकुल स्वस्थ नज़र आ रही थी, लेकिन अचानक वह बेहोश होकर, नीचे गिर जाती थी। उन्होंने उसे कई डॉक्टरों को दिखाया, लेकिन उसकी बीमारी का, कोई पता नहीं चल पा रहा था।

गुरुजी ने उसे लौंग, इलायची और जल दिया और साथ में उसके अंकल को, यह भी आदेश दिया कि उसे अगले 'बड़े वीरवार' पर गुड़गांव जरुर लेकर आये। वह परिवार दो बार इस परेशानी के लिए, स्थान पर आया और उसके बाद वह लड़की ठीक हो गई।

लेकिन फिर वह परिवार गुरुजी का आशीर्वाद लेने, लगातार ही आने लगा और वह लड़की अब बिलकुल ठीक है।

*****

29. जब एक जवान लड़की ने परेशानी में आकर तेजाब पी लिया, गुरुजी ने उसे बचाया।

एक लड़की, जिसकी उम्र लगभग, सोलह साल की थी, ने किसी निराशा में आकर, तेजाब पी लिया। उसके परिवार वाले दौड़ते हुए, गुरुजी के पास आये और उनसे प्रार्थना की। गुरुजी ने अपने प्रिय शिष्य श्री आर. पी. शर्मा जी को आदेश दे कर भेज दिया, कि वे उसे जूठा जल पिला दें।

शर्मा जी ने जैसे ही उसे जल दिया, उसने उल्टी कर दिया। शर्मा जी ने दुबारा उसी तरह से, उसे जल पिलाया और उसने फिर से उल्टी कर दिया। शर्मा जी ने उसे, कई गिलास जूठा जल पिलाया। आख़िर एक गिलास उसने पचा लिया और उसकी तबीयत में कुछ सुधार नज़र आने लगा।

शर्मा जी ने उसके परिवार वालों को, आदेश दिया कि वे लगातार पन्द्रह दिनों तक उसे, स्थान पर लायें और इसी तरह जल पिलायें, ताकि वह ख़तरे से बाहर हो जाए।

वह लड़की आज भी जीवित है,
उसकी शादी भी हो गई और उसके बच्चे भी हैं।
उसका पति भी,
गुरुजी में बहुत आस्था रखता है।

*****

30. मेरा यूरोप और अमेरिका का वीज़ा।

गुरूजी के आदेश का पालन करते हुए, मैं वीज़ा लेने के लिए, अमेरिकन एम्बैसी गया और सम्बधित कागज़ात जमा कराये। लेकिन उन्होंने मुझे, वीज़ा देने से मना कर दिया और कागज़ात वापिस लौटा दिये।

शाम को मैं, गुरूजी के पास गया और उन्हें प्रणाम किया,
तो उन्होंने मुझसे पूछा---

''तुम वीज़ा के लिए गये थे,
...क्या तुम्हें वीज़ा मिल गया है?''

मैंने एम्बैसी द्वारा लौटाये गये कागज़ात, गुरूजी को सौंपते हुए कहा---

''उन्होंने मुझे वीज़ा देने से मना कर दिया है।''

ऐसा सुनते ही गुरूजी क्रोध में आकर बोले---

''...मेरे शिष्य को वीज़ा देने से,
इन्कार करने वाला, अभी पैदा नहीं हुआ।''
और इस बात को, यहीं खत्म कर दिया।

क़रीब एक हफ़्ते बाद, हमेशा की तरह, मैं गुड़गांव स्थान पर रुका हुआ था, कि एक सेवादार ने मेरे पास आकर मुझे, सुबह छः बजे जगाया और कहा, कि आपको गुरूजी बुला रहे हैं। मैं जल्दी-जल्दी वहाँ से उठा और ऐसे ही दौड़कर, गुरूजी के पास पहुँचा। मैंने उन्हें प्रणाम किया।

उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा---

''बेटा, अपनी माँ के पास जाकर नाश्ता कर लो और यहाँ से सीधा अमेरिकन एम्बैसी चले जाओ, आज तुम्हें वीज़ा मिल जायेगा।''

जैसा गुरूजी ने आदेश दिया था, मैं अमेरिकन एम्बैसी गया और अपना पासपोर्ट और वीज़ा के लिए आवेदन पत्र, वहाँ लगे बाक्स में डाल दिया और स्वयं जाकर प्रतीक्षा हॉल में, इन्तजार करने लगा।

करीब दो घण्टे के इन्तजार के बाद, मेरा नाम पुकारा गया। मैं इन्टरव्यू के लिए कॉउन्टर पर पहुँचा। मैंने देखा, कि मेरा इन्टरव्यू लेने के लिए, आज फिर वही लड़की बैठी थी, जिसने पिछले हफ़्ते मुझे, वीज़ा देने से मना किया था।

वह बोली---

''.....जब मैंने तुम्हें पहले ही वीज़ा देने से,
मना कर दिया था तो तुम,
आज फिर से क्यों आये हो?''

मैं उसके इस तरह के सवाल के लिए, तैयार नहीं था। तभी मेरे दिमाग में अचानक से, कुछ आया और मैं सोचने लगा, कि मैं इससे इतना बड़ा हूँ, और यह मुझसे किस तरह से बात कर रही है। मैं यहाँ यह नहीं बता सकता, कि वहाँ मैंने किस तरह का व्यवहार किया, लेकिन मैंने कॉउन्टर पर जोर-जोर से बोलना शुरु कर दिया और बहुत नाराज़गी दर्शाने लगा।

तभी उनका एक ऑफिसर वहाँ आ गया और वह, उस लड़की को अचरज भरी नजरों से, देखते हुए बोला--

''क्यों क्या हुआ?''

मैंने उस लड़की को जवाब देने का समय न देते हुए, उल्टे उसकी शिकायत, उस ऑफिसर को करते हुए कहा---

''देखिए, इस लड़की ने मुझे गाली दी है।''

उसने, उस लड़की की तरफ, प्रश्न भरी हुई नजरों से देखा।
वह लड़की बोली--

''नहीं सर.....!! मैंने गाली नहीं दी।''

मैं तुरन्त, उस ऑफिसर की तरफ मुड़ा और बोला---

''ये मुझे वीज़ा देने के लिए ऐसे भी मना कर सकती थी।
ये आपकी मर्जी है। क्योंकि वह आपका देश है।
लेकिन इस तरह से, ...यह मेरी बेइज्जती तो, नहीं कर सकती ना?''

वह ऑफिसर, उस लड़की को अपने साथ, पीछे ऑफिस में ले गया और कुछ समय बाद वह लड़की, वापिस कॉउन्टर पर आई और बड़े आराम से बोली---

''...आप कितने समय तक
अमेरिका में रुकना चाहते हैं?''

मैंने भी उसे शान्ति से जवाब दिया---

''...तीन या चार सप्ताह तक''

वह बोली---

''.....पांच सप्ताह का समय बहुत है?''

कहकर, उसने मेरा पासपोर्ट और वीज़ा, मुझे दे दिया।

जब मैं वहाँ से वापिस बाहर निकला, तो एक महिला ने मुझे
पंजाबी भाषा में कहा---

''जिस तरह का व्यवहार, आप इनके स्टाफ से, अन्दर करके आये हैं, इस पर तो आपको, जीवन भर वीज़ा नहीं मिल सकता।''

मैं उस महिला की तरफ ऐसे देख रहा था, कि जैसे मैंने किया ही क्या है?
वह बोली----

''भईया, जिस तरह से, इतने जोर से शोर मचा कर आप बोल रहे थे, इस प्रतीक्षा हॉल में बैठा हर व्यक्ति, एक दूसरे की तरफ देख रहा था।''

लेकिन मैंने, ऐसा कुछ भी महसूस नहीं किया था। तभी मैं अपने होश में वापिस आया और सोचने लगा।

कमाल है---------
मैं हॉल में स्टाफ से, इतने जोर से शोर मचा-मचा कर बोल रहा था, और मुझे इस का आभास ही नहीं.....? वे सब, लोग मुझे बता रहे थे, कि किस तरह से मैं, अँग्रेजी में बातें कर रहा था?

मैं अच्छी तरह से जानता हूँ, कि ऐसी फर्राटे-दार अँग्रेजी बोलना, मेरे अपने बस की बात नहीं थी।

एक बार मना होने के बाद, अमेरिका का वीज़ा मिलना एक बहुत बड़ी बात थी। लेकिन उससे भी बड़ी बात तो यह थी, गुरूजी जानते थे, तभी तो सुबह उन्होंने मुझे आदेश दिया, कि आज तुम एम्बैसी जाओ----
.....तुम्हें वीज़ा मिल जायेगा।''

*****

31. जब गुरुजी परीक्षा देने गये।

ट्रेनिंग के दौरान, परीक्षक (Examiner) ने, एक दिन गुरुजी को चेतावनी दे डाली, कि---

''वह उन्हें फाईनल परीक्षा में फेल कर देगा।''

उस समय गुरुजी ने, भूमि सर्वेक्षण विभाग में, सहायक वैज्ञानिक (Assistant Scientist) के पद का, कार्यभार संभाला था। तब वे ख़ाली समय में, लोगों की सेवा करते और उनसे बातचीत करते थे। उनके कैम्प के इंचार्ज ने यह देखा और एक दिन...

...गुरुजी को कहा---

''आप अपनी पढ़ाई में ध्यान दीजिए,
ना कि लोगों से बातचीत में।''

वह नहीं जानता था, कि गुरुजी क्या कर रहे हैं? वह उनसे एक प्रकार से, चिढ़ने लगा।

आखिर झुन्झलाहट में एक दिन, उसने गुरुजी को चेतावनी दे डाली, कि वह उन्हें फाईनल परीक्षा में फेल कर देगा।

फाईनल परीक्षा का दिन आ गया और सब लोग, परीक्षा देने के लिए बैठे। वही ऑफ़िसर गुरुजी पर, बड़ी गौर से नज़र रखे हुए था। वह हैरान था, कि गुरुजी बड़े आराम से पूछे गये, सभी प्रश्नों के उत्तर लिख रहे थे और वह भी बिलकुल ठीक-ठीक।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था, कि यह कैसे सम्भव हो सकता है....!! क्योकि वह अच्छी तरह से जानता था, कि गुरुजी ने अपनी पढ़ाई की तरफ, बिलकुल ध्यान नहीं दिया था। वह अत्याधिक परेशानी की हालात में, बाकी लोगों से बोला---

''....ठीक है, देखते हैं, ये प्रैक्टीकल परीक्षा में,
...कैसे पास होता है?''

पत्थरों को पहचान करने के लिए, प्रैक्टीकल परीक्षा रखी गयी थी। बाकी लोगों को तो उसने, दो तरह के ही पत्थर, एक सेन्ड स्टोन और दूसरा लाईम स्टोन, पहचानने को दिये। लेकिन जब गुरुजी का नम्बर आया तो उसने, बहुत से और भी पत्थर मिलाकर, उनके सामने मेज पर रख दिये और सोचा, कि इन सब को पहचानना, गुरुजी के लिए असम्भव होगा।

जब उसने गुरुजी से पूछा, तो कमाल हो गया---

गुरुजी ने तो सबको, अच्छी तरह से पहचान कर, सही-सही जवाब दे दिया। वह ऑफ़िसर यह सब देखकर, दंग रह गया। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल पाया।

परीक्षा का नतीजा आया, गुरुजी पास हो गये और वह भी पूरे बैच में द्वितीय स्थान पर रहे।

जिज्ञासावश मैंने गुरुजी से पूछा---

''गुरुजी, आप द्वितीय स्थान पर क्यों,
...आप प्रथम स्थान पर क्यों नहीं आये...?''

गुरुजी बोले---

''बेटा, हमारे बैच में, एक लड़का था। जो अपने पूरे कैरियर में, हमेशा प्रथम ही आता था और मैं नहीं चाहता था, कि उसके कैरियर का रिकार्ड खराब हो।''

क्या बात है.....!!

- *गुरुजी ने बिना, एक दिन की भी पढ़ाई किये हुए, परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।*
- *पत्थरों को जाने बिना ही, उन्होंने पत्थरों के बारे में, ठीक-ठीक जानकारी दी।*
- *अपने से ज़्यादा, अपने साथी का ध्यान रखा, कि कहीं उसके कैरियर का रिकार्ड खराब न हो जाये।*

आफरीन..... गुरुदेव.....

*****

32. गुरु पूर्णिमा.....।।
जब गुरुजी ने बरसात कराई।

पूरे साल में, केवल एक ही दिन आता है, जिस दिन सभी शिष्य, गुरुजी की पूजा करते हैं।

गुरुपूर्णिमा के दिन से कुछ दिन पहले, सम्पूर्ण भारत से ही क्या, विदेशों से भी लोग, उनकी इस पूजा में सम्मिलित होने के लिए, आते हैं। गुरुजी अर्द्धरात्रि 2:15 बजे से आशीर्वाद देना शुरु करते और अगले दिन मध्य-रात्रि तक, यह सिलसिला जारी रहता।

श्रद्धालुयों की एक बहुत बड़ी, भीड़ जमा होती, जो लगभग दो किलोमीटर तक की, लम्बी लाईन में खड़े होकर इन्तजार करती, कि कब उनकी बारी आयेगी और वे गुरुजी के पवित्र-चरणों को स्पर्श कर, उनका आशीर्वाद पा सकेंगे। गुरुजी द्वारा आशीर्वाद देने का यह सिलसिला इसी तरह सारा दिन चलता रहता था। एक बहुत बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन, एकत्र होते और लगभग दो किलोमीटर लम्बी लाईन में खड़े होकर, गुरुजी के दर्शनों का, सारा दिन इन्तजार करते थे। अपने गुरु के प्रति प्रेम प्रकट करने का नजारा देखने का अनुभव, अपने आप में अनोखा था।

दोपहर का समय था, सूरज बिलकुल सिर पर था और बहुत असहनीय गर्मी थी। तभी दो सेवादार, गुरुजी के पास आये और प्रार्थना करने लगे, कि गुरुजी, अपने उन श्रद्धालुजनों पर भी कृपा कीजिए, जो बाहर सड़क के किनारे लाईन में, आपके दर्शन के लिए, इस असह्य गर्मी में खड़े हैं। उनमें से एक सेवादार बोला---

''गुरुजी, बारिश करा दो।
...लोग, गर्मी से बहुत परेशान हैं।''

गुरुजी ने मुझे बुलाया और कहा---

''....बेटा, बाहर जाकर देख, कि
आसमान में कोई बादल नजर आ रहे हैं?''

मैं बाहर गया तो देखा, कि स्थान से काफी दूर, एक छोटा सा बादल नज़र आया और आकर मैंने गुरुजी को बता दिया।

तभी कुछ पलों के बाद ही, एक अविश्वस्नीय घटना घटी, मैंने देखा, कि स्थान के बाहर, लगभग दो किलोमीटर के ऐरिया में, बारिश हो रही है और पूरा ऐरिया जल-मग्न हो गया है तथा ठण्ड़ी हवाऐं चलने लगी है।

मैंने बाहर जाकर देखा कि दो किलोमीटर तक लाईनें वैसी की वैसी लगी पड़ी हैं। उनमे से एक भी, क्या बच्चा, क्या बूढ़ा और क्या जवान स्त्री या पुरुष मुझे थका हुआ या परेशान नज़र नहीं आया। सभी लोग बहुत खुः श थे और वे सिर्फ ये ही सोच रहे थे, कि बस हमें गुरुजी के दर्शन करने हैं।

जहां बरसात की, कोई सम्भावना ही नहीं थी, वहाँ बरसात हुई। ये बे-मौसम की बारिश, जो केवल उन लोगों के लिए हुई, जो लोग बस गुरुजी का दर्शन करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए लाईन में, गुरुजी का इन्तजार कर रहे थे।

ये बे-मौसम की बरसात,
उन्होंने कैसे करवाई, इसके बारे में कुछ भी,
व्याख्या करने में, मैं असमर्थ हूँ।

*****

33. जब गुरुजी ने सीताराम जी से कहा, देखो तुम्हारा भाई आ रहा है।

जब गुरुजी, गली में से आते हुए दो व्यक्तियों की तरफ देखते हुए, सीताराम जी से बोले---

''....देख वे जो वह दो लोग आ रहे हैं,
उनमें से एक तुम्हारा भाई है।
.....पहचान सकते हो?''

सीताराम जी ने, मेरे साथ चलते हुए व्यक्ति की तरफ इशारा करते हुए, उसे पहचाना। तो गुरुजी ने कहा---

''नहीं दूसरा।''
गुरुजी ने मेरी तरफ इशारा कर दिया।

इस पर सीताराम जी ने, मेरे सूट और टाई, जो मैंने पहनी हुई थी, के बारे में गुरुजी को बोला तो गुरुजी बोले--

''....तुमने सिर्फ ऊपर से इसका सूट ही देखा है,
लेकिन इसकी कमीज के नीचे,
छुपी हुई बनियान को नहीं देखा,
.....वह कितनी छलनी है!!''

गुरुजी, अपने शिष्य श्री सीताराम जी, आर. पी. शर्मा जी तथा और कई अन्य लोगों के साथ खड़े थे।

एक बार मैंने अपनी धर्मपत्नी और उसके भाई दीप के साथ, गुरुजी के दर्शन करने का, प्रोग्राम बनाकर उनके ऑफ़िस कर्ज़न रोड़ पहुँचा। वहाँ पहुँच कर देखा, कि गुरुजी अपने शिष्यों के साथ, सड़क पर ही खड़े है। हम सब गुरुजी की तरफ बढ़ने लगे।

उन्होंने भी हमें देख लिया और सीताराम जी से बोले--

''...देख वे जो वह दो लोग आ रहे हैं,
उनमें से एक तुम्हारा भाई है।
.....पहचान सकते हो?''

सीताराम जी ने दीप की तरफ, इशारा करते हुए उसे पहचाना

तो गुरुजी ने कहा--

''....नहीं दूसरा।''
गुरुजी ने मेरी तरफ इशारा कर दिया।

इस पर सीताराम जी बोले--

''गुरुजी, वो अप-टू-डेट आदमी,
मेरा भाई (फ़कीर) कैसे हो सकता है....!
देखिये तो सही, उसने कैसा सुन्दर सूट पहना है,
टाई लगाई है और उसके जूते तो देखिये....!!''

इस पर गुरुजी बोले ----

''...तुमने सिर्फ ऊपर से इसका सूट ही देखा है,
लेकिन इसकी कमीज के नीचे छुपी हुई,
बनियान को नहीं देखा,
...वह कितनी छलनी है...?''

मतलब----
उन्होंने बाहर और अन्दर से देखा, तो भिन्न पाया और कहा---

''तुम्हारा भाई तुम सब की तरह,
अन्दर से 'फ़कीर' ही है।''

देखा....,
कितनी सच्चाई और पारदर्शिता थी, उनके देखने में। वे एक बार किसी व्यक्ति को, देख भर लेते, तो उसके व्यक्तित्व के बारे में और उसके भविष्य के बारे में, सब कुछ जान लेते थे। उससे उनका, क्या रिश्ता है, ये कोई आम इन्सान, जान ही नहीं सकता।

यह सुनने में, एक साधारण सी बात लगती ज़रूर है, लेकिन है नहीं। इसमें बहुत गहराई छुपी हुई है। इसलिए रुको और इस सच्चाई तक, पहुँचने का प्रयास करो, कि वे कौन हो सकते हैं, जो इस तरह से कह सकते हैं..? जैसा कि गुरुजी ने कहा।

....सिर्फ और
...सिर्फ गुरुजी !!

*****

34. जब कत्ल की सजा (सजा-ए-मौत) पाये एक मुजरिम को, गुरुजी ने बचाया

बड़े वीरवार का दिन था। बेसमैन्ट में, और शिष्यों के साथ मैं भी बैठा, लोगों की सेवा कर रहा था। यानि उन्हें लौंग, इलायची और जल दे रहा था। गुरुजी अपने कमरे में थे और सभी श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देने के उपरान्त, उन्हें शिष्यों के पास जाने का निर्देश दे रहे थे।

तभी मेरे पास, एक व्यक्ति आया और बोला----

''गुरुजी, (अधिकतर लोग, गुरुजी के शिष्यों को, इसी तरह से सम्बोधित करते हैं)
मुझे अदालत ने, मौत की सजा सुनाई है।
...गुरुजी, मुझे बचा लीजिए।''

उसकी बात सुनकर, मैंने उससे पूछा,

''क्या ये सच है कि तुमने कत्ल किया है?''

उसने तुरन्त उत्तर दिया---

''हाँ गुरुजी, मैंने कत्ल किया है।''

यह सुनकर, मैं हिल गया और फिर मैंने उससे पूछा--

''क्या वह ऊपर गुरुजी के कमरे मे,
उनसे मिल चुका है...?

उसने बताया, कि वह गुरुजी से पहले आशीर्वाद लेकर ही, नीचे आया है और उन्होंने ही उसे, मेरे पास आशीर्वाद लेने भेजा है। मैं एकदम, वहाँ से उठा और उसके द्वारा बताई गई सच्चाई बताने, गुरुजी के पास गया।

गुरुजी बोले---

''बेटा, मैं जानता हूँ, कि उसने कत्ल किया है।''

मैंने पूछा--

''गुरुजी, फिर भी आप, उसे बचाना चाहते हैं?

गुरुजी बोले---

**''बेटा, वह गुरु की शरण में आया है और
उसने अपना गुनाह कबूल किया है।
मैंने उसे मॉफ कर दिया है और उसे बचाना है।''**

मैंने गुरुजी से फिर सवाल किया--

''गुरुजी, यह जानते हुए भी,
कि उसने क्या गुनाह किया है..!!
उसने एक इन्सान का कत्ल किया है।
.....क्या वह सजा का हक़दार नहीं है?''

गुरुजी ने, मेरी तरफ देखा और अपने पास, कारपेट पर बैठने का आदेश दिया और वे मुझसे, बड़ी गम्भीरता के साथ बोले---

''जो कोई जैसा कर्म करता है
भगवान उसे वैसा फल देता है ।''

''सजा देनी है तो वो देगा, मैं नहीं।
मैं तो गुरू-रुप में हूँ ।।
माँगने वाले को माँफ करना ही है मुझे...।
क्योंकि, माँफ करना ही, मेरी प्रकृति है... ।।''

करीब सात या आठ महीने बाद, हमेशा की तरह, 'बड़े वीरवार' के दिन ही, मैं बेसमैन्ट में सेवा कर रहा था, कि एक व्यक्ति, बड़ा सा लड्डुओं का डिब्बा लेकर, मेरे पास आया और बोला, गुरुजी यह प्रसाद है। मैंने उससे वह डिब्बा लेकर, माथे से लगाया और वहाँ पर खड़े सेवादार को, पब्लिक में बाँटने के लिए दे दिया।

तभी उसने, मेरी तरफ देखते हुए कहा--

''लगता है गुरुजी,
आपने मुझे पहचाना नहीं।
मैं वही हूँ, जिसे गुरुजी ने फाँसी से बचाया है
मैं बरी हो गया हूँ।''

वाह गुरुजी वाह.....
....कमाल है।

*****

35. डॉक्टर शंकर नारायण ---
गुरुजी के शिष्य।

डॉक्टर शंकर नारायण, जो भूमि विज्ञान के ज्ञाता और पुस्तक लेखक के अतिरिक्त, गुरुजी के ऑफिस में, गुरुजी के सीनियर भी थे।

एक दिन वे मुझे पकड़ कर, एक कोने ले गये और बोले--

''राजपाल, मुझे तुमसे एक, व्यक्तिगत बात करनी है। कल हमारे ऑफिस में, एक कॉन्फ्रैन्स थी। जिसमें सभी ऑफ़िसर आये थे और पत्थरों की जाँच की चर्चा, चल रही थी। जो पत्थर मेज पर रखे गये थे, उन पत्थरों की पहचान करना ही, कॉन्फ्रैन्स का मुख्य विषय था।''

एक पत्थर की तरफ इशारा करते हुए, मैंने कहा---

''.....यह लाईम स्टोन है।''

लेकिन गुरुजी कहने लगे---

.... नहीं डॉक्टर साहब,

(ऑफिस में गुरुजी, उन्हें इसी नाम से सम्बोधित करते थे)

....यह तो सैण्ड़ स्टोन है।

एक अधिकारी होने के नाते, मैं ये मानता था, कि वह लाईम स्टोन है। लेकिन वहाँ मैंने उनकी बात, तो मान ली, लेकिन दिल से नहीं। क्योंकि आप सभी जानते हैं, कि मैं उनकी बात को काट नहीं सकता।

शाम के समय, जब मीटिंग समाप्ति के निकट थी, तो यह ऐलान कर दिया गया, कि वह सैण्ड़ स्टोन ही है। सभी के साथ डॉक्टर नारायण भी, इससे सहमत थे, कि वह सेण्ड़ स्टोन ही है।

डॉक्टर शंकर नारायण बोले---

''राजपॉल, मैंने इस भूमि विज्ञान के अध्ययन में, अपनी पूरी जिंदगी लगा दी। मैं हमेशा अपने निष्कर्ष को ही, ठीक समझता था। लेकिन आज पता चला, कि सिर्फ गुरुजी ही तथ्यों और सच्चाई को जानते हैं।''

डॉक्टर फिर बोले---

''.....राजपॉल, आज मेरी सारी पढ़ाई, मेरा सारा ज्ञान और यहाँ तक, कि ऑफिस का मेरा पद भी, गुरुजी के सामने, छोटा पड़ गया है।''

गुरुजी, आपको सिर झुका कर प्रणाम है।

राजपॉल, गुरुजी और सिर्फ गुरुजी को ही, सच्चाई और वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान है। हमारा ज्ञान हमें, कभी भी कहीं भी धोखा दे सकता है।

.....लेकिन गुरुजी,
हमेशा ही ठीक होते है।

*****

36. जब मैं कार चलाते-चलाते सो गया।

वह भी एक सुबह थी, जब गुड़गांव में यह घटना घटी। गुरूजी को अपने ऑफिस जाना था, और उन्होंने मुझे आदेश दिया, कि कार तुम चलाओ और वे मेरी साथ वाली सीट पर, बैठ गये।

मैंने कार स्टार्ट की और रेलवे रोड़ को पार कर, बाँये तरफ मुड़ा। मारूति फैक्टरी की तरफ से होते हुए, मैं धौला कुआँ की तरफ, जा रहा था, तो अचानक मुझे ऐसा लगा, कि गुरूजी मुझे पंजाबी भाषा में, धीरे से डाँट रहे हैं---

''....ओय, हुन ते जाग जा,
गड्डी, ट्रक दे अन्दर ई वाड देणी आ?''
(ओय अब तो जाग जा, कार ट्रक के नीचे ही ले जानी है क्या?)

------और मैं जाग गया------
(मैं कार चलाते समय, सो गया था)

मैंने आँखें खोली और तुरन्त बेक दबा दी। मैंने देखा, कि मेरे आगे करीब पन्द्रह फुट की ही दूरी पर, एक ट्रक चल रहा है। मेरी कार तेजी से चल रही थी और अगर गुरूजी मुझे, केवल दस सैंकण्ड और न उठाते, तो मैं ट्रक के पीछे से, उसके नीचे घुस जाता। मैंने तुरन्त ब्रेक लगाई और अपने आप को, बहुत शर्मिन्दा महसूस किया।

मैंने घबराते हुए, गुरूजी से पूछा---
''गुरूजी, मैं कब सो गया?''

गुरूजी दुबारा मुझे,
एक मीठी सी गाली देते हुए बोले---

''ओय, तू जागा ही कब था?
जब से रेलवे रोड़ से मुड़ा,
वहीं से सो रहा है।''

*****

37. गुरुजी की बहन
देशी बुआ की शादी हुई।

गुरु पूर्णिमा का समय था। गुरु पूजा हो चुकी थी। लेकिन लंगर सेवा चल रही थी। हजारों की संख्या में लोग, गुरुजी से गुरुपूर्णिमा के अन्तिम आशीर्वाद का, इन्तजार कर रहे थे। स्थान पर बहुत भीड़ थी। दोपहर के करीब, गुरुजी ने मुझे बुलाया और कहा---

तुम पंजाबी बाग चले जाओ, और
आराम करो लेकिन शाम को आ जाना,
....क्योंकि आज तुम्हारी देशी बुआ की शादी है।

मैंने कहा--

''गुरुजी यह कैसे हो सकता है...!! हजारों की तादाद में, लोग यहाँ हैं.....।। कुछ स्थान के हॉल में हैं और कुछ कमरों में है। कुछ सड़क पर हैं, तो कुछ लोग बगीचे में बैठे हैं। कुछ लोग, जो बाहर से आये हुए हैं, वे तो अपने-अपने परिवार के साथ, इधर-उधर रुके हुए हैं।''

कमाल है.....

गुरुजी कहने लगे----

''बेटा यहाँ पर शाम को, कोई भी नहीं होगा
और शादी का समारोह, बड़ी शान्ति से हो जायेगा।
मैं नहीं चाहता, कि कोई किसी तरह का उपहार,
मेरे पास लाये।''

मैंने पूछा---

''परन्तु गुरुजी ये सभी लोग जाऐंगे कहाँ----?''

गुरुजी बोले---

''राज्जे, जब तक मेरी मर्जी नही होगी,
कैसे कोई आ सकता है?''

मुझे गुरुजी की ये गहरी बात, बिलकुल समझ में नहीं आ रही थी, कि हज़ारों की संख्या में लोग, स्थान पर इधर-उधर घूम रहे हैं और गुरुजी कह रहे हैं, कि मेरी इच्छा के बगैर यहाँ, कैसे कोई आ सकता है.....? इतने लोग यहाँ पर हैं। भीड़, थोड़ी कम जरुर हो सकती है, लेकिन यहाँ रात को एक भी व्यक्ति नहीं होगा, बात समझ में आने वाली नहीं थी।

खैर छोड़ो-----

मैं गुरूजी की आज्ञा का पालन करते हुए, पंजाबी बाग चला गया और फिर दुबारा शाम को, जब गुड़गांव पहुँचा, तो देखकर मैं दंग रह गया। मुझे अपनी आँखों पर, विश्वास ही नहीं हो रहा था। स्थान पर एक भी व्यक्ति नहीं था। बरामदे में गुरूजी के प्रिय शिष्य श्री आर. पी. शर्मा जी, टहल रहे थे। मैंने उनसे पूछा, क्या गुरू जी अन्दर हैं? उन्होंने 'हाँ' कहा।

मैं उनके कमरे में, जाने के लिए आगे बढ़ा, तो गुरूजी के दर्शन, मुझे कमरे के बाहर ही हो गये। गुरूजी को देखकर, मैं मुस्कुराया और धीरे से बोला---

''.....गुरूजी, बाहर तो कोई भी नहीं है,
सारी भीड़ कहां गायब हो गई?''

गुरूजी गम्भीर हो गये और बोले---

''मैंने कुछ अदृश्य सीमायें बाँध रखी हैं,
मैं जिसे चाहता हूँ, वही स्थान पर आ सकता है,
....दूसरा कोई नहीं।''

आखिर शादी का कार्यक्रम, बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दूल्हा भी घोड़ी पर आया। लेकिन शादी में, गुरूजी के केवल कुछ शिष्य ही थे। ना तो संगत थी और न ही भक्तजन।

ताज्जुब है----------

यहाँ आकर इन्सानी दिमाग, निष्क्रिय हो जाता है।

- गुरूजी ने यह सब, कैसे किया?
- किस तरह की मर्यादाओं और बंन्दिशों का, जिक्र कर रहे थे गुरूजी, जो उन्होने लगाई हैं?
- किस तरह गुरूजी ने, हजारों की संख्या में, लोगों के दिमाग को घुमा दिया?
- कौन से ज्ञान का, गुरूजी ने यहाँ प्रयोग किया है?

इसका यहाँ कोई जवाब नही है।

कृप्या मुझे अपने गुरू के पवित्र चरणों में,
प्रणाम करने दो,
जैसा कि मेरी पत्नी गुलशन उन्हें
सम्बोधित करती थी, कि वे तो,
सम्पूर्ण सृष्टि के मालिक हैं।

मैंने गुरूजी के साथ हुए, इस वार्तालाप के बारे में, अपने बड़े गुरू भाई, श्री एफ. सी. शर्मा और सीताराम जी को भी बताया।

*****

38. जब चार भाई, अपनी माँ की लम्बी आयु का, आशीर्वाद लेने आये।

गुरुजी अपने ऑफिस सम्बन्धित कार्य से, हिमाचल प्रदेश के टूअर पर थे। हमेशा की तरह गुरुजी, अपना कार्य समाप्त करने के उपरान्त, उनके पास आने वाले लोगों की, हर प्रकार की समस्याओं का, समाधान कर रहे थे।

एक दिन की बात है, मैं गुरुजी के पवित्र-चरणों में बैठा हुआ था, कि तभी चार भाई, गुरुजी के पास आये और हाथ जोड़कर, उनसे प्रार्थना करने लगे---

''....गुरुजी, हमारी माँ बहुत बीमार है, और अन्तिम सांसे ले रही है।
कृपा कर, उसे बचा लीजिए,
हमें, अपने परिवार में उसकी, बहुत जरुरत है।''

वे लोग पुनः बोले---

''हम जानते हैं, ...कि आप उन्हें बचा सकते हैं,
...प्लीज गुरुजी, उन्हें बचा लीजिए।''

गुरुजी ने उन भाईयों का, अपनी माता के प्रति प्रेम और गुरुजी के प्रति विश्वास, को देखते हुए, उन्होंने मुझे इस आदेश के साथ, एक ताँबें की अँगूठी देते हुए कहा---

**''राज्जे, तुम इन लोगों के साथ जाओ, ...और यह अँगूठी,
तुम इनकी माँ की उंगली में, पहना दो।''**

फिर उन भाईयों की तरफ मुड़े और बोले---

**''जाओ, जब तक यह अँगूठी,
तुम्हारी माँ की उंगली में है, वह नहीं मरेगी।''**

मैं उन लोगों के साथ, उनके घर पहुँचा। वहाँ जाकर देखा कि उनकी माँ, नीचे फर्श पर बेहोश पड़ी, अन्तिम साँसें ले रही थी। गुरुजी ने मुझे जैसा आदेश दिया था, मैं वह अँगूठी लेकर, उसके पास पहुँचा और जैसे ही मैंने, उसे अँगूठी पहनाने के लिये, उसकी उंगली को पकड़ा, वह होश में आने लगी और उसने मेरी बाजु को, कस कर पकड़ा और मुझे अपनी ओर खींचना शुरु कर दिया। मेरे लिए यह एक असाधारण, अजीब अनुभव था। मुझे कुछ समझ नहीं आया और तब मैंने, जोर लगाकर अँगूठी उसे, पहना दी।

मैंने वापिस आकर, गुरुजी को सारी बात बताई,
तो गुरुजी कहने लगे---

''बेटा, अब वह, तब तक नहीं मर सकती,
जब तक कि उसके हाथ में,
वह अँगूठी है।''

हम वहाँ कई दिनों तक रहे। लोग गुरुजी के पास आते रहे और गुरुजी उनका काम करते रहे।

चार दिन बाद

वे चारों भाई, दुबारा गुरूजी के पास आये और बोले---

''गुरूजी, हमारी माँ अपना शरीर नहीं छोड़ रही,
उसके प्राण नहीं निकल रहे।''

गुरूजी बोले---

''बेटा, जब तक उसके हाथ में, वह अँगूठी है,
...वह नहीं मर सकती,
ऐसा ही तो तुम, चाहते थे...!!''

वह बोले---

''गुरूजी, ये पहाड़ी इलाका है। हमारे घर में, बहुत से सगे-रिश्तेदार आकर रुके हुए है। वे वापिस नहीं जायेंगे, जब तक कि अन्तिम क्रिया न हो जाये। हम लोगों के लिए भी, उन्हें सम्भालना मुश्किल हो रहा है। कृपा करके गुरूजी, वह अँगूठी उसके हाथ से उतार दीजिए..... ''

गुरूजी बोले---

''.....मैं अँगूठी पहना तो सकता हूँ, परन्तु
उतार नहीं सकता, बेटा...।''

तब उनमें से एक बोला---

''.....गुरूजी, फिर इसका क्या उपाय है?''

गुरूजी बोले---

''.....बेटा, यदि तुम उसके हाथ से,
अँगूठी उतार दोगे, तो वह शरीर छोड़ देगी।''

वे सब, एक दूसरे की तरफ देख रहे थे। वे एक दूसरे को, अँगूठी उतारने को कह रहे थे, लेकिन कोई भी, यह काम को करने को, तैयार नहीं हो रहा था। आख़िर में, किसी एक भाई ने, रात के अंधेरे में, ऐसा कर दिया, तो सुबह उनकी माँ, इस दुनिया में नहीं थी।

यह तो सब अच्छी तरह से जानते है------

....जीना और मरना सिर्फ भगवान के हाथ में है।

लेकिन मैं इस बात पर सोचने को मजबूर था कि.... .....**वह कौन सी विधा है ?** जिससे वह अँगूठी, महिला की उंगली में डालकर, उन्होंने उसकी मौत पर, काबू पा लिया...!!

ऐसी विधा तो सिर्फ गुरूजी, आप के पास ही है। क्योंकि उस घटना के समय, मैं भी वहाँ उपस्थित था। इसलिए मैं जानना चाहता हूँ, और आपसे अनुरोध करता हूँ कि, ...हे गुरूओं के गुरू, महागुरू...!!, आप कृपा कर इस सच्चाई पर, कुछ तो प्रकाश डालिए, उन भक्तजनों के लिए जो आपके पास सिर्फ आपके लिए आते हैं और जीवन की सच्चाई की, जिज्ञासा रखते हैं।

*****

39. डॉक्टर सूरी अपनी मिटिंग से पहले, गुरुजी के, दर्शन करना चाहता था।

गुरुजी पर, अपार श्रद्धा और पूर्ण विश्वास, रखने वाला भक्त डॉक्टर सूरी, एक बार गुरुजी के दर्शन करने और उनसे आशीर्वाद लेने, गुड़गांव स्थान पर आया।

वह बरामदे में खड़ा हुआ, उनका इन्तजार कर रहा था कि गुरुजी आये और उसने उन्हें प्रणाम किया।

गुरुजी बोले---

''जब तक मैं वापिस ना आ जाऊं,
....तुम स्थान पर बैठो और इंतजार करो''

डॉक्टर सूरी बोले----

''गुरुजी, मेरे ऑफिस में आज निरीक्षण (Inspection) है।
मैं आपसे वहाँ जाने की इजाज़त लेने आया हूँ।''

गुरुजी बोले---

''तुझे कहा ना, जब तक मैं वापिस आऊं,
जाओ ....और स्थान पर बैठो''

वह चुपचाप जाकर, स्थान पर बैठ गया। शाम के करीब साढ़े चार बजे, जब गुरुजी वापिस आये, तो उन्होंने देखा कि डॉक्टर सूरी, स्थान पर बैठे हैं। गुरुजी डॉक्टर सूरी को देखकर बोले----

''अरे.....!! तुझे तो मीटिंग में जाना था,
.....तू गया क्यों नही ?''

डॉक्टर ने, बड़े अदब व धीरे से, जवाब दिया---

''.....गुरुजी, आपने ही तो कहा था,
कि जब तक मैं वापिस ना आ जाऊँ बैठे रहो।
...तो मैं कैसे जा सकता था?''

गुरुजी शरारतपूर्ण अंदाज में बोले----

''आप खुद तो बैठे रहते हैं
...और मुझे इनके काम करने पड़ते हैं।''

फिर उसे आशीर्वाद दिया और वह अपने घर, दिल्ली चला गया।

अगले दिन डॉक्टर सूरी, अपने ऑफिस गया। वह अपने साथ, बीते हुए कल की छुटटी का प्रार्थना पत्र, भी लेकर गया। उसने वह प्रार्थना पत्र, अपने ऑफिसर को दिया और कहा, कि कल वह किसी काम से, गुड़गांव गया था और वहीं पर अटक गया। इसलिए वह ऑफ़िस में, निरीक्षण कार्य के लिए, नही आ सका।

खुः श किस्मती से, वह ऑफ़िसर, उसका दोस्त भी था। वह आश्चर्य चकित होकर, कहने लगा---

''ये तुम क्या कह रहे हो? कल तो तुम यहीं ऑफिस में ही तो थे। तुम मीटिंग में भी थे और तुमने रजिस्टर में अपने हस्ताक्षर भी किये थे।''

उसने उसे रिकार्ड रुम में जाकर,
चेक करने को भी कहा।

डॉक्टर उसकी बात सुनकर, भौंच्चका सा रह गया। वह अपनी सुध-बुध खो बैठा। उसको तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, तब आख़िर वह रिकार्ड रुम में गया, तो देखा कि वह हस्ताक्षर तो, उसी के थे।

वह चिल्लाया ''ये कैसे हुआ...!!'' वह बोला---

''गुरुजी तो गुरुजी हैं''

उसने बड़े प्यार और विश्वास के साथ,
आकाश की तरफ देखा,
और मन ही मन,
गुरुजी का धन्यवाद किया।।

*****

40. जब मैं अपनी पुरानी कार बेच रहा था।

मैं जनकपुरी में, सीताराम जी के घर बैठा था और किसी को, अपनी पुरानी कार, बेच रहा था। तभी वहाँ पर गुरूजी का फोन आया। वे पूछने लगे---

''.....तू यहाँ क्या कर रहा है?''

मैंने कहा---

''.....गुरूजी मैं अपनी पुरानी कार बेच रहा हूँ।''

गुरूजी ने आगे पूछा---

''.....कितने में?''

मैंने उन्हें बताया कि जो ख़रीद रहा है, वह चालिस हज़ार दे रहा है और मैं पैतालिस हज़ार माँग रहा हूँ। इस पर वे बोले---

''तुम उसे अपनी कार,
उन्तालिस हज़ार में बेच दो।''

जब मैंने उस ख़रीदार को बोला, कि आप ऐसा करो उन्तालिस हज़ार ही दे दो। उसे ऐसा लगा कि मैं शायद नाराज़गी में, उससे कह रहा हूँ। मुझे शायद चालिस हज़ार से ज्यादा चाहिए। मैंने उसे बड़े आराम से बोला कि इसमें मैं कुछ नहीं कर सकता। यह कार मैं उन्तालिस हज़ार से ज़्यादा में, बेच ही नहीं सकता। ऐसा आदेश मुझे, अभी-अभी फोन पर मिला है।

वह आश्चर्य से मेरी तरफ देख रहा था और जानने का इच्छुक था, कि यह कैसा आदेश है...? जो फोन पर मिला हैं।

मैंने कहा---

''ये हमारे गुरू जी का आदेश है,
जो हमारे दिमाग व हमारे हर काम को,
....अपने नियन्त्रण में रखते हैं।''

वह ख़रीदार, मेरे इस प्रकार के व्यवहार से, चौंक गया, लेकिन वह अपने बजट से भी कम कीमत पर मिली, कार को पाकर, वह बहुत खुः श था।

गुरूजी के इस आदेश से शिष्य को, दो फ़ायदे हुए, पहला, उसे ख़रीदार के दिल से, ढ़रों दुआऐं मिली और दूसरा यह कार्य करके, वह अपने गुरूजी के और नज़दीक आ गया।

इसमें उसने क्या पाया?
यह कोई विरला ही समझ सकता है।

*****

41. गुरुजी ने एक बूढ़े सरदार जी के घुटने, ठीक किये।

गुरुजी साल में कम से कम दो तीन बार मुम्बई जाते थे। लोग उनका 'वीरजी' (कुलबीर सेठी, जो कि यश सेठी के बडे भाई थे, वही यश सेठी, जिसे गुरुजी ने, चमत्कारी ढ़ंग से ठीक किया था) के घर, गुरुजी का इन्तजार करते थे।

गुरुजी ने उनके घर, स्थान बनाया था। वीरजी और उनके भाई संदीप सेठी को आघ्यात्मिक शक्तियाँ, इस आदेश के साथ दी थी, कि वे मुम्बई में लोगों की सेवा करें। बहुत से लोगों ने वहाँ आना शुरु कर दिया था, और वे, ठीक भी होने लगे थे।

एक बार, जब गुरुजी वहाँ गये, तो उस दिन, वहाँ सुबह से रात तक, लोगों की भारी भीड़ थी। गुरुजी, सबकी परेशानियाँ, दर्द और बीमारियाँ, दूर कर रहे थे। तभी एक सरदार जी, जो लगभग साठ साल के होंगे, आये और गुरुजी से कहने लगे---

''गुरुजी, मेरे घुटने काम नहीं करते, वे बहुत सख्त हो गये है
मैं अपनी टाँगें भी नहीं उठा सकता और
न ही इन्हें मोड़ सकता हूँ।''

गुरुजी ने बड़े ही सहज भाव में, मुझे आदेश दिया---

''....राज्जे, इसकी टाँग ठीक कर दे।''

मैंने उसके घुटनों को छुआ। गुरुजी, जो उस समय बिस्तर पर बैठे थे, सरदार जी से बोले----

**''.....बेटा, अपनी टाँगे ऊपर उठाओ और मोड़ कर देखो,
....ये ठीक हो गयी हैं।''**

उसने ऐसा ही किया, वह बहुत अधिक चकित था...!! ये कैसे हो गया ।
वह खुः शी से चिल्ला उठा। उसके मुख से निकला---

''ओय.....!! ''

वह अपनी टाँगें, एक-एक कर, उठा रहा था और उन्हें मोड़ कर, बार-बार देख रहा था। उसके चमकते चेहरे पर खुः शी साफ झलक रही थी।

वह दृश्य वास्तव में ही अविस्मरणीय था। वह, गुरुजी को देख रहा था और बार-बार अपनी टाँगें, ऊपर उठा-उठा कर, देख रहा था। उसकी आँखों में उसके हाव-भाव, उसके चेहरे पर सफेद दाढ़ी के बीच खुः शी का का ब्यान करना, संभव नहीं है।

गुरुजी ने सिर्फ दो काम किये : -

1. *उसकी समस्या को सुना।*
2. *अपने शिष्य राजपाल को, उसकी टाँगें ठीक करने का आदेश दिया*

बस इतना ही-----

लेकिन इतने सालों से, पुराने जोड़ों के दर्द को, इस तरह से ठीक कर देना.....!!
गुरुजी ने सिर्फ उसकी समस्या को सुना और बस कह दिया और परिणाम उनकी इच्छानुसार, सबके सामने था।

क्या इस तरह का कोई उदाहरण,
...कहीं और मिल सकता है?

*****

42. गुरूजी ने मुझे तुरन्त कुल्लू बुलाया

मैं अपनी फैक्ट्री में बैठा था, कि अचानक सूरी की माताजी का फोन बजा और उन्होंने मुझसे कहा, कि आपको गुरूजी ने अभी कुल्लू बुलाया है।

मैं अपने ड्राईवर, शिव कुमार को साथ लेकर, एअरपोर्ट पहुँचा। जब मैं वायुदूत सेवा के, टिकट काउन्टर पर पहुँचा और मैंने टिकट खरीदा, वह उस फ़्लाईट का आख़िरी टिकट था।

जब मैं कुल्लू पहुँचा, तो सूरी का बेटा, एअरपोर्ट पर अपनी जीप लेकर, मेरा इन्तजार कर रहा था। हमें रोहतांग पास जाना था। हम दोनों को करीब, तीन से चार घण्टे चलकर, जीप से रोहतांग पास पहुँचना था।

उस समय, शाम के करीब तीन बजे का समय था, कि रोहतांग पास की ओर से आने वाले वाहन चालकों ने, हमें रोका और सलाह दी, कि अब ऊपर जाना खतरनाक है। किसी भी समय, तेज ठण्ड़ी हवाऐं चल सकती है और हमें उड़ा कर ले जा सकती हैं। इसलिए हमें कहा गया कि आप कल दोपहर दो बजे तक ही, रोहतांग पास में रुकें।

जब रोहतांग पास पहुँचने से पहले हम ''**मरही**'' पहुँचे। यह वो जगह है, जहां पर रोहतांग से आने वाले लोग, चाय नाश्ते के लिए रुकते है। वहाँ से जब हम जीप द्वारा चले, तो सामने से गुरूजी पैदल चले आ रहे थे। हम जीप से नीचे उतरे, हमने गुरूजी को प्रणाम किया। उस समय कंपकपाती हुई ठण्ड़ थी। गुरूजी ने मुझे, एक ठण्ड़ा आम दिया और एक पूरी और आलू की सब्जी खाने के लिए दी। उस समय संत लाल जी उनके साथ थे। वह मेरे पास आये और बोले---

''राजपॉल जी,
.....क्या आप जानते हैं? ये कौन सी पूरी और आलू की सब्जी,
गुरूजी ने आपको खाने के लिए दी है?''

मैंने पूछा---

''.....क्यों? .....क्या हुआ?''

वह बोले---

''गुरूजी ने आज सबको, आलू और पूरी खाने के लिए दी और अन्त में एक पूरी और कुछ सब्जी बच गई। हमने गुरूजी को भी खाने के लिए कहा, परन्तु वे बोले, कि दिल्ली से राजा आ रहा है, यह उसके लिए है।''

गुरुजी ने खुद् भी, सुबह से कुछ नहीं खाया है और हम सब को खिला दिया है। वहाँ करीब बीस लोग, उनके साथ थे और बिना किसी डर के, गुरुजी के पास परम सुः ख भोग रहे थे।

- आखिरी पूरी आलू और एक आम, वह भी उनके 'राज्जे' के लिए, जो दिल्ली से आ रहा है।
- 'राज्जे' की भी फ़्लाईट का, मिस न होना, जोकि दिन की आख़िरी फ़्लाईट थी और आख़िरी सीट का मिलना।
- 'राज्जे' का कुल्लू पहुँचना और बाहर सूरी के बेटे का, उनके इन्तजार में पहले से ही खड़ा होना। और वह भी सौ प्रतिशत विश्वास के साथ।
- 'राज्जे' का रोहतांग पास पहुँचना तथा आलू पूरी और आम-----

सब कुछ शीशे की तरह से बिलकुल साफ था,
कि गुरुजी भगवान की तरह,
सब कुछ देख रहे थे।

.....वाह गुरुजी !!

*****

43. जब मैंने वीरवार के दिन गलती से शेव कर ली।

गुरुजी द्वारा कुछ विशेष निर्धारित नियम हैं, जो हम सब के लिए, आध्यामिक उपलब्धि और शान्तिपूर्ण अच्छी जिन्दगी जीने के लिए, मानना जरुरी है। जिसमें से एक नियम वीरवार के दिन शेव न करना भी है।

वीरवार का दिन था। जब मै सुबह नहाने के लिए गया, तो गलती से मैंने शेव कर ली। लेकिन तभी मुझे अपनी गलती का अहसास भी हो गया। स्थान पर लोग आ चुके थे और मुझे सेवा के लिए जाना था।

स्थान के कमरे में जाने से पूर्व, मैं गुड़गांव पहुँचा और फिर, गुरुजी के कमरे में चला गया। उस समय तक गुरुजी, माताजी के साथ बिस्तर पर ही थे। मैंने दरवाजे को धक्का देकर खोला और अपने गुलबन्द (मफ़लर) में अपना सिर और मुँह ढक कर, गुरुजी के चरण स्पर्श कर, पकड़ लिये।

कुछ समय निकलने के बाद, जब गुरुजी ने मेरी तरफ देखा, कि मैं सहमा हुआ सा, गुलबन्द ओढ़े खड़ा हूँ, तो गुरुजी जोर से बोले---

''.....चल, बाहर आजा अब''

मैंने जवाब दिया---

''पहले मॉफ कर दो, फिर बाहर आऊँगा।''

गुरुजी ने पूछा---

''तुमने क्या गलती की है?''

लेकिन मैंने कहा---

''पहले मॉफ करोगे, तो बताऊँगा।''

इस बीच, माताजी हंसने लगी और बोली---

''चलो कर दो ना मॉफ.... .....बच्चा ही तो है।''

लेकिन गुरुजी माता जी से बोले---

''पर बताये तो सही,
करके क्या आया है, माँ दा ख़सम?''

पर माताजी ने किसी तरह से गुरुजी को मना लिया।

गुरुजी बोले---

''अच्छा जा, मॉफ किया, अब बाहर निकल।
...पर बता तो दे।''

मैंने चेहरा ढके हुए ही कहा---

''.....गुरूजी आज वीरवार को मैंने, गलती से शेव कर ली है।
पर आपने मुझे मॉफ तो कर दिया है ना गुरूजी ?''

इतने कड़े अनुशासन वाले गुरूजी,
इतने दयालु और इतना विशाल हृदय रखते हैं,

यह मैंने आज देखा।

*****

44. जब डॉक्टर कुमुदिनी मेरे पति अपने आसक्त प्रेम के बारे में जानना चाहती थी।

जैसा कि गुरुजी ने मुझे आदेश दिया था, मैं प्रत्येक शनिवार के दिन सुबह-सुबह, अपने घर पंजाबी बाग में, लोगों की सेवा के लिए बैठ जाता था। बहुत से लोग, वहाँ अपनी समस्यायें लेकर आते और मैं गुरुजी द्वारा दी गई आध्यात्मिक शक्तियों का प्रयोग करता और लोग अविश्वस्नीय तरीके से, ठीक हो जाते और सन्तुष्ट होकर, अपने घरों को लौट जाते।

कुछ लोग, जो पूर्ण रुप से ठीक नहीं हुए होते, दुबारा आते। इसी तरह सेवा, सुबह से शाम तक चलती रहती। लोग लाईन में, अपनी बारी का इन्तजार करते और एक-एक करके, मेरे पास लाईन में आते। इस तरह उन्हें करीब, एक घण्टा इन्तजार करना पड़ता था।

एक दिन शाम की बात है। मैं शाम को सेवा से जल्दी फ्री हो गया तो देखा, कि एक जवान लड़की, अभी तक वहाँ बैठी हुई थी।

मैंने उससे पूछा---

''आपने कुछ कहना है, ...आपकी कोई समस्या है?''

वह बोली----

''नहीं मेरी कोई समस्या नहीं है
.....लेकिन मैं एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ। ''

वह बोली----

''मेरा नाम कुमुदिनी है और मैं एक डॉक्टर हूँ। मैं हर शनिवार को, सुबह यहाँ आती हूँ और मैं लोगों में सबसे आखिरी होती हूँ, जब मैं शाम को यहाँ से जाती हूँ। जाने के बाद बड़ी बेसब्री से, अगले शनिवार का इन्तजार करती हूँ, कि मैं यहाँ दुबारा आ सकूं।''

उसने मुझसे आगे कहा---

''मैं सुबह से शाम तक आपको, यहाँ पर सेवा करते देखती रहती हूँ। आप मुझे बहुत अच्छे लगते हो। आप मुझे यह बतायें, कि मेरे साथ आपका क्या रिश्ता है?''

अचानक पूछे गये इस सवाल के लिए, मैं बिलकुल तैयार नहीं था। एकदम जवाब देने की हालत में भी, मैं नहीं था।

मैंने विषय बदलते हुए कहा---

''....तुम जाओ और रात को ग्यारह बजे तक सो जाना,
मैं सपने तुम्हें में, इसका जवाब दूंगा।''

और वह लड़की चुपचाप वहाँ से चली गई।

अगली शाम

मैं गुड़गांव, गुरूजी के दर्शन करने गया और झुककर उनके पवित्र चरण छुए। वे बिलकुल अलग मूड में बोले---

''ओय....,
क्या कहा था तूने उस लड़की को,
कि सपने में आकर, उसे अपना रिश्ता बताओगे?''

मैं उनकी बात सुनकर, सन्न् रहा गया और सोचने लगा, कि एक दिन पहले, मैंने उस लड़की से यही कहा था।

मैंने कहा---

''गुरूजी, मैंने तो उससे अपनी जान बचाई थी।
क्योंकि मेरे पास उसके इस सवाल का
कोई जवाब नहीं था।''

मैंने गुरूजी से आगे पूछा---

''उसके बाद क्या हुआ, ...गुरूजी?''

गुरूजी बोले-----

''जब कोई शिष्य, किसी से कोई वादा कर लेता है,
तो मुझे उस वादे को पूरा तो करना ही होता है।
.....इसलिए मैंने कर दिया है।''

मैंने गुरूजी से विस्तार से बताने के लिए, प्रार्थना की तो
गुरूजी बोले----

''जा..... और उसी लड़की से ही पूछ ले,
....वोही तेरे को बताएगी।।''

अगले शनिवार को, जब मैं सेवा पर बैठा, तो देखा डॉक्टर कुमुदिनी शाम तक अकेले बैठे, मेरा इन्तजार करती रही। जब सब लोग चले गये, तो मैंने उसे बुलाया और उससे पूछा----

''.....कि विस्तार से बताओ,
कि उस दिन सोने के बाद उसने क्या देखा?''

उसने बताना शुरु किया----

''जैसा कि आपने कहा था, मैं जाकर ग्यारह बजे तक सो गई थी। मेरे सपने में आप, मेरे साथ ही आये। आप, बहुत लम्बे हो गये थे और मुझे, आपकी उंगली पकड़ने के लिए भी, अपने हाथ ऊपर उठाने पड़ रहे थे। हम आकाश की तरफ, उड़ने लगे और उड़ते हुए वहाँ पहुँचे, जहां पर रंग बिरंगे बादल थे। वहाँ एक ग्रे रंग का गेट बना हुआ था। लेकिन वहाँ कोई खाली मैदान नहीं था और वह गेट भी वह किसी पदार्थ का नहीं था। हम उस गेट के अन्दर, आगे चले गये।

वहाँ पर ॐ ॐ ॐ की आवाजें गूंज रही थी।

तभी वहाँ, और भी आवाजें आने लगी। कोई कह रहा था-----

''जन्म जन्मान्तर से, ये तेरे पिता हैं''

कुमुदिनी आगे बोली---

''आप मुझे फिर, एक मूर्ति के पास ले गये और बोले, ये ध्रुव ऋषि हैं, इन्हें प्रणाम करो। मैंने उन्हें झुक कर प्रणाम किया। उस मूर्ति ने अपना हाथ उठाया और मेरे सिर पर रखा। जैसे ही उसने, मेरे सिर को छुआ, कि मेरी आँख खुल गई और तभी से अब तक मेरे सिर में दर्द हो रहा है।''

- *गुरूजी का क्या तरीका है?*
- *गुरूजी का क्या सम्बन्ध है?*
- *गुरूजी की कहां तक पहुँच है?*
- *गुरूजी का कैसा रिश्ता है, ऋषि मुनियों के साथ?*

.....गुरूजी,
क्या कुछ बताते हैं, और
क्या कुछ दिखाते हैं।

.....यह सब वही जाने ।।

*****

45. जब एक महिला, पिछले छः महीनों से सो नही सकी।

कुछ ऐसे लोग, जो मेरे अपने सोशल सर्कल में भी आते हैं, उन्हें भी पता लगा कि गुरुजी ने मुझे, कुछ आध्यात्मिक शक्तियाँ दी हैं और मैं अपने घर पर ही, लोगों की सेवा करता हूँ।

एक बार मेरी धर्मपत्नी की आन्टी ने, उसे बताया कि उसकी बहू, (बेटे की पत्नी) पिछले छः -आठ महीनों से, सो नहीं सकती। वह चौबीसों घण्टे जागती ही रहती है। उसे नींद नहीं आती है। बहुत इलाज कराया, लेकिन कोई फायदा नहीं।

वह जानती थी, कि मैं यहाँ सेवा करता हूँ। लिहाजा उसने मुझसे भी अपनी समस्या के बारे में, बात की। मैंने उसे स्थान पर लाने को कहा और फिर, मैंने उसे इलायची और जल दिया तथा गुरुजी से, उसकी इस अनिद्रा की बीमारी, ठीक करने के लिए प्रार्थना भी की।

फिर एक दिन सुबह जब, हमेशा की तरह कल्ब से, टेनिस खेल कर लौटा, तो देखा कि मेरी पत्नी की आन्टी, मेरी पत्नी के पास बैठी हुई है। वह बोली----

''....आज मैं, अपनी बहू को लेकर आई हूँ।

मैंने पूछा---

कि वह कहां है?

वह बोली----

''वह स्थान पर बैठी है''

मैं स्थान के कमरे की तरफ गया, तो देखा कि एक महिला, स्थान के कमरे में, सौफे पर गहरी नींद में लेटी हुई है।

आन्टी आश्चर्य से बहुत धीरे से बोली---

''ये क्या हुआ इसे....?''

वह मुझसे बोली----

''यह तो इतनी अधिक मात्रा में दवाईयाँ खा कर भी, इस तरह से नहीं सोती थी, जैसे कि इस समय, यह सौफे पर सो रही है।''

क्या चमत्कार था....?

वह कितने लम्बे अरसे के बाद, इस तरह से, स्थान के कमरे में, अपनी नींद का आनन्द ले रही थी।

वह वहाँ सौफे पर,
घण्टों सोई रही और फिर उसके बाद उसे,
इस तरह की कोई समस्या नहीं आई।

*****

46. जब गुरुजी के शिष्य की बेटी, अपनी परीक्षा से पहले, विषय के बारे में ही भूल गई।

एक बार गुरुजी के पहले शिष्यों में से एक, श्री एफ. सी. शर्मा जी, जो गुरुजी के विभाग में ही, काम करते थे, आये और गुरुजी को अपनी परेशानी का कारण बताया। उनकी बेटी सुनीता की परीक्षा है और उसका फोन आया है, कि वह उसके विषय के बारे में, सब भूल गई है उसे कुछ भी याद नहीं हैं।

गुरुजी ने उनके एक दूसरे शिष्य एस. के. जैन साहब को कुछ आदेश देकर शर्मा जी के साथ, उनके घर भेजा और कहा, कि ये काम करने के बाद तुम दोनों, वहाँ पर रुकना नहीं।

जैन साहब ने एक गिलास में ठण्डा पानी लिया और उसमें कुछ, आध्यात्मिक शक्तियाँ डाली और उन्होंने उसकी आँखों में, जल के छीटे मार दिये।

उस लड़की को आशीर्वाद दिया। उसी समय उस लड़की को, उसके विषय के बारे में, सब कुछ याद आ गया और उसने अपनी, परीक्षा दी और उसमें पास भी हो गई।

*****

47. जब एक सरदारजी, चार महीनों से, कुछ भी नहीं खा पा रहे थे।

जब एक परिवार, लगभग चालिस वर्षीय, एक अद्भुत मरीज़ को, गुरुजी के पास लेकर आया, जिसने पिछले चार-पांच महीने से, कुछ भी नहीं खाया था। वह बिलकुल एक कंकाल की तरह, लग रहा था।

जब वे गुरुजी के पास आया और बताया कि जब वह खाना चबाता है और उसे, निगलने की कोशिश करता है तो वह काँपने लगता है और सारा खाना, बाहर निकाल देता है। उसका गला उसे, कुछ भी निगलने की इजाज़त नही देता है।

गुरुजी ने उससे कहा कि तुम कल आना मैं तुम्हें खाने के लिए एक पराँठा दूंगा। उसने गुरुजी की तरफ देखा और पूछा---

''गुरुजी, क्या मैं खा पाऊँगा?''

अगले दिन

उस सरदारजी के परिवार वाले, उसको साथ लेकर तथा एक सुन्दर सी प्लेट में एक परांठा, लेकर आये। यह देख कर गुरुजी गुस्से में आकर बोले---

''आप लोग यहाँ से चले जाईए।''

उन्होंने आगे कहा---

''क्या मैं, एक पराँठा देने के लायक भी नहीं हूँ कि तुम वह भी, अपने घर से लेकर आये हो?''

उसके परिवार के सदस्यों को, अपनी गलती का अहसास हुआ और वे माफी माँगने लगे। परन्तु गुरुजी ने उन्हें अगले दिन आने का आदेश दिया। उन्होंने इसके लिए गुरुजी से और कुछ भी नहीं कहा, और चले गये।

दुबारा अगले दिन

जब वे लोग आये, तो गुरुजी ने अपने शिष्य 'वीरजी' की तरफ देखा और उन्हें, एक सुन्दर पराँठा लाने को कहा। गुरुजी ने अपने, एक शिष्य से कहा कि वह उस पराँठें में से एक टुकड़ा ले और चख़कर बाकी, उसके मुँह में डाल दे। उस शिष्य ने ऐसा ही किया। सरदार जी ने उसे चबाना शुरु किया। करीब तीन-चार मिनट के बाद जब उसने, उस पराँठें के कौर को निगलना चाहा, तो वह काँपने लगा और उसकी आँखें खुली की खुली रह गई।

इससे पहले कि वह उल्टी करता, गुरुजी उठे और अपने दाहिने हाथ की उल्टी तरफ से, उसके सिर पर मारा और फिर दूसरे हाथ से भी, ऐसा ही किया। फिर दुबारा मारने से पहले, गुरुजी ने उसे ऊंची आवाज़ में कौर को निगलने का आदेश दिया। उसने ऐसा ही किया वह पूरा पराँठा खा गया और वह बिलकुल ठीक हो गया।

जब गुरूजी, उसे मार रहे थे, तो उसके परिवार के सदस्य, एक दूसरे की तरफ देख रहे थे, कि यह क्या हो रहा है...? क्योंकि वह पहले से इतना कमज़ोर है और जिसे अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए भी, किसी दूसरे की मद्द लेनी पड़ती है। लेकिन उनमें से, किसी में भी इतना साहस नहीं था, कि वे कुछ बोलते या कुछ करते।

गुरूजी ने पिछले चार-पांच महीनों से बीमार व्यक्ति को, कुछ ही मिनटों में, चमत्कारिक ढ़ंग से ठीक कर दिया। गुरूजी ने उन्हें, अगले दिन आने का आदेश दिया।

अगले दिन जब वह, गुरूजी के पास आया, तो
गुरूजी से कहने लगा----

''गुरूजी, क्या मैं रसगुल्ले खा सकता हूँ?''

गुरूजी बोले----

''हाँ बेटा''

और गुरूजी ने उसे, उसके नये जीवन का आशीर्वाद दिया।

जिसे सभी डॉक्टर बचाने में असमर्थ रहे।

*****

48. जब मुझे अपने बड़े भाई की मौत, का स्वप्न आया

मैं अपने शयनकक्ष में सो रहा था। मैंने स्वप्न में, अपने छोटे भाई को देखा, जो मुझसे कह रहा था--------

''उठो, हमारे बड़े भाई
...सत्यपाल की मृत्यु हो गई है।''

मैंने उसे नज़रादाज़ कर दिया और फिर से सो गया। कुछ देर बाद.....
वह फिर आया और पुनः याद दिलाते हुए बोला-----

''तुम अभी तक सो रहे हो?
उठो, हमारे बड़े भाई ...सत्यपाल की मृत्यु हो गई है।

लेकिन इस बार भी मैं, उसकी बात को सुना-अनसुना करके, दुबारा सो गया। इस बार मेरा भतीजा सुधीर, मेरे सपने में दौड़ते हुआ आया और उसने मुझे, मेरे बड़े भाई, सत्यपाल की मृत्यु की सूचना दी।

जब मुझे, तीसरी बार सपने में यही संदेश मिला, तो मैं डर कर उठ गया और अपनी पत्नी गुलशन को जगाया और उन्हें, अपने सपने के बारे में बताया तथा उन्हें गुरूजी के पास गुड़गांव चलने के लिए, तैयार होने के लिए कहा।

उस समय रात के करीब, साढे-ग्यारह बजे थे। मैं अपनी गाड़ी की चाबी लेने, सीढ़ियों से ऊपर गया, तो मेरी बड़ी भाभी ने, दरवाजा खोला और मुझसे, मेरी परेशानी का कारण पूछा। मैंने उन्हें अपने सपने के बारे में बताया और कहा, कि मैं गुरूजी के पास, गुड़गांव जा रहा हूँ, और मैं अपनी पत्नी गुलशन के साथ, गुड़गांव चला गया।

जब हम गुड़गांव पहुँचे, तो रात्रि के करीब, साढ़े-बारह बज चुके थे। मैंने बहुत धीरे से मेन गेट को खोला और हम बरामदे में ही बैठ गये और गुरूजी का इंतजार करने लगे।

'एक गुरू शिष्य होने के नाते
मैं जानता था, कि रात्रि बारह बजे के बाद,
गुरू को नहीं जगाया जाता।'

इसलिए हम पूरी रात, बरामदे में ही अपने गुरू का, इंतजार करते रहे।

सुबह छः बजे गुरूजी अपने कमरे से बाहर आये और, शौच आदि से निवृत होकर, वापिस अपने कमरे में चले गये। किन्तु जाते-जाते टिप्पणी करते हुए निकल गये--

''बड़ा मोह है अपने भाई के साथ !!''

कुछ देर बाद बाद, गुरूजी ने मुझे बुलाया और कहा---

**''तुम्हारा भाई पेरिस जाने से पहले,
मुझसे मिलकर गया था''**

उन्होंने आगे कहा---

''अब अगर उसका विमान, दुर्घटनाग्रस्त हो भी जाता है, तो भी वह नहीं मर सकता। तुम क्यों इसकी चिन्ता करते हो...? .....अगर ऐसा होना होता, तो मैं उसे कभी जाने की इजाज़त ही नहीं देता।''

उन्होंने आगे कहा----

''अब तुम उस सपने को भूल जाओ और,
नाश्ता करो।''

जब हम अपने घर पहुँचे, तो उस समय हमारे घर के लोग, सत्यपाल की कुशलता जानने के लिए, टेलीफोन पर लंदन और पेरिस बात कर रहे थे और उधर से बहुत से लोगों ने बताया, कि वह वहीं पर है और बिलकुल ठीक है। बहुत सारी टेलीफोन कॉल करने के बाद सभी घर वाले को आख़िर सन्तुष्ट हो ही गये। लेकिन जैसा कि आप जानते ही हैं, कि मैं और मेरी पत्नी, सुबह सवा छः बजे ही इस चिन्ता से मुक्त हो गये थे।

गुरुजी को सच्चाई जानने के लिए,
किसी टेलीफोन की आवश्यकता नहीं है,
वे तो अन्तरयामी हैं, और अपनी बन्द आँखों से,
कहीं भी, कुछ भी देख सकते हैं।

*****

49. जब पंजाबी बाग में,
गुरुजी ने लगातार सिरदर्द के लिए,
एक महिला के माथे पर,
स्ट्रोक्स लगाये।

एक दिन की बात है, देर शाम को गुरुजी, पंजाबी बाग आये और हमेशा की तरह लोग, उनके दर्शन के लिए आना शुरु हो गये। तभी मेरी पत्नी गुलशन की एक सहेली, गुरुजी के पास आयी और उनसे प्रार्थना करने लगी, कि वह अपने लगातार होने वाले, सिर दर्द से बहुत परेशान है।

गुरुजी ने अपना बाँया हाथ उसके सिर पर रखा और उसके माथे के बीचो-बीच स्ट्रोक्स लगाने शुरु कर दिये। बस मुश्किल से दो मिनट हुए होंगे, कि वह महिला बिलकुल दर्द-मुक्त हो गई।

गुरुजी ने उससे, बड़े वीरवार के दिन, गुड़गांव जाकर सवा रुपये की, मीठी फुल्लियाँ चढ़ाने के लिए कहा और यह भी कहा, कि ऐसा करने से,

.....यह दुबारा कभी नहीं होगा।

*****

50. जब गुरूजी ने मुझे, एक 'मिरगी' के मरीज़ को, सड़क पर ठीक करने पर डाँट लगाई।

एक दिन सुबह-सुबह का समय था और हमेशा की तरह मैं, अपन शोरुम में बैठा था, कि मेरा एक चपरासी, दौड़ता हुआ आया और मुझसे कहने लगा, कि बाहर एक आदमी को 'मिरगी का दौरा' पड़ गया है। मैं दौड़कर बाहर आया और देखा, कि वास्तव में ही उसे 'मिरगी का दौरा' पड़ा था। उसकी आँखों की पुतलियाँ ऊपर की तरफ थीं, उसकी बाजु और टाँगें अकड़ गई थी और उसके मुँह से झाग निकल रही थी।

मुझे याद आया, कि गुरूजी ने मुझे आशीर्वाद दिया है और आध्यात्मिक शक्तियाँ भी दी हैं, ताकि मैं जरुरतमन्दों की सहायता कर सकूं। मैंने तुरन्त उसके माथे पर हाथ रख दिया और अपने चपरासी को, एक गिलास में पानी लाने को बोला और वैसे ही कर दिया, जैसा गुरूजी ने मुझे आदेश दे रखा था।

तब तक वहाँ पर, काफी भीड़ जमा हो चुकी थी। फिर मिनटों में वह आदमी, एक आम आदमी की तरह, उठा और चला गया। मैं अन्दर से बहुत संन्तुष्टि व खुः शी महसूस कर रहा था।

- कि गुरूजी ने मुझसे, क्या करवा दिया?
- कैसे गुरूजी ने, मेरे दिमाग में विचार डाला?
- गुरूजी के लिए कोई, सीमा या बन्धन नहीं।
- गुरूजी सब कुछ कर सकते हैं या फिर, अपने शिष्यों से करवा सकते हैं।

मैं गुरूशिष्य के साथ-साथ, एक आम व्यक्ति भी था और मानवता के नाते मैंने यह कार्य, बाहर सड़क पर किया। जैसा करना, लगभग असम्भव था।

मैं गुरूजी की ताकत का अन्दाजा, लगा रहा था, कि कितनी दूरी है और क्या उनकी पहुँच है। वे मुझसे इतनी दूर थे और उन्होंने, किस तरह से प्रेक्टीकल रुप से, उस व्यक्ति को, ठीक कर दिया, जो कि सड़क पर पड़ा था। मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था।

वास्तव में, मैं अपने आप को, उनकी छत्र-छाया में सुरक्षित महसूस कर रहा था। मैं व्याकुलता से शाम का इन्तजार करने लगा। शाम को जब मैं गुरूजी के पास गया और उन्हें आज के चमत्कार के बारे में बताना चाहा, लेकिन.....

.....वहाँ पर तो सब कुछ बदला-बदला सा था। मैं गुरूजी के पास, गुड़गांव पहुँचा तो पता चला कि गुरूजी स्थान पर बैठे हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं। मैं दौड़कर स्थान पर पहुँचा और हाथ जोड़कर, उनके पवित्र चरणों को छुआ।

इससे पहले, कि मैं कुछ बोलूं, गुरूजी ने मुझे डाँटना शुरु कर दिया और कहा----

''....तूने सड़क पर बन्दा ठीक कर दिया, अब जाओ,
...और अस्पताल में पड़े, सब मरीज़ों को भी ठीक कर दो''

गुरूजी ने ये मुझे, ताना मारने के अन्दाज़ में कहा और मैं कुछ समझ नहीं पाया, कि बजाय इसके, कि गुरूजी मेरी पीठ थपथपायें, उल्टा मुझे डाँट रहे हैं?

मैंने अपने दोनों हाथ जोड़कर गुरूजी से प्रार्थना की------

''....पर गुरूजी, आपने ही तो कहा था,
कि मैंने तुम्हें शक्तियाँ दी हैं, अब लोगों के दुःख दूर करो।''

मैं नहीं जानता था कि मैंने क्या गलती की है?

गुरूजी बोले---

''हाँ बेटा, मैंने तुम्हें सारी शक्तियाँ दी हैं, लेकिन तुम उसका ही भला कर सकते हो, जो तुम्हारे 'गुरू-स्थान' पर आये और वो भी तब, 'जब वह तुमसे माँगे' और 'वह भी गुरू-स्थान पर ही।''

तुम किसी को भी, ठीक नहीं कर सकते। तुम इस बात को अच्छी तरह से समझो, कि एक भगवान है और वो ही, किसी को दरिद्र या बीमारियों से ग्रसित करता है, यह उसका फैसला है, जोकि हमेशा ठीक होता है। वह एक अच्छा और बड़ा जज है।

''तुम कैसे उसके फैसले को,
बदल सकते हो?''

''यह तो उस परम-पिता परमेश्वर के काम में,
दख़ल अन्दाजी है।''

गुरूजी आगे बोले,

- माँफ करने का अधिकार, सिर्फ गुरू के पास है।
- मैं गुरू हूँ। और वास्तव में, भगवान भी खुःश होता है, यदि मैं किसी पीड़ित व्यक्ति को माँफ करता हूँ, या ठीक करता हूँ।
- मैं भगवान की सेवा करता हूँ, जोकि प्रत्येक प्राणी में निवास करता है।
- मैं उस प्राणी को पीड़ा-मुक्त करके, उस भगवान की ही सेवा करता हूँ, जो उसके अन्दर है। चाहे वह व्यक्ति यह, महसूस करे या न करे।

तब मुझे याद हो आया, कि एक बार किसी व्यक्ति ने गुरूजी के पैर छुए थे और उनसे, उनकी ''कृपा'' की प्रार्थना की थी, तब उन्होंने उस व्यक्ति को, पहले गुड़गांव जाकर, 'बड़े वीरवार' के दिन 'मीठी फुल्लियों का प्रसाद', चढ़ाने के लिए कहा था।

*****

51. जब गुरुजी ने मुझे अस्पताल के ICU विभाग में, किसी मरीज़ को जल देने भेजा।

एक बार की बात है, गुरुजी अपने गोल मार्किट वाले क्वॉटर के बाहर खड़े थे, कि अचानक कुछ लोग आये और गुरुजी से, अपने किसी व्यक्ति के बारे में बताने लगे, जो किसी अनजान बीमारी से ग्रसित था। गुरुजी ने मुझे आदेश दिया---

''राज्जे, तुम इन लोगों के साथ,
अस्पताल जाओ और उस व्यक्ति को, जो वहाँ
ICU विभाग में है, उसे ''जूठा जल'' पिलाओ।''

मैं उन लोगों के साथ, अस्पताल गया और वहाँ ICU के प्रवेशद्वार पर ही, मुझे एक नवयुवती मिली, जो अपनी साड़ी का पल्लू फैलाकर मुझसे बोली----

''मेरा सुहाग मुझे दान दे दो।''

मैंने उसकी तरफ देखा और अपना हाथ, उसके सिर पर रखा। एक दूसरा व्यक्ति, जो उसके पीछे ही खड़ा था, बोला कि डॉक्टरों को समझ नहीं आ रहा है, कि उसकी बीमारी का क्या कारण है और उसने बताया कि इसका शरीर, जैसे निचुड़ता जा रहा है और दिन-ब-दिन कमज़ोर होता चला जा रहा है। डॉक्टरों का कहना है, कि ये सिर्फ पन्द्रह दिन ही ओर जी पायेगा, क्योंकि अविश्वस्नीय रुप से, इसका दिल और फेफ़ड़े अभी काम कर रहे हैं।

मेड़िकल सांईस क्या कहती है, यह मैं नहीं समझ सका। मुझे तो सिर्फ इतना याद था, कि गुरुजी ने जो कहा था, वो मैंने करना है।

जब मैंने में ICU में प्रवेश किया, तो देखा, कि सामने एक सुन्दर युवक, बिस्तर पर सीधा लेटा हुआ था। जैसा गुरुजी ने आदेश दिया था, वहाँ मैंने एक पानी से भरे बीकर का, इंतजाम किया और उसे जूठा करके, बाकी उसके मुँह के साथ लगा दिया और वह उसे, पी गया। मैं गुरुजी के पास वापिस आ गया लेकिन वहाँ गुरुजी से मरीज़ के पास जाने या उसके बारे में, कोई बात नहीं हुई।

कुछ महीने बीत गये। एक बार मुझे, बैंगलौर जाना पड़ा। एक दिन बैंगलौर के अशोक, कार में मेरे साथ थे कि अचानक, एक दूसरी कार ने आकर, हमें रोका। उस कार से एक नवयुवती उतरी और तेज़ी से हमारी तरफ आने लगी। मैंने अपनी कार की खिड़की खोली और उसे आशीर्वाद दिया।

वह बोली---

''गुरुजी, आपने मुझे पहचाना नहीं?''

वह फिर बोली---

''....मैं वही हूँ जिसने आपसे, अपने पति की जिन्दगी माँगी थी और आपने उसे बचा लिया था।

वह अब बिलकुल ठीक हैं और उस कार में है। तब मुझे याद आया कि हाँ, जब मैं ICU में गया था, तब उसे वहाँ देखा था। वह हमें अपने घर में आकर, आशीर्वाद देने के लिए जिद्द करने लगी। मैं भी व्याकुल हो उठा, उस जोड़े को देखने के लिए, कि जिस परिवार पर गुरूजी ने इतनी अपार कृपा की थी।

गुरूजी क्या सोचते हैं उन लोगों के लिए, जो उनके पास, आते हैं और उनसे अपना दुःख दूर करने के लिए, प्रार्थना करते हैं, वह भी उस समय, जब उनके पास किसी का भी सहारा नहीं होता। चाहे वह मेड़िकल रुप में हो या पैसे की कमी की वजह से। गुरूजी अधिकारिक रुप से, लोगों के सभी कार्य, स्वयं कर देते हैं या फिर शिष्यों से करा देते हैं। वह हर असम्भव कार्य भी बड़ी सहज़ता से ले लेते हैं।

....मैं गुरूजी से अपने मुख़ से,
दिल से और आत्मा से प्रार्थना करता हूँ,
कि वे हमेशा, इसी तरह सभी पर,
अपने आशीर्वादों की, वर्षा करते रहें।

*****